माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

FAIZAN E MADINA

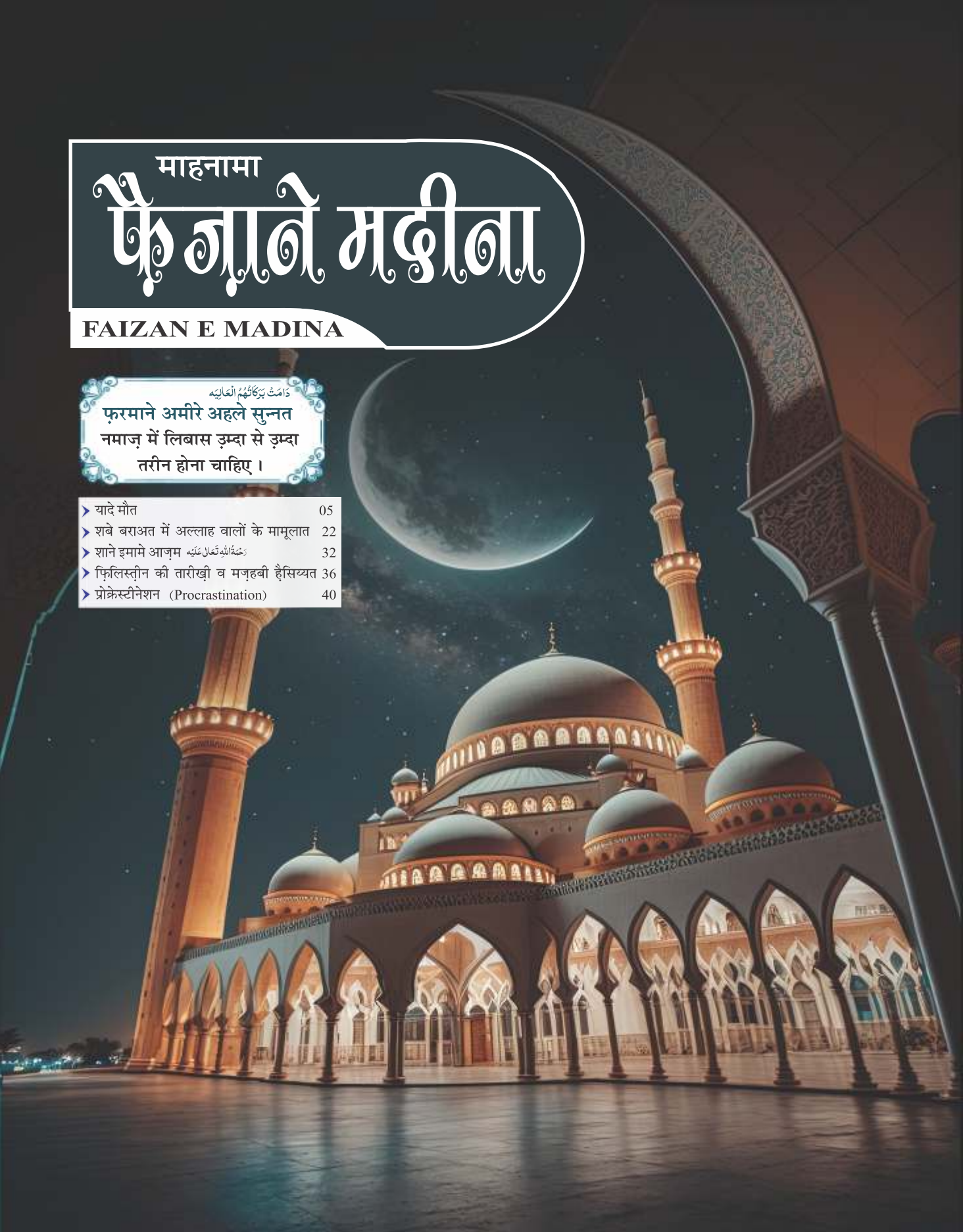

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत

नमाज़ में लिबास उ़म्दा से उ़म्दा तरीन होना चाहिए ।

- यादे मौत 05
- शबे बराअत में अल्लाह वालों के मामूलात 22
- शाने इमामे आज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه 32
- फ़िलिस्तीन की तारीख़ी व मज़हबी हैसिय्यत 36
- प्रोक्रेस्टीनेशन (Procrastination) 40

सांप, बिच्छू वग़ैरा मूज़ियात से हिफ़ाज़त का अ़मल

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّةِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

तर्जमा : मैं अल्लाह पाक के कामिल कलेमात के वसीले से सारी मख़्लूक़ के शर से पनाह मांगता हूं।

सुब्ह और शाम तीन तीन बार पढ़िए।

फ़ज़ीलत : सांप, बिच्छू वग़ैरा मूज़ियात से पनाह हासिल हो।

(अल वज़ीफ़तुल करीमा, स.14)

गुनाह से हिफ़ाज़त का वज़ीफ़ा

सूरतुल इख़्लास 11 बार सुब्ह पढ़िए।

फ़ज़ीलत : अगर शैतान मअ अपने लश्कर कोशिश करे कि उस से गुनाह कराए तो ना करा सके जब तक कि येह खुद ना करे। (अल वज़ीफ़तुल करीमा, स. 21)

नोट : हर वज़ीफ़े के अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना है।

शबे बराअत में मग़रिब के बाद छे नवाफ़िल

शाबानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात यानी शबे बराअत में बुज़ुर्गाने दीन के मामूलात में से येह भी है कि मग़रिब के फ़र्ज़ व सुन्नत वग़ैरा के बाद छे रक्अ़त नफ़्ल दो दो रक्अ़त कर के अदा किए जाएं। पेहली दो रक्अ़तों से पेहले येह निय्यत कीजिए : "या अल्लाह पाक इन दो रक्अ़तों की बरकत से मुझे दराज़ी ए उ़म्र बिल ख़ैर अ़ता फ़रमा।" दूसरी दो रक्अ़तों में येह निय्यत फ़रमाइए : "या अल्लाह पाक इन दो रक्अ़तों की बरकत से बलाओं से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा।" तीसरी दो रक्अ़तों के लिए येह निय्यत कीजिए : "या अल्लाह इन दो रक्अ़तों की बरकत से मुझे अपने सिवा किसी का मोहताज ना कर।" इन 6 रक्अ़तों में सूरतुल फ़ातेहा के बाद जो चाहें वोह सूरतें पढ़ सकते हैं, चाहें तो हर रक्अ़त में सूरतुल फ़ातेहा के बाद तीन तीन बार सूरतुल इख़्लास पढ़ लीजिए। नीज़ हर दो रक्अ़त के बाद इक्कीस बार सूरतुल इख़्लास (पूरी सूरत) या एक बार सूरए यासीन शरीफ़ पढ़िए बल्कि हो सके तो दोनों ही पढ़ लीजिए। येह भी हो सकता है कि कोई एक इस्लामी भाई बुलन्द आवाज़ से यासीन शरीफ़ पढ़े और दूसरे ख़ामोशी से ख़ूब कान लगा कर सुनें। इस में येह ख़याल रहे कि सुनने वाला इस दौरान ज़बान से यासीन शरीफ़ बल्कि कुछ भी ना पढ़े और येह मस्अला ख़ूब याद रखिए कि जब कुरआने करीम बुलन्द आवाज़ से पढ़ा जाए तो जो लोग सुनने के लिए हाज़िर हैं उन पर फ़र्ज़े ऐ़न है कि चुप चाप ख़ूब कान लगा कर सुनें। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रात शुरूअ़ होते ही सवाब का अम्बार लग जाएगा। हर बार यासीन शरीफ़ के बाद "दुआ ए निस्फ़े शाबान" भी पढ़िए।

(आक़ा का महीना, स. 15)

नोट : दुआए निस्फ़ शाबान अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "आक़ा का महीना" में मुलाहज़ा की जा सकती है। येह रिसाला मक्तबतुल मदीना से हासिल कीजिए।

माहनामा
फ़ैज़ाने मदीना
Monthly Magazine
FAIZANE MADINA (HINDI)

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफुल ग़ुम्मह,
इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सैयदना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे एहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा खान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर
(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI
BUTVALA'S CHAWL,
NR. CENTRAL WARE HOUSE,
DANILIMDA, AHMEDABAD-380028.
(GUJARAT)

PLACE OF PRINTING
MODERN ART PRINTERS
OPP : PATEL TEA STALL,
DABGARWAD NAKA,
DARIYAPUR, AHMEDABAD-380001.

कुरआनो हदीस
राहे खुदा में खर्च की तरग़ीब के कुरआनी असालीब (आख़री क़िस्त) 3
यादे मौत 5
फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत शाबानुल मुअ़ज़्ज़म के नवाफ़िल घर में पढ़ना कैसा ? मअ़ दीगर सवालात 7
दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत किसी का सलाम पहुंचाना कब लाज़िम है ? मअ़ दीगर सवालात 9

मज़ामीन
किसी की जान ना लीजिए ! 11
देहात वालों के सवालात और रसूलुल्लाह के जवाबात (क़िस्त : 03) 13
सोचें (Thoughts) 15
रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वुफ़ूद के साथ अन्दाज़ (क़िस्त : 01) 18
इस्लाम और तालीम (क़िस्त : 02) 20
शबे बराअत में अल्लाह वालों के मामूलात 22
ताजिरों के लिए अह़कामे तिजारत 24
बुज़ुर्गाने दीन की सीरत ह़ज़रते सैयदना शुऐब عَلَيْهِ السَّلَام (क़िस्त : 02) 26
ह़ज़रते ह़ातिब बिन अबी बल्तआ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه 28
नवासा ए रसूल ह़ज़रते सैयदना इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه 30
शाने इमामे आज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه 32
अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए ! 34

मुतफ़र्रिक़
फ़िलिस्तीन की तारीख़ी व मज़हबी हैसिय्यत (क़िस्त : 01) 36
ढाई साल में अ़वामी ख़ुशह़ाली का राज़ (आख़री क़िस्त) 38
सेह़त व तन्दुरुस्ती प्रोक्रेस्टीनेशन (Procrastination) 40
क़ारेईन के सफ़ह़ात
नए लिखारी 42
ख़्वाबों की ताबीरें 46
बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" फ़रिश्तों की ईद / हुरूफ़ मिलाइए ! 47
ऊंट की रफ़्तार 48
बच्चों की हिफ़ाज़त के इक़्दामात कीजिए 49
इस्लामी बहेनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
भाइयों की ज़िन्दगी में बहेनों का किरदार 51
इस्लामी बहेनों के शरई मसाइल 53

(दूसरी और आख़री क़िस्त)

राहे ख़ुदा में ख़र्च

की तरग़ीब के कुरआनी असालीब (अन्दाज़)

गुज़श्ता से पैवस्ता

तरग़ीब का पांचवां अन्दाज़ अच्छे काम से रुकने के पीछे कोई ना कोई रुकावट होती है, ख़्वाह दाख़ली हो या ख़ारजी। अल्लाह पाक ने राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की राह में रुकावट बनने वाले अस्बाब पर हमें मुत्तलअ़ फ़रमाया चुनान्चे ख़ारजी अस्बाब का रद कर के ख़र्च की तरग़ीब देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

﴿اَلشَّیْطٰنُ یَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَ یَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِۚ وَ اللّٰهُ یَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَ فَضْلًا ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ(۲۶۸)﴾

तर्जमा : शैत़ान तुम्हें मोह़ताजी का अन्देशा दिलाता है और बेह़याई का हुक्म देता है और अल्लाह तुम से अपनी त़रफ़ से बख़्शिश और फ़ज़्ल का वादा फ़रमाता है और अल्लाह वुस्अ़त वाला, इल्म वाला है। (پ03، البقرۃ:268) सदक़ा ओ ख़ैरात करने में ख़ारजी रुकावट **''शैत़ान''** है जो वस्वसा डालता है कि लोगो! तुम सदक़ा दोगे तो ख़ुद फ़क़ीर व नादार हो जाओगे, लेहाज़ा ख़र्च ना करो। इस के जवाब में ख़ुदा ने फ़रमाया कि शैत़ान तो तुम्हें बुख़्ल व कन्जूसी की त़रफ़ बुलाता है, लेकिन अल्लाह पाक तुम से वादा फ़रमाता है कि अगर तुम उस की राह में ख़र्च करोगे, तो वोह तुम्हें अपने फ़ज़्ल और मग़फ़िरत से नवाज़ेगा और येह भी याद रखो कि वोह पाक परवरदगार बड़ी वुस्अ़त वाला है, वोह सदक़े से तुम्हारे माल को घटने ना देगा, बल्कि उस में और बरकत पैदा कर देगा।

तरग़ीब का छटा अन्दाज़ जैसे ऊपर बयान किया गया कि नेकी से रुकने के पीछे कोई ना कोई रुकावट होती है, ख़्वाह दाख़ली हो या ख़ारजी। लेहाज़ा जिस त़रह़ अल्लाह पाक ने राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की राह में ख़ारजी सबब शैत़ान के वसाविस का रद किया, उसी त़रह़ दाख़ली अस्बाब को बयान फ़रमा कर उन के ह़वाले से रेहनुमाई फ़रमाई। दाख़ली अस्बाब में नफ़्स का लालची और कन्जूस होना है। अल्लाह पाक ने इस की मज़मूम सिफ़त के बारे में मुतनब्बेह फ़रमाया और इस सिफ़त से नजात पर ख़ुश ख़बरी सुनाई, चुनान्चे फ़रमाया :

﴿وَ اُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ﴾ तर्जमा : और दिल को लालच के क़रीब कर दिया गया है। (پ5، النسآء:128) उस लालच से छुटकारा पाने की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई :

﴿وَ مَنْ یُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ(۹)﴾ तर्जमा : और जो अपने नफ़्स के लालच से बचा लिया गया तो वोही लोग कामयाब हैं। (پ28، الحشر:09) इसी वस्फ़े मज़मूम के मुतअ़ल्लिक़ नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : شُحّ (यानी नफ़्स के लालच) से बचो, क्यूंकि इस लालच ने तुम से पेहली उम्मतों को हलाक कर दिया कि इसी ने उन को नाह़क़ क़त्ल करने और ह़राम काम करने पर उभारा। (مسلم، ص1069، حدیث:6576) **यूंही राहे ख़ुदा में ख़र्च करने में ''बुख़्ल'' बहुत बड़ी दाख़ली क़ल्बी रुकावट है।** अल्लाह पाक ने इस की मज़म्मत करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

﴿هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ یَّبْخَلُ ۚ وَ مَنْ یَّبْخَلْ فَاِنَّمَا یَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ﴾

तर्जमा : हां हां येह तुम हो जो बुलाए जाते हो ताकि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करो तो तुम में कोई बुख़्ल करता है और जो बुख़्ल करे वोह अपनी ही जान से बुख़्ल करता है। (پ26، محمد:38) अपनी ही जान पर बुख़्ल यूं करता है कि

बुख़्ल कर के ख़र्च करने के सवाब, ग़रीबों की दुआओं, मोहताजों की महब्बत, नेकों में नाम, सख़ियों में शुमार, ख़ुदा के क़ुर्ब और जन्नत के बुलन्द दरजात से मेहरूम हो जाएगा और बुख़्ल का नुक़्सान उठाएगा।

तरग़ीब का सातवां अन्दाज़ नफ़्स की लालच और बुख़्ल के पीछे भी एक सबब है, जो इन्सान को राहे ख़ुदा में ख़र्च से रोकता है और वोह है **"माल की महब्बत"** बल्कि माल की महब्बत दीगर कई बुराइयों की जड़ है। इस लिए अगर माल की महब्बत दिल से निकल जाए या कम हो जाए तो राहे ख़ुदा में देना आसान हो जाता है। इस लिए अल्लाह पाक ने निहायत हकीमाना अन्दाज़ से महब्बते माल की मज़म्मत और लोगों के इस मज़मूम सिफ़त का शिकार होने का बयान किया, चुनान्चे फ़रमाया : ﴿وَتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا﴾ तर्जमा : और माल से बहुत ज़ियादा महब्बत रखते हो। (پ30، الفجر:20) यहां आयात के सियाक़ो सबाक़ के एतेबार से कुफ़्फ़ार की ख़स्लत बयान की गई है कि तुम माल से बहुत ज़ियादा महब्बत करते हो कि उस को ख़र्च करना ही नहीं चाहते और इसी सबब से यतीमों की इज़्ज़त नहीं करते, मिस्कीनों को खाना नहीं खिलाते, दूसरों को सदक़ा ओ ख़ैरात की तरग़ीब नहीं देते, बल्कि दूसरों का माल खा जाते हो, उन की ज़मीन, जाईदाद, माल, विरासत और मिल्किय्यत पर क़ब्ज़े करते हो, बल्कि इसी सबब से क़त्लो ग़ारत गरी करते हो। अल ग़रज़ फ़साद की जड़ यानी माल की महब्बत की वज्ह से हर तरह का बिगाड़ पैदा करते हो।

एक और जगह पर माल के सबबे ग़फ़्लत होने, माल के ना पाईदार होने और क़ब्रो आख़ेरत की फ़िक्र दिलाते हुवे इरशाद फ़रमाया :

﴿اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُۙ(۱) حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَؕ(۲) كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَۙ(۳) ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ(۴)﴾

तर्जमा : ज़ियादा माल जम्अ करने की तलब ने तुम्हें ग़ाफ़िल कर दिया। यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा। हां हां अब जल्द जान जाओगे। फिर यक़ीनन तुम जल्द जान जाओगे। (پ30، التکاثر:1...4)

سبحان الله وبحمده، سبحان الله العظیم अल्लाह पाक की कैसी मेहरबानी, रेहमत, करम नवाज़ी और बन्दा परवरी है कि बन्दों की इस्लाह व फ़लाह और मख़्लूक़ की बेहतरी और ख़ैर ख़्वाही के लिए किस क़दर मुतनव्वेअ अन्दाज़ में एक ही हुक्म को बयान फ़रमाया। येही वोह उस्लूबे क़ुरआनी है जिस के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुदावन्दे करीम ने फ़रमाया : ﴿وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِیَذَّكَّرُوْا﴾ तर्जमा : और बेशक हम ने इस क़ुरआन में तरह़ तरह़ से बयान फ़रमाया ताकि वोह समझें। (پ15، بنی اسرائیل:41) यानी हम ने इस क़ुरआन में नसीह़त की बातें बार बार बयान फ़रमाईं और कई तरह़ से बयान फ़रमाईं, जैसे कहीं दलाइल से, तो कहीं मिसालों से, कहीं हिक्मतों से और कहीं इब्रतों से और इन मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ों में बयान करने का अस्ल मक़्सद येह है कि लोग किसी तरह़ नसीह़त व हिदायत की तरफ़ आएं और समझें। येह उस्लूबे क़ुरआनी, नफ़्सिय्याते इन्सानी के मुताबिक़ है कि लोगों से उन की समझ के मुताबिक़ कलाम किया जाए, क्यूंकि बाज़ लोग दलाइल से मानते हैं और बाज़ डर से और कुछ मिसालों से। यूंही बाज़ औक़ात एक आदमी की ह़ालत ही मुख़्तलिफ़ होती रेहती है, किसी वक़्त उसे डरा कर समझाना मुफ़ीद होता है और किसी वक़्त नरमी से, वग़ैरहा।

उ़नवान में मज़कूर आयत के आख़िर में फ़रमाया : وَ اللّٰهُ یَقْبِضُ وَ یَبْصُۜطُ ۪ और अल्लाह तंगी देता है और वुस्अ़त देता है।) चूंकि वस्वसा पैदा होता है कि माल ख़र्च करने से कम होता है तो इस शुबे का इज़ाला फ़रमा दिया कि अल्लाह पाक जिस के लिए चाहे रोज़ी तंग कर दे और जिस के लिए चाहे, वसीअ़ फ़रमा दे, तंगी व फ़राख़ी तो उस के क़ब्ज़े में है और वोह अपनी राह में ख़र्च करने वाले से वुस्अ़त का वादा करता है तो राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से मत डरो, जिस की राह में ख़र्च कर रहे हो, वोह करीम है और उस के ख़ज़ाने भरे हुवे हैं और जूदो बख़्शिश के ख़ज़ाने लुटाना उस करीम की शान है। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, नबी ए अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रह़मान का दस्ते क़ुदरत भरा हुवा है, बेह़द व बे ह़िसाब रेहमतें और नेमतें यूं बरसाने वाला है कि दिन रात (के अ़ता फ़रमाने) ने उस में कुछ कम ना किया और देखो तो कि आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश से अब तक अल्लाह पाक ने कितना ख़र्च कर दिया है, लेकिन इस के बा वुजूद उस के दस्ते क़ुदरत में जो ख़ज़ाने हैं, उस में कुछ कमी नहीं आई।

(ترمذی، 5/34، حدیث:3056)

दुआ अल्लाह पाक हमारे दिलों से ह़िर्स व हवस, बुख़्ल और माल व दुन्या की महब्बत दूर कर के अपनी महब्बत अ़ता फ़रमाए, हमें आख़ेरत की तैयारी का जज़्बा और अपनी राह में ख़र्च करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

लो मदीने का फूल लाया हूं   मैं ह़दीसे रसूल लाया हूं
(अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

यादे मौत
(Remembrance of death)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हाथ से लिखी हुई तेह़रीर

हम अपनी ज़िन्दगी में पेश आने वाली सेंकड़ों चीज़ों को याद रखते हैं लेकिन एक बहुत ही अहम चीज़ को याद करना अक्सर भूल जाते हैं, वोह है "मौत" ! येह वोह काम है जिस की नसीह़त आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाई है जिन के मुबारक क़दमों पर हम सब की अ़क़्लें और ह़िक्मतें क़ुरबान हो जाएं :

ह़दीसे पाक عَنْ اَبِی هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "اَكْثِرُوا ذِكْرَ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ الْمَوْتَ" तर्जमा : ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लज़्ज़तों को ख़त्म कर देने वाली चीज़ यानी मौत को कसरत से याद करो।[1]

शर्हे ह़दीस "اَكْثِرُوا ذِكْرَ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ" के तह़त अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : اَیْ نَغِّصُوْا بِذِكْرِهٖ لَذَّاتِكُمْ حَتّٰى يَنْقَطِعَ رُكُوْنُكُمْ اِلَيْهَا فَتَقْبَلُوْا عَلَى اللهِ यानी मौत को कसरत से याद कर के अपनी लज़्ज़तों को बे मज़ा कर दो यहां तक कि उन की त़रफ़ तुम्हारा मैलान ख़त्म हो जाए और तुम अल्लाह पाक की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाओ।[2] येह मुबारक फ़रमान हर शख़्स के लिए है, चाहे उस के पास दुन्यावी लज़्ज़तें मौजूद हों या ना हों लेकिन वोह उन लज़्ज़तों को ह़ासिल करना चाहता हो।[3]

ज़ियादा समझदार कौन ? रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक अन्सारी शख़्स ह़ाज़िर हुवा, सलाम अ़र्ज़ किया और पूछा : या रसूलल्लाह ! कौन से मोमिन अफ़्ज़ल हैं ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिन के अख़्लाक़ ज़ियादा अच्छे हों। उस ने फिर अ़र्ज़ की : कौन से मोमिन ज़ियादा अ़क़्लमन्द हैं ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो उन में सब से ज़ियादा मौत को याद करने वाले हों और इस के बाद के लिए ज़ियादा अच्छी तैयारी करें वोही ज़ियादा अ़क़्लमन्द हैं।[4]

हम और यादे मौत स्टूडन्ट अपना सबक़ याद करना नहीं भूलता, ख़ातूने ख़ाना ने दिन भर में जो काम करने हों उन्हें याद रखती है, घर का सरबराह जब अपने इदारे, ऑफ़िस, कारोबार और मज़दूरी वग़ैरा से वापस घर को रवाना होता है तो उ़मूमन वोह याद रखता है कि रास्ते से उसे कौन कौन सी चीज़ लेनी है ताकि दोबारा ना आना पड़े बल्कि बाज़ों ने तो जेब में पर्ची लिख कर रखी होती है या फिर मोबाइल पर रीमाइन्डर लगाया होता है, नहीं रखते तो मौत को याद नहीं रखते। फिर हमारी मेह़फ़िलों में त़रह़ त़रह़ के मौज़ूआ़त पर गुफ़्तगू होती है, उन में कई मौज़ूआ़त ऐसे भी होते हैं जिन का हमारी ज़िन्दगी में कोई अ़मल दख़्ल नहीं होता, लेकिन अगर किसी चीज़ पर बात नहीं होती या बहुत ही कम होती है तो वोह है "मौत की याद" ! बल्कि ऐसा भी होता है कि जब किसी के सामने मौत को याद किया जाए कि येह ज़िन्दगी किसी भी लम्ह़े ख़त्म हो सकती है और हम किसी भी वक़्त मर सकते हैं तो बाज़ों का रीएक्शन कुछ इस त़रह़ का होता है : ❁ डराओ तो नहीं ❁ अभी मैं ने देखा ही क्या है ? ❁ मेरी उ़म्र ही क्या है ? ❁ अभी तो बहुत कुछ करना है ❁ ज़िन्दगी के मज़े लेने हैं वग़ैरा।

याद रखिए ! मौत एक ह़क़ीक़त है, हम इस को याद करें ना करें, येह आ कर रहेगी। अलबत्ता यादे मौत से हमें दुन्या ओ आख़ेरत के फ़वाइद काफ़ी मिलेंगे। हमारा जिस्म हमारे दिलो दिमाग़ की सोचों के मुत़ाबिक़ काम

करता है तो जिसे मौत याद हो वोह क्यूंकर दुन्या की लज़्ज़तों से दिल लगाएगा ? वोह किस त़रह़ गुनाहों की दलदल में फंसेगा ? बल्कि वोह तो जहाने आख़िरत के लिए नेकियों का ख़ज़ाना इकठ्ठा करने में लग जाएगा, اِنْ شَآءَ اللّٰہ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है :

اَکْثِرُوْا ذِکْرَ الْمَوْتِ فَاِنَّہٗ یُمَحِّصُ الذُّنُوْبَ وَ یُزَھِّدُ فِی الدُّنْیَا यानी मौत को ज़ियादा याद करो कि येह गुनाहों को मिटाती और दुन्या से बे रग़बत करती है।[5]

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और यादे मौत ह़ज़रते अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मैं ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना : उस ज़ाते अक़्दस की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है जब भी मैं आंख झपकता हूं तो मुझे येह गुमान होता है कि कहीं पलकें मिलने से पेहले ही मेरी रूह़ क़ब्ज़ ना कर ली जाए और मैं जब भी किसी चीज़ की त़रफ़ निगाह उठाता हूं तो मुझे गुमान गुज़रता है कि निगाह नीची करने से पेहले मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर ली जाएगी और जब कोई लुक़्मा लेता हूं तो गुमान होता है कि उसे ह़ल्क़ से उतारने ना पाऊंगा कि मौत उसे गले में रोक देगी, फिर फ़रमाया : ऐ बनी आदम ! अगर तुम अ़क़्ल रखते हो तो खुद को मरने वालों में शुमार करो, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जिस का तुम्हें वादा दिया गया है वोह वक़्त आने वाला है और तुम उस से भाग नहीं सकते।[6]

"अल मौत" लिखा हुवा था शैख़ आ़रिफ़ बिल्लाह मौलाना नूरुद्दीन अ़ली मुत्तक़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक थैली बनाकर अपने पास रखी हुई थी जिस पर "अल मौत" लिखा हुवा था, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मौत का लफ़्ज़ मुरीद के गले में डाल देते ताकि उसे येह बात याद रहे कि मौत क़रीब है दूर नहीं है और वोह अपनी उम्मीदों में कमी और अ़मल में इज़ाफ़ा करे।[7]

"अल मौत, अल मौत" केहता रहे एक नेक बादशाह ने अपने अरकाने सल्त़नत में से एक शख़्स को इस बात पर मामूर कर रखा था कि **वोह उस के पीछे खड़ा "अल मौत अल मौत" केहता रहे** ताकि (ग़फ़्लत की) बीमारी का इलाज होता रहे।[8]

यादे मौत के इस मुन्फ़रिद त़रीक़े पर हम भी अ़मल कर सकते हैं कि ऐसी जगह "अल मौत" लिख दें जहां हमारी नज़र पड़ती रहे, यूं हमें भी अपनी मौत याद रहेगी और ग़फ़्लत का इलाज होता रहेगा, اِنْ شَآءَ اللّٰہ इस अन्दाज़ को शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने भी अपनाया हुवा है, चुनान्चे आप के इर्द गिर्द मुख़्तलिफ़ जगहों पर "अल मौत" लिखा हुवा देखा जा सकता है।

जन्नत का बाग़ प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे मौत की याद ख़ौफ़ज़दा करती है वोह अपनी क़ब्र को जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ पाएगा।[9]

जाने वालों को याद कीजिए इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **मौत की याद दिल में बसाने का इस से बेहतर कोई त़रीक़ा नहीं** कि जो मर चुके हैं उन के चेहरे और सूरतें याद करे कि उन्हें मौत ने ऐसे वक़्त में आ दबोचा था कि जिस का उन्हें वहेमो गुमान भी ना था यानी अचानक मौत का शिकार हो गए थे, अलबत्ता जो मौत की तैयारी कर के बैठा था उस ने बड़ी कामयाबी पाई जबकि लम्बी उम्मीद के धोके में मुब्तला शख़्स ने बहुत बड़ा नुक़्सान उठाया। इन्सान हर घड़ी अपने जिस्म के मुतअ़ल्लिक़ यूं ग़ौरो फ़िक्र करे कि किस त़रह़ कीड़े मेरे जिस्म को खाएंगे, किस त़रह़ मेरी हड्डियां बिखर जाएंगी नीज़ यूं सोचे कि ना जाने कीड़े पेहले मेरी दाईं आंख की पुत्ली खाएंगे या बाईं आंख की, आह ! मेरा जिस्म कीड़ों की ख़ूराक बन चुका होगा। मुझे सिर्फ़ वोही इल्मो अ़मल फ़ाइदा देगा जो मैं ने ख़ालिस अल्लाह करीम के लिए किया होगा। इसी त़रह़ की सोचें दिल में मौत की याद ताज़ा रखेंगी और इस की तैयारी में मश्ग़ूल करेंगी।[10]

मौत के मौज़ूअ़ पर तफ़्सील पढ़ने के लिए इन कुतुबो रसाइल को पढ़ लीजिए : ❁ शर्हुस्सुदूर ❁ मौत का तसव्वुर ❁ ग़फ़्लत ❁ क़ब्र का इम्तेह़ान ❁ क़ब्र की पेहली रात ❁ मुर्दे की बे बसी ❁ मुर्दे के सदमे ❁ बादशाहों की हड्डियां ❁ क़ब्र में आने वाला दोस्त ❁ क़ब्र की हौलनाकियां ❁ क़ब्र वालों की 25 ह़िकायात ❁ ख़ौफ़े ख़ुदा।

येह कुतुबो रसाइल दावते इस्लामी इन्डिया की वेब साइट से मुफ़्त डाउनलोड किए जा सकते हैं।

अल्लाह पाक हमें मौत को याद करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) صحیح ابن حبان،4/281،حدیث:2981(2)التیسیر شرح جامع صغیر،1/201(3)مرقاۃ المفاتیح، 9/213، تحت الحدیث: 5352 ملخصًا (4)ابن ماجہ، 4/496، حدیث: 4259 (5)موسوعہ ابن ابی الدنیا،5/438،حدیث:148(6)مسند الشامیین،2/365،حدیث:1505 (7)مرقاۃ المفاتیح،9/213، تحت الحدیث:5352(8)مرقاۃ المفاتیح،9/213، تحت الحدیث: 5352(9)جمع الجوامع،2/14،حدیث:3516(10)احیاء العلوم،5/202ملخصًا۔

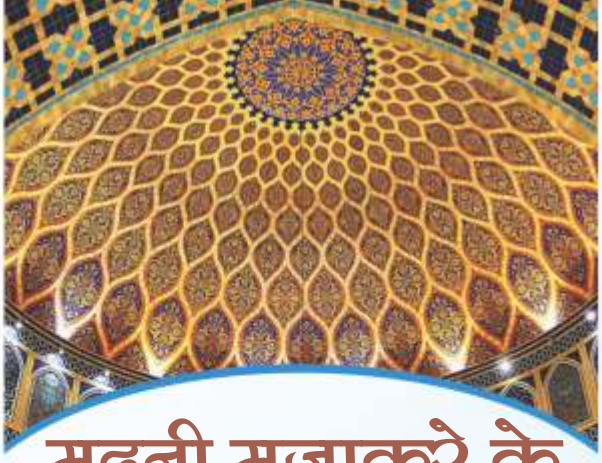

मदनी मुज़ाकरे के सवाल जवाब

1 15 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म के छे नवाफ़िल घर में पढ़ना कैसा ?

सवाल : क्या 15 शाबान शरीफ़ के छे नवाफ़िल घर में पढ़ सकते हैं ?

जवाब : जी हां । शाबानुल मुअ़ज़्ज़म के फ़ज़ाइल और 15 शाबान के नवाफ़िल पढ़ने का त़रीक़ा जानने के लिए मक्तबतुल मदीना का 32 सफ़्ह़ात का रिसाला "आक़ा का महीना" पढ़िए ।

2 क्या बाप अपने बेटे की त़रफ़ से ज़कात अदा कर सकता है ?

सवाल : मेरे बेटे ने इस साल ज़कात अदा नहीं की तो क्या मैं उस की ज़कात अदा कर सकता हूं ?

जवाब : अगर बेटे ने ज़कात अदा नहीं की और बाप अपने बेटे की त़रफ़ से ज़कात अदा करना चाहता है तो बेटे से इस की इजाज़त ले ले क्यूंकि बग़ैर इजाज़त के ज़कात अदा नहीं होगी । अगर बेटे ने इजाज़त दे दी तो बाप की दी हुई ज़कात बेटे की त़रफ़ से अदा हो जाएगी ।

3 मच्छर का ख़ून हाथ वग़ैरा पर लग जाए तो क्या नमाज़ हो जाएगी ?

सवाल : मैं नमाज़ अदा कर रहा था कि इस दौरान मेरे गाल पर मच्छर आ कर बैठ गया, मैं ने मच्छर को मारने के लिए हाथ मारा तो वोह मर गया, लेकिन मेरे गाल और हाथ पर मच्छर का ख़ून लग गया, क्या मेरी नमाज़ हो गई ?

जवाब : मच्छर में ख़ून की मिक़्दार कम होती है और उस का ख़ून भी नापाक नहीं होता ।

(बहारे शरीअ़त, 1/392)

लेहाज़ा नमाज़ में मच्छर का ख़ून हाथ वग़ैरा पर लग जाने की सूरत में आप की नमाज़ की सेह़त पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा ।

4 क़ुरआने करीम में कलिमए त़ैयबा का ज़िक्र

सवाल : क्या कलिमए त़ैयबा का ज़िक्र क़ुरआने पाक में मौजूद है ?

जवाब : कलिमए त़ैयबा का ज़िक्र क़ुरआने करीम में एक साथ नहीं आया बल्कि अलग अलग मक़ाम पर आया है । एक मक़ाम पर है : ﴿لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी नहीं (پ23، الصّٰفّٰت:35)

और दूसरे मक़ाम पर है :

﴿مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं । (پ26، الفتح:29)

अलबत्ता ह़दीसे पाक में इस का ज़िक्र एक साथ मौजूद है । (بخاری، 1/14، حدیث:8)

5 पडौस से गाने बाजों की आवाज़ें आ रही हों तो क्या करें ?

सवाल : अगर पड़ोस में शादी की वज्ह से ढोल और गाने बाजों की आवाज़ें आ रही हों तो हमें क्या करना चाहिए ?

जवाब : अगर ढोल और गाने बाजों को रोक नहीं सकते तो दिल से बुरा जानें और जितना हो सके आवाज़ से बचने के लिए खिड़कियां वग़ैरा बन्द कर दें । बन्दा यही कर सकता है, अब घर छोड़ कर तो भाग नहीं सकता ! जो लोग इस त़रह़ करते हैं उन्हें सोचना चाहिए कि एक तो येह गुनाह वाले काम हैं और दूसरा इन गुनाहों की वज्ह से पड़ोसियों को भी तक्लीफ़ हो रही है इस का वबाल अलग है ।

6 सदक़ा देने के बजाए परिन्दों को दाना डालना कैसा ?

सवाल : मुसलमान को सदक़ा देने के बजाए उस रक़म का दाना ख़रीद कर परिन्दों को डालना कैसा है ?

जवाब : अगर सदक़े से मुराद सदक़ए वाजिबा मसलन ज़कात है और इन पैसों के दाने ख़रीद कर कबूतरों को खिला दिए तो ज़कात अदा नहीं होगी। अलबत्ता नफ़्ल सदक़े के तौर पर कबूतरों और चिड़ियों को भी दाना डालना चाहिए कि येह अच्छा और सवाब का काम है।

7 नमाज़े जनाज़ा की इब्तेदा

सवाल : नमाज़े जनाज़ा कब फ़र्ज़ हुई ?

जवाब : नमाज़े जनाज़ा की इब्तेदा हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के दौर से हुई है, फ़रिश्तों ने हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के जनाज़े पर चार तक्बीरात पढ़ी थीं। और इस्लाम में नमाज़े जनाज़ा के फ़र्ज़ होने का हुक्म मदीना ए मुनव्वरा में नाज़िल हुवा। हज़रते अस्अ़द बिन ज़ुरारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हिजरत के बाद नवें महीने के आख़िर में हुवा। येह पेहले सहाबी थे जिन की नमाज़े जनाज़ा नबी ए अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पढ़ी।

(फ़तावा रज़विय्या, 5/375,376)

8 अपनी क़ब्र तैयार करवाना कैसा ?

सवाल : क्या इन्सान ज़िन्दगी में अपनी क़ब्र तैयार करवा सकता है ?

जवाब : इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : कफ़न रख सकता है। क़ब्र बनाना फ़ुज़ूल है कि कोई नहीं जानता कि कहां मरेगा ? (फ़तावा रज़विय्या, 9/265) मसलन क़ब्र यहां खुदवाई हो और मौत मदीने में आ जाए और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न होना नसीब हो जाए। जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न होने की हिर्स हर मुसलमान को होनी चाहिए।

9 रुख़्सती से पेहले लड़के लड़की को अलग रेहना चाहिए

सवाल : लड़के, लड़की का निकाह़ हो जाए और रुख़्सती ना हो तो क्या वोह एक दूसरे के लिए ग़ैर मेहरम होते हैं ?

जवाब : अगर शरीअ़त के मुताबिक़ निकाह़ हो गया है तो अब एक दूसरे को देखना कोई गुनाह नहीं है। अलबत्ता मुआ़शरे के हिसाब से चलना चाहिए और जब तक बा क़ाइदा रुख़्सती ना हो एक दूसरे से अलग रेहना चाहिए, इस से ख़ानदान वाले भी ख़ुश रहेंगे और मसाइल भी नहीं होंगे।

10 बीवी का अपने शौहर का मज़ाक़ उड़ाना कैसा ?

सवाल : अगर कोई औ़रत अपने शौहर का बात बात पर मज़ाक़ उड़ाती हो तो ऐसी औ़रत के लिए क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसी औ़रत गुनाहगार होगी। उसे तौबा करनी और अपने शौहर से मुआ़फ़ी मांगनी लाज़िम है। औ़रत को अपने शौहर की इताअ़त करनी चाहिए।

11 अख़राजात के ख़ौफ़ से निकाह़ ना करना कैसा ?

सवाल : जो शख़्स इस डर से निकाह़ ना करे कि घर चलाना आसान नहीं, शादी के बाद हुक़ूक़ बहुत बढ़ जाते हैं, आप ऐसे शख़्स के बारे में क्या फ़रमाते हैं ?

जवाब : अगर कोई मुनासिब रिश्ता मिल जाए और शादी का ख़र्च उठाने की ताक़त भी हो नीज़ रेहाइश का मकान और वाजिबी नान नफ़्क़ा यानी खाना पीना वग़ैरा भी दे सकता हो तो निकाह़ कर लेना चाहिए। आने वाली अपनी क़िस्मत का रिज़्क़ ले कर आएगी, बच्चे पैदा होंगे तो वोह भी अपनी क़िस्मत का रिज़्क़ ले कर आएंगे। क़ुरआने करीम में है :

﴿وَلَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَكُمْ خَشْیَةَ اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِیَّاكُمْ ؕ اِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْاً كَبِیْرًا(۳۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपनी औलाद को क़त्ल ना करो मुफ़्लिसी के डर से हम तुम्हें भी और उन्हें भी रोज़ी देंगे बेशक उन का क़त्ल बड़ी ख़ता है।

(پ15، بنی اسرآءیل: 31)

याद रखिए ! रिज़्क़ देने वाला अल्लाह पाक है।

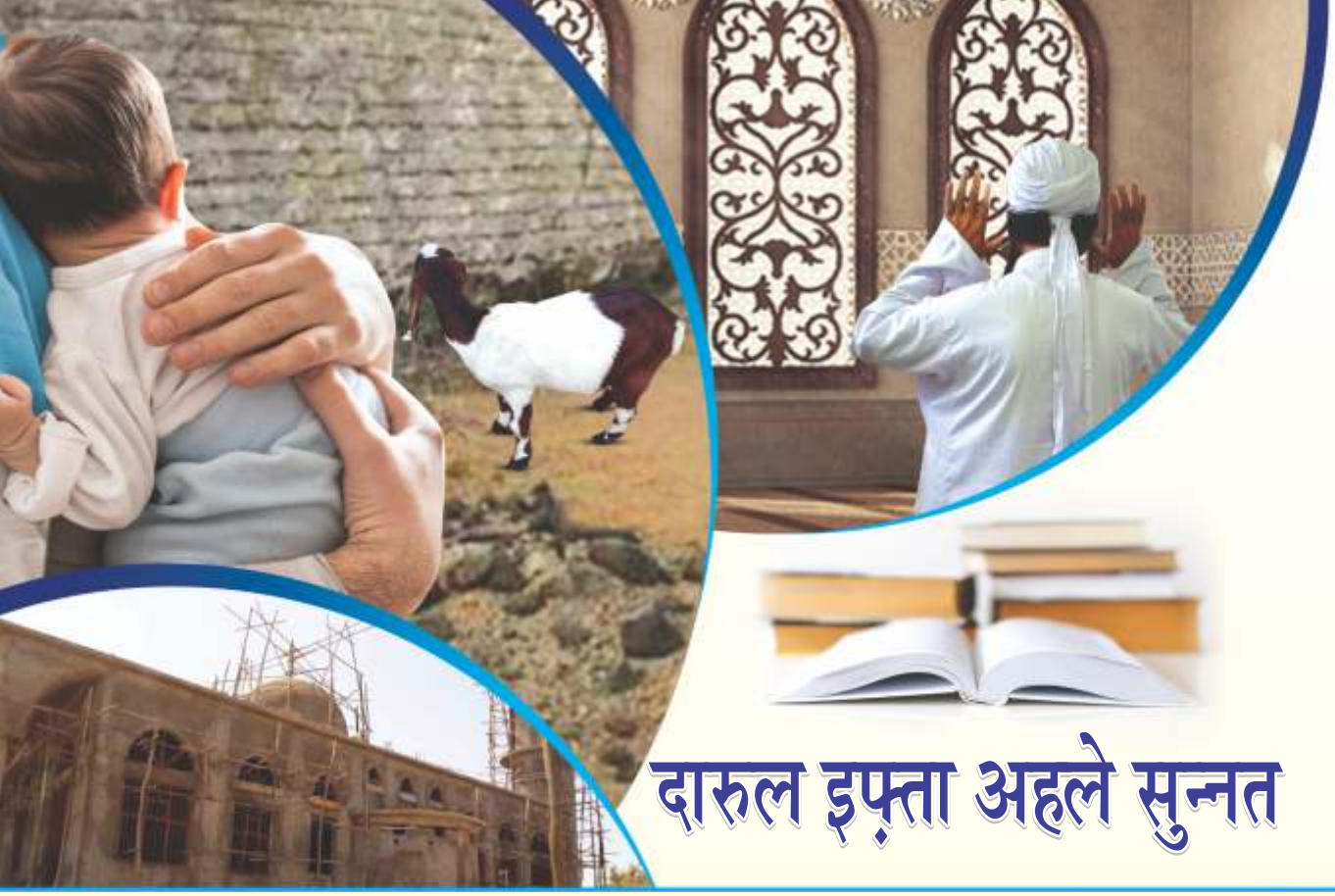

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

1 तक्बीरे तेह़रीमा में हाथ ना उठाने पर सज्दए सह्व लाज़िम होगा या नहीं ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि अगर तक्बीरे तेह़रीमा के लिए भूले से हाथ ना उठाए, फ़क़त ज़बान से "अल्लाहु अक्बर" केह लिया तो क्या हुक्म है ? सज्दए सह्व लाज़िम होगा या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

क़वानीने शरीअ़त के मुत़ाबिक़ सज्दए सह्व, भूले से नमाज़ का कोई वाजिब छूटने से वाजिब होता है, सुननो मुस्तह़ब्बात के तर्क से वाजिब नहीं होता और तक्बीरे तेह़रीमा के लिए दोनों हाथ उठाना सुन्नते मुअक्कदा है, वाजिब नहीं, लेहाज़ा सहवन (यानी भूलने की वज्ह से) उस के तर्क से सज्दए सह्व वाजिब नहीं होगा और गुनाह भी नहीं होगा, अलबत्ता सुन्नते मुअक्कदा के हुक्म के मुत़ाबिक़ जान बूझ कर एक आध बार तक्बीरे तेह़रीमा के लिए हाथ ना उठाना अगर्चे गुनाह नहीं मगर क़ाबिले मलामत ज़रूर है और बिला उ़ज़्र इस की आ़दत बना लेना, गुनाह है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 भूले से सूरए फ़ातेह़ा की जगह कोई और सूरत शुरूअ़ कर दें तो याद आने पर क्या करना होगा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि अगर नमाज़ में सूरए फ़ातेह़ा पढ़ने के बजाए भूले से कोई और सूरत शुरूअ़ कर दी, फिर याद आया तो अब क्या हुक्म है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

फ़र्ज़ की पेहली, दूसरी रक्अ़त और बाक़ी तमाम नमाज़ों की किसी भी रक्अ़त में फ़ातेह़ा के बजाए भूले से सूरत शुरूअ़ कर दी तो इस ह़वाले से हुक्म की तफ़्सील येह है कि : 1 अगर रुक्न की अदाएगी की मिक़्दार (यानी मोह़तात क़ौल के मुत़ाबिक़ एक ऐसी आयत जो कम अज़ कम छे ह़र्फ़ पर मुश्तमिल हो और सिर्फ़ एक कलिमे की ना हो,) पढ़ने से पेहले ही याद आ जाए कि सूरए

फ़ातेहा नहीं पढ़ी, तो फ़ौरन सूरए फ़ातेहा शुरूअ़ कर दें, फिर सूरत मिलाएं और इस सूरत में सज्दए सह्व भी लाज़िम नहीं होगा । (2) अगर रुक्न की अदाएगी की मिक़्दार या इस से ज़ियादा पढ़ लेने के बाद और रुकूअ़ से पेहले याद आ जाए, तो हुक्म येह है कि सूरए फ़ातेहा पढ़ें, फिर दोबारा सूरत मिलाएं और आख़िर में सज्दए सह्व करें । (3) अगर रुकूअ़ में या रुकूअ़ से खड़े होने के बाद और सज्दे से पेहले याद आया, तो वापस आ कर सूरए फ़ातेहा पढ़ें, फिर सूरत मिलाएं, दोबारा रुकूअ़ करें और आख़िर में सज्दए सह्व करें । (4) और अगर सज्दे में जाने तक याद ना आए, तो आख़िर में सज्दए सह्व कर लेना काफ़ी है ।

ख़याल रहे सज्दे से पेहले याद आने की सूरत में अगर क़िराअत मुकम्मल ना की यानी सूरए फ़ातेहा और इस के बाद सूरत ना पढ़ी, तो येह क़सदन तर्के वाजिब होगा, लेहाज़ा नमाज़ दोबारा पढ़ना वाजिब होगा और अगर रुकूअ़ में या रुकूअ़ के बाद याद आया और खड़े हो कर क़िराअत मुकम्मल कर ली, तो रुकूअ़ से बाद वाली क़िराअत, पेहली से लाहिक़ हो कर येह सारी क़िराअत फ़र्ज़ वाक़ेअ़ होगी और पेहले वाला रुकूअ़ मोतबर नहीं रहेगा, इस लिए अब रुकूअ़ दोबारा ना किया, तो फ़र्ज़ तर्क होने की वज्ह से नमाज़ ही फ़ासिद हो जाएगी । नीज़ जहां सज्दए सह्व का हुक्म है वहां अगर सज्दए सह्व ना किया, तो नमाज़ दोबारा पढ़ना वाजिब है ।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 बच्चे की वफ़ात के बाद अ़क़ीक़ा हो सकता है या नहीं ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि बच्चे की वफ़ात के बाद उस का अ़क़ीक़ा हो सकता है या नहीं ??

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

अ़क़ीक़ा, बच्चे की पैदाइश की सूरत में अल्लाह की अ़त़ा की गई नेमत के शुक्राने के त़ौर पर किया जाता है । चूंकि बच्चे की वफ़ात से येह नेमत ज़ाइल हो जाती है और नेमत ज़ाइल हो जाने के बाद उस के शुक्राने का मौक़अ़ नहीं रेहता, लेहाज़ा बच्चे का अ़क़ीक़ा उस की ज़िन्दगी में ही हो सकता है, उस की वफ़ात के बाद नहीं हो सकता ।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 क्या मस्जिद की तामीर में ह़िस्सा मिलाने की मन्नत पूरी करना लाज़िम है ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि चन्द साल पेहले मेरे दोस्त ने मुझ से क़र्ज़ लिया था, कई बार कोशिश के बा वुजूद क़र्ज़ वुसूल नहीं हुवा तो मैं ने मन्नत मानी कि अगर मेरा क़र्ज़ वापस मिल गया तो मैं दस हज़ार रुपिये अपने शेहर की जामेअ़ मस्जिद की तामीर के लिए दूंगा, अब क़र्ज़ वुसूल हो चुका है तो क्या शरअ़न उस मन्नत को पूरा करना लाज़िम है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

मन्नत के लाज़िम होने की शराइत़ में से येह भी है कि जिस चीज़ की मन्नत मान रहे हैं वोह इ़बादते मक़्सूदा हो और उस की जिन्स में से कोई फ़र्ज़ या वाजिब हो और मस्जिद की तामीर में रक़म देना इ़बादते मक़्सूदा नहीं है और ना उस की जिन्स में से कोई फ़र्ज़ या वाजिब है, बल्कि येह एक मुस्तह़ब काम है, लेहाज़ा पूछी गई सूरत में आप पर अपने शेहर की जामेअ़ मस्जिद की तामीर में रक़म देना शरअ़न लाज़िम नहीं है, मगर दे दें तो अच्छा है कि मस्जिद की तामीरात में ह़िस्सा लेना अज्रो सवाब का काम है ।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

5 किसी का सलाम पहुंचाना कब लाज़िम है ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि अगर कोई शख़्स किसी से कहे कि "फ़ुलां को मेरा सलाम केहना" तो क्या येह सलाम पहुंचाना, उस पर लाज़िम होगा ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَۃَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

अगर कोई शख़्स किसी से कहे कि "फ़ुलां को मेरा सलाम केहना" तो उस पर येह सलाम पहुंचाना उसी सूरत में वाजिब है जब उस ने जवाब में सलाम पहुंचाने का इल्तेज़ाम (Promise) कर लिया हो यानी केह दिया हो कि हां आप का सलाम केह दूंगा और अगर पहुंचाने का इल्तेज़ाम ना किया, तो वाजिब नहीं ।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

किसी की जान ना लीजिए !

अल्लाह पाक के नज़दीक बेशक पसन्दीदा दीन ''इस्लाम'' है, इस्लाम में इन्सानी जान का बहुत ही ज़ियादा एहतेराम है और किसी इन्सान को ''नाहक़ और बे क़ुसूर क़त्ल करना'' शदीद कबीरा गुनाह है । इसी लिए इस्लाम जहां दीगर बुराइयों से रोकता है वहीं किसी को ''नाहक़ क़त्ल करने'' वाली बुराई से भी अपने मानने वालों को सख़्ती के साथ मन्अ करता है । ख़ालिक़े काइनात جَلَّ جَلَالُہ अपनी पाकीज़ा किताब क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने हमीद में इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَ لَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जिस जान (के क़त्ल) को अल्लाह ने हराम किया है उसे नाहक़ ना मारो ।[1] और इस्लाम ने हमें येह बात भी समझाई है कि जिस ने बिला इजाज़ते शरई किसी को क़त्ल किया तो गोया उस ने तमाम इन्सानों को क़त्ल कर दिया, नीज़ ना हक़ क़त्ल के ज़रीए ''क़ातिल'' अल्लाह पाक के हक़, बन्दों के हक़ और शरीअत की हुदूद सब को ही पामाल कर देता है । यूंही जिस ने किसी की ज़िन्दगी बचा ली जैसे किसी को क़त्ल होने, डूबने, जलने या भूक से मरने और इन के इलावा दीगर अस्बाबे हलाकत से बचा लिया तो उस ने गोया तमाम इन्सानों को हलाक होने से बचा लिया । चुनान्चे रब्बुल आलमीन इरशाद फ़रमाता है :

﴿كَتَبْنَا عَلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًۢا بِغَیْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِی الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ وَ مَنْ اَحْیَاهَا فَكَاَنَّمَاۤ اَحْیَا النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : हम ने बनी इसराईल पर लिख दिया कि जिस ने किसी जान के बदले या ज़मीन में फ़साद फैलाने के बदले के बग़ैर किसी शख़्स को क़त्ल किया तो गोया उस ने तमाम इन्सानों को क़त्ल कर दिया और जिस ने किसी एक जान को (क़त्ल से बचा कर) ज़िन्दा रखा उस ने गोया तमाम इन्सानों को ज़िन्दा रखा ।[2]

येह फ़रमाने ख़ुदा जिस त़रह़ बनी इसराईल के लिए था उसी त़रह़ मुसलमानों के लिए भी है, क्यूंकि गुज़श्ता उम्मतों के जो अह़काम बग़ैर तरदीद के हम तक पहुंचे हैं वोह हमारे लिए भी हैं । नीज़ येह आयते मुबारका इस्लाम की अस्ल तालीमात को वाज़ेह़ करती है कि इस्लाम किस क़दर अम्नो सलामती का मज़हब है और इस्लाम की नज़र में इन्सानी जान की किस क़दर अहमिय्यत है । इस से उन लोगों को इब्रत ह़ासिल करनी चाहिए जो इस्लाम की अस्ल तालीमात को पसे पुश्त डाल कर दामने इस्लाम पर क़त्लो ग़ारत गरी के ह़ामी होने का बदनुमा धब्बा लगाते हैं ।[3]

किसी मुसलमान को नाहक़ क़त्ल करने वाले की उख़रवी सज़ा बयान करते हुवे अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ مَنْ یَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِیْهَا وَ غَضِبَ اللّٰهُ عَلَیْهِ وَ لَعَنَهٗ وَ اَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِیْمًا(۹۳)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और जो किसी मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल कर दे तो उस का बदला जहन्नम है अ़र्सए दराज़ तक उस में रहेगा और अल्लाह ने उस पर ग़ज़ब किया और उस पर लानत की और उस के लिए बड़ा अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।[4]

इन्सानी जान की हुरमत व अहमिय्यत इस्लाम के नज़दीक किस क़दर है, इस का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि बानी ए इस्लाम, रसूले ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब बैअ़त लेते तो आ़म तौ़र पर जिन बुरे कामों को ना करने का सामने वालों / वालियों से अ़हद लेते उन में "किसी जान को नाहक़ क़त्ल करना" भी शामिल होता।[5] हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुख़्तलिफ़ वईदें बयान कर के भी इस बुराई से लोगों को मन्अ़ किया चुनान्चे 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

1 तबाहो बरबाद करने वाली सात चीज़ों से बचो ! सह़ाबा ए किराम علیہمُ الرّضوان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! वोह (सात चीज़ें) क्या हैं ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (उन चीज़ों को बयान करते हुवे येह भी) इरशाद फ़रमाया : उस जान का क़त्ल करना कि जिस का "नाहक़ क़त्ल" अल्लाह पाक ने ह़राम किया हो।[6]

2 अगर ज़मीनो आस्मान वाले किसी मुसलमान के क़त्ल पर जम्अ़ हो जाएं तो अल्लाह पाक सब को औंधे मुंह जहन्नम में डाल दे।[7]

3 क़ियामत के दिन मक़्तूल बारगाहे इलाही में यूं ह़ाज़िर होगा कि एक हाथ में अपना सर और दूसरे हाथ में क़ातिल का गिरेबान पकड़ा होगा जबकि उस की रगों से ख़ून बेह रहा होगा यहां तक कि वोह अ़र्शे इलाही के पास पहुंच कर अल्लाह रब्बुल आ़लमीन की बारगाह में अ़र्ज़ करेगा : येह है वोह शख़्स जिस ने मुझे क़त्ल किया था। अल्लाह पाक क़ातिल से फ़रमाएगा : तेरी हलाकत हो।" फिर उसे जहन्नम की त़रफ़ ले जाया जाएगा।[8] बाज़ औक़ात कोई शख़्स "नाहक़ क़त्ल" में डायरेक्ट क़ातिल की मदद करता है जबकि बसा औक़ात येह भी होता है कि कोई शख़्स ख़ुद क़त्ल नहीं करता बल्कि किसी दूसरे से क़त्ल करवाता है, दोनों त़रह़ के ही अफ़राद को दर्जे ज़ैल 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिए :

1 "जिस ने किसी मोमिन के क़त्ल पर आधे कलिमे जितनी भी मदद की तो वोह क़ियामत के दिन अल्लाह पाक की बारगाह में इस ह़ाल में आएगा कि उस की दोनों आंखों के दरमियान लिखा होगा اٰیِسٌ مِّنْ رَّحْمَةِ اللّٰه यानी अल्लाह पाक की रेह़मत से मायूस।"[9]

2 (जहन्नम की) आग को सत्तर ह़िस्सों में तक़्सीम किया गया है, 69 ह़िस्से क़त्ल का ह़ुक्म देने वाले के लिए हैं और एक ह़िस्सा क़ातिल के लिए है।[10] ह़ज़रते सैयदना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : क़ियामत के दिन मक़्तूल बैठा होगा, जब उस का क़ातिल गुज़रेगा तो वोह उसे पकड़ कर अल्लाह पाक की बारगाह में अ़र्ज़ करेगा : ऐ मेरे रब ! तू इस से पूछ कि इस ने मुझे क्यूं क़त्ल किया ? अल्लाह पाक क़ातिल से फ़रमाएगा : तू ने इसे क्यूं क़त्ल किया ? क़ातिल अ़र्ज़ करेगा : मुझे फ़ुलां शख़्स ने क़त्ल का ह़ुक्म दिया था, चुनान्चे क़ातिल और क़त्ल का ह़ुक्म देने वाले दोनों को अ़ज़ाब दिया जाएगा।[11]

इन्सानी ह़ुक़ूक़ समझने वाले, इन्हें दूसरों के सामने बयान करने वाले और इन्सानों को तह़फ़्फ़ुज़ फ़राहम करने के ज़िम्मेदार हर शख़्स से मेरी फ़रियाद है ! दुन्या में किसी का "नाहक़ क़त्ल" ना हो इस के लिए अपनी कोशिशें सर्फ़ कीजिए, इन्सान होने के नाते दूसरे इन्सानों का एह़तेराम कीजिए और उन्हें तह़फ़्फ़ुज़ फ़राहम कीजिए। अल्लाह पाक हर एक को इस पैग़ाम पर अ़मल करने और इसे आ़म करने की तौ़फ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) پ8، الانعام: 151 (2) پ6، المآئدۃ: 32 (3) صراط الجنان، 2/420 (4) پ5، النسآء: 93 (5) پ28، الممتحنۃ: 12 - بخاری، 4/359، حدیث: 6873 - مسلم، ص 726، حدیث: 4461 (6) بخاری، 2/242، حدیث: 2766 (7) معجم صغیر، 1/205 (8) معجم اوسط، 3/170، حدیث: 4217 (9) ابن ماجہ، 3/262، حدیث: 2620 (10) مسند احمد، 38/165، حدیث: 23066 (11) شعب الایمان، 4/341، حدیث: 5329۔

(क़िस्त : 3)

देहात वालों के सवालात और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जवाबात

हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से गांव देहात वाले सहाबा ए किराम علیهمُ الرّضوان जो सवालात किया करते थे, उन में से 8 सवालात और उन के जवाबात दो क़िस्तों में बयान किए जा चुके, मज़ीद 4 सवालात और प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जवाबात यहां ज़िक्र किए गए हैं :

बेहतरीन आदमी कौन है ? हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान फ़रमाते हैं : नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में दो देहाती हाज़िर हुवे । एक ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! बेहतरीन आदमी कौन है ? नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : طُوبٰى لِمَنْ طَالَ عُمُرُهٗ، وَحَسُنَ عَمَلُهٗ यानी ख़ुश ख़बरी हो उसे जिस की उ़म्र लम्बी हो और अ़मल अच्छे हों । दूसरे ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! सब से बेहतरीन अ़मल क्या है ? इरशाद फ़रमाया : اَنْ تُفَارِقَ الدُّنْيَا وَلِسَانُكَ رَطْبٌ مِنْ ذِكْرِ اللهِ यानी तुम दुन्या को इस ह़ाल में छोड़ों कि तुम्हारी ज़बान अल्लाह पाक के ज़िक्र से तर हो । उस ने अ़र्ज़ की : يَا رَسُوْلَ اللهِ وَيَكْفِيْنِیْ؟ यानी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या येह मेरे लिए काफ़ी है ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : نَعَمْ وَيَفْضُلُ عَنْكَ हां, येह तुम्हारी त़रफ़ से ज़ियादा ही होगा ।[1]

एक उ़ज़्व कितनी बार धोएं ? हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास एक आराबी आया उस ने वुज़ू के बारे में सवाल किया । रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें वुज़ू कर के दिखाया जिस में हर उ़ज़्व तीन तीन बार धोया फिर फ़रमाया : هٰكَذَا الْوُضُوْءُ، فَمَنْ زَادَ عَلٰى هٰذَا فَقَدْ اَسَاءَ وَتَعَدّٰى وَظَلَمَ यानी वुज़ू इस त़रह़ है, तो जिस ने इस में इज़ाफ़ा किया उस ने बुरा किया, ह़द से बढ़ा और उस ने ज़ुल्म किया ।[2]

इसराफ़ कब गुनाह है ? आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : येह वईद उस सूरत में है कि जब येह एतेक़ाद रखते हुवे ज़ियादा करे कि ज़ियादा करना ही सुन्नत है और अगर तसलीस (यानी तीन बार धोने) को सुन्नत माना और वुज़ू पर वुज़ू के इरादे या शक के वक़्त इत़मीनाने क़ल्ब के लिए या तबरीद (यानी ठन्डक के ह़ुसूल) या तन्ज़ीफ़ (यानी सफ़ाई) के लिए ज़ियादा किया या किसी ह़ाजत की वज्ह से कमी की तो कोई ह़रज नहीं । सिर्फ़ दो सूरतों में इसराफ़ नाजाइज़ व गुनाह होता है एक येह कि किसी गुनाह में सर्फ़ व इस्तेमाल करें, दूसरे बेकार मह़ज़ माल ज़ाएअ़ करें । वुज़ू व ग़ुस्ल में तीन बार से ज़ाइद पानी डालना जबकि ग़रज़े सह़ीह़ (यानी जाइज़ मक़्सद) से हो हरगिज़ इसराफ़ नहीं कि जाइज़ ग़रज़ में ख़र्च करना ना ख़ुद मासियत (यानी नाफ़रमानी) है नाबेकार इज़ाअ़त (यानी ज़ाएअ़ करना) ।[3]

जन्नत दिलाने वाला अ़मल कौन सा है ? ह़ज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं एक

आराबी ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सवाल किया : يَا رَسُولَ اللهِ، عَلِّمْنِي عَمَلًا يُدْخِلُنِي الْجَنَّةَ यानी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई ऐसा अ़मल बताइए जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे। नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम ने बहुत कम अल्फ़ाज़ में बहुत बड़ा सवाल किया है। गुलाम आज़ाद करो और जान को आज़ाद करवाओ। उस ने पूछा : اَوَ لَيْسَتَا بِوَاحِدَةٍ؟ क्या येह दोनों एक ही नहीं ? रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नहीं ! बल्कि गुलाम आज़ाद करने का मत़लब येह है कि तुम अकेले कोई गुलाम आज़ाद करो और जान को आज़ाद करवाओ का मत़लब येह है कि किसी के गुलाम को आज़ाद कराने में तुम उस की माली मदद करो।[4]

इसी सवाल के जवाब में दूसरी रिवायत में कुछ इज़ाफ़ा भी है : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अकेले गुलाम आज़ाद करो या किसी की मदद से गुलाम आज़ाद करो और अगर तुम इस की त़ाक़त ना रखो तो भूके को खाना खिलाओ और प्यासे को पानी पिलाओ और नेकी का हुक्म दो और बुराई से मन्अ़ करो फिर अगर तुम इस की भी त़ाक़त ना रखो तो अच्छी बात के इलावा अपनी ज़बान को रोके रखो।[5]

अल्लाह की राह में लड़ने वाला मुजाहिद कौन ?

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक देहात के रेहने वाले आदमी ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा : اَلرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِلْمَغْنَمِ एक आदमी ग़नीमत के लिए जंग करता है وَالرَّجُلُ يُقَاتِلُ لِيُذْكَرَ और एक अपनी शोहरत चर्चे के लिए وَيُقَاتِلُ لِيُرٰى مَكَانُهُ और एक आदमी इस लिए लड़ता है कि उस का दरजा देखा जाए। مَنْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ؟ तो अल्लाह की राह में लड़ने वाला मुजाहिद कौन है ? रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مَنْ قَاتَلَ، لِتَكُوْنَ كَلِمَةُ اللهِ هِيَ الْعُلْيَا، فَهُوَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ यानी जो सिर्फ़ इस लिए जंग करे कि अल्लाह का कलेमा बुलन्द हो जाए, वोह अल्लाह की राह में मुजाहिद है।[6]

माले ग़नीमत के लिए लड़ने वाले के बारे में ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : यानी सिर्फ़ माले ग़नीमत ह़ासिल करने या मुल्क जीतने और वहां राज करने की निय्यत से जंग करता है, रिज़ा ए इलाही की निय्यत नहीं करता जैसा कि आज कल उ़मूमन जंग के वक़्त मुल्क व क़ौम की ख़िदमत का नाम लेते हैं, अल्लाह के दीन की ख़िदमत का ज़िक्र तक नहीं करते इस लिए बचना चाहिए।

दूसरे आदमी के बारे में मुफ़्ती साह़िब عَلَیْہِ الرَّحْمَہ लिखते हैं : यानी सिर्फ़ इस लिए जेहाद करता है कि लोगों में उस की बहादुरी का चर्चा हो और उसे शोहरत व इ़ज़्ज़त ह़ासिल हो, (अलबत्ता) कुफ़्फ़ार को अपनी शुजाअ़त दिखाना उन के मुक़ाबिल अपनी शान व बहादुरी बयान करना इ़बादत है।

मुफ़्ती साह़िब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तीसरे आदमी के बारे में लिखते हैं : यानी ताकि उस का दर्जा देखा जाए या लोगों को अपना दर्जए शुजाअ़त दिखाए मुसलमानों को या ताकि वोह अपनी जन्नत की जगह देख ले यानी सिर्फ़ जन्नत ह़ासिल करने के लिए जंग करता है। तीसरे माना सूफ़ियाना हैं। सूफ़िया के नज़्दीक जन्नत ह़ासिल करने या दोज़ख़ से बचने के लिए भी इ़बादत ना की जाए, सिर्फ़ जन्नत वाले रब को राज़ी करने के लिए इ़बादत करनी चाहिए, जब वोह राज़ी हो गया तो सब कुछ मिल जाएगा।

كَلِمَةُ اللهِ के तह़त लिखते हैं : इस से मुराद कलिमए त़ैयबा لَا اِلٰهَ اِلَّا الله है यानी इस्लाम की इशाअ़त करने और कुफ़्र का ज़ोर तोड़ने के लिए जंग हो। ख़याल रहे कि ख़िदमते दीन के साथ ग़नीमत की निय्यत भी होना मुज़िर नहीं मगर कमाल इस में है कि ख़ालिस ख़िदमते दीन की निय्यत हो ग़नीमत बल्कि जन्नत ह़ासिल करने का भी इरादा ना हो।[7]

बक़िय्या अगले माह के शुमारे में

---

(1)الاحاد والمثانی، 3/51، حدیث: 1356 (2)نسائی، ص31، حدیث: 140
(3)فتاوٰی رضویہ، جز:1، 1/942 (4)الترغیب والترہیب، 3/21، حدیث: 9
(5)الترغیب والترہیب، 3/336، حدیث:4(6)بخاری، 2/256، حدیث:2810
(7)مراٰۃ المناجیح، 5/428۔

सोचें (Thoughts)

सोचना इन्सान की ज़िन्दगी का हिस्सा है, उस की सोचें मुख़्तलिफ़ क़िस्म की होती हैं, कभी येह इख़्तियारी तौर पर (Consciously) सोचता है और कभी सोचें ख़ुद ब ख़ुद उस के दिलो दिमाग़ में दाख़िल हो जाती हैं जिन्हें कभी येह निकाल बाहर करता है तो कभी सीने से लगा लेता है। कभी येह अपने बारे में सोचता है तो कभी दूसरों के बारे में। येह सोचें ज़रूरी भी होती हैं तो कभी फ़ुज़ूल भी ! बल्कि बाज़ सूरतों में गुनाह भी। सोचों के पेहलू मुस्बत भी होते हैं और मन्फ़ी भी। येह सोचें उस की दुन्या ओ आख़ेरत पर असर अन्दाज़ (Effective) भी होती हैं, क्यूंकि इन्सान सिर्फ़ सोचता नहीं है बल्कि उस पर अ़मल कर गुज़रता है।

क़ारेईन ! हमें इस का शुऊ़र (Awareness) होना चाहिए कि हम क्या सोचते हैं और हमें क्या सोचना चाहिए ? इन्सान कभी अपने बारे में और कभी दूसरों के बारे में सोचता है !

इन्सान अपने बारे में क्या सोचता है ?

मुझे तरक़्क़ी कैसे मिलेगी ? मैं अपनी सलाहिय्यतों को किस त़रह़ बढ़ा सकता हूं ? मैं ख़ुशह़ाल कैसे हो सकता हूं ? मुझे आसाइशात और सहूलतें मिलनी चाहिएं, मुझे इतनी सेलेरी मिलनी चाहिए, मेरी इ़ज़्ज़त की जाए, मुझे शोहरत मिले, मेरी वाह वा होनी चाहिए, मुझे मेरे हुक़ूक़ नहीं मिलते, मुझे तंग किया जाता है, सताया जाता है, मेरे सीने में जलने वाली इन्तेक़ाम की आग कैसे ठन्डी हो सकती है ? फ़ुलां काम करने से मुझे क्या फ़ाइदा होगा ? वग़ैरा।

इन मिसालों में मुस्बत और मन्फ़ी दोनों ऑप्शन शामिल हैं, लेकिन येह भी हो सकता है कि हमारी सोच मुस्बत हो लेकिन उस तक पहुंचने का त़रीक़ा इस्लामी तालीमात की रौशनी में जाइज़ ना हो जैसे कोई माली तौर पर (Financially) ख़ुशह़ाल होने के लिए रिश्वत लेता है तो येह नाजाइज़ है।

अपने बारे में येह भी सोचिए

बहुत सी बातें अपने ही बारे में सोचने की हैं लेकिन हम बहुत कम सोचते हैं, सिर्फ़ 2 की निशानदेही करता हूं :

1 येह सोचना ज़रूरी है कि मेरी क्या क्या ज़िम्मेदारियां (Responsibilities) हैं, एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी का बयान इस ह़दीसे पाक में मौजूद है कि नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम सब निगेहबान हो और हर एक से उस की रिआ़या (यानी मा तह़तों और मेह़कूम लोगों) के बारे में पूछा जाएगा। जिसे

लोगों पर अमीर बनाया गया वोह निगेहबान है, उस से उन के बारे में पूछा जाएगा। मर्द अपने अहले ख़ाना पर निगेहबान है, उस से अहले ख़ाना के बारे में सवाल किया जाएगा, औ़रत अपने शौहर के घर और उस की औलाद पर निगेहबान है, वोह उन के बारे में जवाब देह होगी, गुलाम अपने आक़ा के माल पर निगेहबान है, उस से इस बारे में पूछ गछ होगी। सुन लो ! तुम में से हर एक निगेहबान है और हर एक से उस की रिआ़या (मातह़तों और मह़कूम लोगों) के बारे में पुरसिश (यानी पुछगछ) होगी।[(1)]

इस ह़दीसे पाक के तह़त शारेहे़ बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : (रिआ़या (Subjects) से) मुराद येह है कि जो किसी की निगेहबानी (Supervision) में हो। इस त़रह़ अ़वाम सुल्त़ान और ह़ाकिम के, औलाद मां-बाप के, तलामिज़ा असातिज़ा के, मुरीदीन पीर के रिआ़या हुवे। यूंही जो माल ज़ौजा या औलाद या नौकर की सुपुर्दगी में हो। उस की निगेहदाश्त उन पर वाजिब है। नीज़ निगेहबानी में येह भी दाख़िल है कि रिआ़या गुनाह में मुब्तला ना हो।[(2)] जबकि ह़ज़रते अलह़ाज मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि येह ना समझो कि सिर्फ़ बादशाह से ही उस की रिआ़या का सवाल होगा हम आज़ाद रहेंगे, नहीं बल्कि हर शख़्स से अपने मा तह़त लोगों के मुतअ़ल्लिक़ सवाल होगा कि तुम ने उन के दीनी व दुन्यावी हुक़ूक़ अदा किए या नहीं ?[(3)]

2 अपनी दुन्या ही नहीं आख़ेरत के बारे में भी सोचिए, क़ुरआने पाक में है :

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और हर जान देखे कि कल के लिए क्या आगे भेजा।[(4)] यानी रोज़े क़ियामत के लिए क्या आमाल किए।[(5)] इस सोच के नतीजे में अपने ख़ालिक़ो मालिक की ना फ़रमानियों से बचने और आख़ेरत के लिए सवाब का ख़ज़ाना इकठ्ठा करने का ज़ेहन बनेगा। इस सोच के अ़मली नफ़ाज़ के लिए दुन्या की टोप क्लास दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी इन्डिया का बेहतरीन प्लेटफ़ोर्म मौजूद है, इस में शामिल हो जाइए आप का किरदार व अ़मल Automatically बेहतर होना शुरूअ़ हो जाएगा, اِنْ شَآءَ الله

हम दूसरों के बारे में क्या सोचते हैं ?

लगता ऐसा है कि हम दूसरों के बारे में अपने से ज़ियादा सोचते हैं कि फ़ुलां ऐसा क्यूं करता है, वेसा क्यूं करता है ? मसलन ❁ येह तो निकम्मा था इस को नौकरी कैसे मिल गई ? रिश्वत दी होगी ❁ एक दम इतना अमीर कैसे हो गया ? करप्शन की होगी ❁ उसे मकान का किराया देना भारी पड़ता था, अब अपना ज़ाती मकान ख़रीद लिया है, लम्बा हाथ मारा होगा ❁ बीवी का गुलाम है ❁ उसे कुछ नहीं आता जाता ❁ ख़ुशामदी है ❁ उसे ग़रीबों का कोई एह़सास नहीं ❁ बहुत चालाक आदमी है ❁ किसी से सीधे मुंह बात नहीं करता ❁ अपनी औक़ात भूल गया है ❁ कुत्ते की दुम की त़रह़ है जो सीधी नहीं हो सकती ❁ मेरे दुश्मन से दोस्ती कर के मुझे नीचा दिखाना चाहता है ❁ उसे सिर्फ़ अपना मफ़ाद अ़ज़ीज़ है ❁ मुझ से ह़सद करता है ❁ झूटा और फ़्रोडिया है ❁ नख़रे बाज़ है ❁ फ़ुलां जगह रिश्ता क्यूं किया ? ❁ बड़ा बना ठना रेहता है।

दूसरों के बारे में सोचने की इस त़रह़ की सेंकड़ों मिसालें बन सकती हैं। उन्ही सोचों के नतीजे में किसी के बारे में अच्छी या बुरी राए भी क़ाइम कर ली जाती है। बहर ह़ाल इन्सान दूसरों के बारे में मन्फ़ी सोचने से आगे चल कर ज़ियादा तर जिन गुनाहों में मुब्तला हो सकता है, उन में बदगुमानी, ऐ़ब तलाशना, ग़ीबत, तोहमत वग़ैरा सरे फ़ेहरिस्त हैं। कितनी ख़ौफ़नाक बात है कि इन्सान दूसरों के बारे में सोचने की वज्ह से खुद जहन्नम की आग में जले और हौलनाक अ़ज़ाबात का सामना करे ! अभी मौक़अ़ है संभल जाइए और सच्ची तौबा कर लीजिए।

दूसरों के बारे में येह सोचिए

अब रहा येह सवाल कि दूसरों के बारे में हमें क्या सोचना चाहिए तो आप को मुस्बत और अच्छा सोचने

की दरजनों जिहतें (Directions) मिल जाएंगी, मसलन अगर किसी को देखें कि उसे शरीअ़त के अह़कामात नहीं मालूम या वोह नमाज़ नहीं पढ़ता, रोज़ा नहीं रखता या दीगर फ़राइज़ो वाजिबात पूरे नहीं करता तो उसे समझाने की सोचें, येह हुक्मे कुरआनी भी है :

﴾وَذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِیْنَ(۵۵)﴿ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाइदा देता है।[6]

इसी त़रह़ आप के इर्द गिर्द कोई बीमार है तो सोचिए कि मुझे उस की इ़यादत करनी है, कोई अपने अ़ज़ीज़ की फ़ौतगी या किसी और वज्ह से ग़मगीन है तो उस से ताज़ियत करनी है, कोई मज़लूम है तो उसे ज़ुल्म से बचाने का सोचें, मायूस शख़्स की मायूसी ख़त्म करने का सोचें, बे हुनर को कोई हुनर (Skill) सिखाने का सोचें, कोई अच्छा काम करना चाहता है लेकिन उस के पास वसाइल (Resources) नहीं हैं तो उस का वसीला बनने का सोचें, कोई परेशान ह़ाल है, बे सहारा है बिल ख़ुसूस सैलाब, ज़लज़ले जैसे सानिह़ात (Accidents) के मुतास्सिरीन, उन की दिलजोई और फ़लाह़ी मदद करने का सोचिए।

उन लोगों के बारे में भी सोचना ज़रूरी है जो आप की ज़िम्मेदारी में हैं : मसलन आप टीचर हैं तो स्टूडन्टस के बारे में सोचिए कि उन्हें इ़ल्मे दीन बेहतर अन्दाज़ में किस त़रह़ सिखाया जा सकता है ? ट्रान्सपोर्टर हैं तो पेसेन्जर्ज़ के बारे में सोचिए कि उन्हों ने जिस लिए किराया दिया है वोह चीज़ें उन्हें मिल रही हैं या नहीं ? किसी ऑफ़िस में मेनेजर हैं तो अपने स्टाफ़ के फ़राइज़ के साथ साथ उन के हुक़ूक़ के बारे में भी सोचिए, बाप हैं तो औलाद की इस्लामी तरबियत के बारे में सोचिए, इसी त़रह़ मेज़बान मेहमानों की अच्छी मेहमान नवाज़ी और डॉक्टर मरीज़ों के बारे में सोचे कि मैं उन का दुरुस्त और मुफ़ीद इ़लाज कर रहा हूं या नहीं ?

सोचें पाकीज़ा रखने का त़रीक़ा

इन्सान को येह आज़ादी नहीं कि जो चाहे सोचे क्यूंकि हर सोच सोचने की नहीं होती, अब रहा येह सवाल कि सोचें तो बिन बुलाए भी आ जाती हैं ? तो जिस त़रह़ पानी को साफ़ करने के लिए फ़िल्टर का इस्तेमाल भी किया जाता है कि वोह आलूदा पानी (Polluted water) को गुज़रने नहीं देता बल्कि साफ़ कर के गुज़ारता है इसी त़रह़ अपनी सोचों को पाकीज़ा और साफ़ रखने के लिए भी दिलो दिमाग़ में एक फ़िल्टर का होना ज़रूरी है जो आलूदा और बुरी सोचों को रोक दे।

आज कल एक अ़जीब रुजह़ान (Trend) ज़ियादा देखने में आ रहा है कि हर दूसरा शख़्स अपनी प्रोब्लम ह़ल करने के लिए अलग से फ़ोर्मूला बनाने की कोशिश कर रहा है कि मैं यूं करूंगा तो येह मेरा मस्अला ह़ल हो जाएगा या फिर ऐसे लोगों से मश्वरा करता है या उन्हें फ़ोलो करता है जिन का इस्लाम से कोई वास्त़ा नहीं होता, याद रखिए कि इस्लाम हमारी ज़िन्दगी के हर हर पेहलू के बारे में राहनुमाई करता है, ﴾وَنَزَّلْنَا عَلَیْكَ الْكِتٰبَ تِبْیَانًا لِّكُلِّ شَیْءٍ﴿ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम पर येह कुरआन उतारा कि हर चीज़ का रौशन बयान है।[7]

कहा जाता है : Islam is the complete code of life अब हमें सिर्फ़ उसे डीकोड करना है, इस लिए इस्लामी मालूमात (Knowledge) के हुसूल को अपना टार्गेट बना लीजिए, फिर आप की ज़िन्दगी का जो भी ईश्यू हो उस के लिए इस्लामी त़रीक़ा मालूम कीजिए, उस पर अ़मल कीजिए, इस अ़मल का नतीजा वोही निकलेगा जो आप के ह़क़ में बेहतर होगा क्यूंकि येह इस्लाम का निज़ाम उसी रब्बे काइनात का बनाया हुवा है जिस ने हमें बनाया है, और बनाने वाला अपनी बनाई हुई चीज़ के फ़ाइदे, नुक़्सान के बारे में सब से ज़ियादा जानता है।

सोचिए कि आप क्या सोचते हैं ? और क्या सोचना चाहिए ?

Think about what you think? and what should be thought?

अल्लाह पाक हमें अच्छा सोचने का शुऊर अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1)بُخاری،2/159،حدیث:2554(2)نزہۃ القاری،2/530، 531(3)مراٰۃ المناجیح،5/351(4)پ28،الحشر:18(5)خزائن العرفان،ص1012(6)پ27، الذّٰریٰت:55(7)پ14،النحل:89۔

(क़िस्त : 01)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वुफ़ूद के साथ अन्दाज़

जब इस्लाम की रौशनी मक्का व मदीना से फैलते फैलते दूर तक पहुंची तो अ़रबो अ़जम के दूरो नज़दीक वाले शेहरों और देहातों से ना सिर्फ़ एक एक दो दो कर के लोग रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होने लगे बल्कि वफ़्द की सूरत में ह़ाज़री देने वालों का भी तांता बन्ध गया । कोई इस्लाम क़बूल करने आ रहा है तो कोई दीन सीखने, कोई अपने मसाइल ह़ल करवाने आ रहा है तो कोई ज़ियारते रुख़े अक़्दस से अपनी आंखें ठन्डी करने, कोई दुआ़ओं की ख़ैरात पाने आ रहा है तो कोई इन्आ़मात की बारिश में नहाने ।

हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन आने वालों पर शफ़्क़तों, इ़नायतों, नवाज़िशों और करम व मेहरबानी के दरिया बहाते थे, यहां ख़ास तौ़र पर वुफ़ूद (Delegations) के साथ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

इस्लाह़ का मुन्फ़रिद अन्दाज़ अल्लाह पाक के आख़री रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आने वाले वुफ़ूद की इस्लाह़ का ख़ास ख़याल रखते थे । इस्लाह़ का अन्दाज़ इतना मीठा होता कि सामने वाला बग़ैर हुज्जत के आप की बात मानने को तैयार हो जाता जैसा कि बनू किन्दा के अस्सी आदमियों का एक वफ़्द बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा, उस वफ़्द के सरदार का नाम अश्अ़स बिन क़ैस था । वोह अपने अ़लाक़े के हुक्मरान थे और उन के साथी भी साह़िबे ह़ैसिय्यत थे । येह सब अस्ह़ाब अगर्चे इस्लाम क़बूल कर चुके थे लेकिन इन्हों ने रेशम पहेना हुवा था । चुनान्चे, मदीने में इस ह़ालत में ह़ाज़िर हुवे कि सब ने अपने कन्धों पर ह़ीरे की ज़रीं चादरें डाल रखी थीं जिन के कनारों पर रेशम की लेस लगाई गई थी । हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : क्या तुम इस्लाम क़बूल नहीं कर चुके ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! हम अल्लाह के फ़ज़्ल से नेमते इस्लाम पा चुके हैं । हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : फिर येह रेशम कैसा ? अहले वफ़्द अपनी ग़लती पर मुतनब्बेह हुवे और सब ने फ़ौरन चादरें ज़मीन पर फेंक दीं । प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन का जज़्बा देख कर बहुत ख़ुश हुवे । जब वोह रुख़्सत होने लगे तो आप ने रईसे वफ़्द अश्अ़स बिन क़ैस और दूसरे लोगों को इन्आ़मात भी अ़ता फ़रमाए ।[1]

तरबियत फ़रमाना फ़त्ह़े मक्का के बाद क़बीला ए सदिफ़ की एक जमाअ़त हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई । येह लोग इस्लाम क़बूल कर चुके थे, जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुत्बा इरशाद फ़रमा रहे थे । येह अचानक से सामने आ गए और बग़ैर सलाम किए बैठ गए ।

हुज़ूर ने उन से पूछा : तुम मुसलमान हो नां ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! हम मुसलमान हैं । नबी ए अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तो फिर तुम ने सलाम क्यूं नहीं किया ? येह सुन कर उन्हें सख़्त नदामत हुई और सब ने खड़े हो कर कहा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब में وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ फ़रमाया और हुक्म दिया कि बैठ जाओ, वोह बैठ गए और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से औक़ाते नमाज़ के बारे में सवाल करने लगे तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें नमाज़ के औक़ात सिखाए ।[2]

वफ़्द का नाम बदलना फ़त्हे मक्का से क़ब्ल वफ़्दे जुहैना सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा येह वफ़्द अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन बद्र और इन के मां शरीक भाई अबू रौअ़ह की सरबराही में ह़ाज़िर हुवा । चूंकि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जाहिली नामों को सख़्त नापसन्द फ़रमाते थे चुनान्चे आप ने अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा से मुख़ातब हो कर फ़रमाया : तुम आज से अ़ब्दुल्लाह हो । (क़बीला ए जुहैना बनी ग़य्यान की शाख़ था । ग़य्यान के माना चूंकि सरकशी के होते हैं इस लिए) हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस का नाम भी बदल दिया और फ़रमाया : आइन्दा तुम्हारा क़बीला "बनी रश्दान" केहलाएगा । (यानी हिदायत याफ़्ता लोग) जिस वादी में इन लोगों का मस्कन था उस का नाम ग़वा (गुमराही) था । हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस का नाम रुश्द (यानी हिदायत की वादी) रख दिया । सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की मस्जिद के लिए जगह निशान ज़द फ़रमाई ।[3]

एक मौक़ेअ़ पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में क़बीला "अ़ह्मस" के अ़ढ़ाई सौ अफ़राद आए । हुज़ूरे अनवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से पूछा : तुम कौन लोग हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : हम "अ़ह्मसुल्लाह" हैं (यानी अल्लाह पाक के जोश दिलाए हुवे) । ज़माना ए जाहिलिय्यत में उन्हें इसी त़रह़ कहा जाता था । हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन का नाम बदल कर "अ़ह्मसु लिल्लाह" (यानी अल्लाह पाक के लिए जोश दिलाने वाले) रख दिया ।[4]

अ़त़ा व सख़ा में मुक़द्दम कर के इ़ज़्ज़त देना जब येह बनू अ़ह्मस का वफ़्द आया तो उस वक़्त बारगाहे नबवी में बनू बजीला का वफ़्द भी मौजूद था । रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बनू अ़ह्मस वालों की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमाई और ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया : बजीलह के वफ़्द को अ़त़ा करो और अ़ह्मस वालों से इब्तेदा करो । उन्हों ने ऐसा ही किया ।[5]

यहां नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़त़ा की इब्तेदा अ़ह्मस वालों से फ़रमा कर इन के मक़ामो मर्तबे का लेह़ाज़ फ़रमाया ।

दुआ़ओं से नवाज़ना जब क़बीला ए अस्लम और क़बीला ए ग़िफ़ार को भी क़बूले इस्लाम की सआ़दत नसीब हुई और वोह ख़िदमते नबवी में बारयाब हुवे । इन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम ने दिलो जान के साथ अल्लाह की और आप की इत़ाअ़त इख़्तियार की हमें कोई ऐसी चीज़ अ़त़ा फ़रमाएं कि हम दूसरे क़बाइल के सामने अपना सर इ़ज़्ज़त के साथ बुलन्द कर सकें । हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की दरख़्वास्त के जवाब में दस्ते दुआ़ उठा कर फ़रमाया : اَسْلَمَ سَالَمَهَا اللهُ وَغِفَارُ غَفَرَ اللهُ لَهَا यानी अस्लम को अल्लाह सलामत रखे और ग़िफ़ार की मग़्फ़िरत फ़रमाए ।[6]

येह दुआ़ अहले वफ़्द के लिए इतना बड़ा एज़ाज़ थी कि वोह फ़र्ते मसर्रत से फूले नहीं समाते थे ।

इसी त़रह़ आप ने ना सिर्फ़ बनू अ़ह्मस की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमाई बल्कि उन के लिए दुआ़ ए ख़ैर भी फ़रमाई जैसा कि मुस्नदे अ़ह्मद में है : "मौला ! अ़ह्मस के पैदल दस्तों और घुड़ सवारों में बरकत फ़रमा ।" आप ने येह दुआ़ सात बार मांगी ।[7]

बक़िय्या अगले माह के शुमारे में

(1)طبقات ابن سعد، 1/248، تاریخ ابن عساکر، 9/123 ماخوذاً (2)السیرۃ النبویۃ لابن کثیر، 4/181، طبقات ابن سعد، 1/248 (3)دیکھئے: طبقات ابن سعد، 1/251 (4)طبقات ابن سعد، 1/261 مختصراً (5)سبل الہدیٰ والرشاد، 6/261- تاریخ ابن عساکر، 24/422 (6)طبقات ابن سعد، 1/265 مفہوماً (7)مسند احمد، 31/129، حدیث: 18834۔

(क़िस्त : 2)

इस्लाम और तालीम

3 तालीम आ़म करने की तरग़ीब

तालीम आ़म करो : इल्म की शम्अ़ को रौशन करने के लिए ज़रूरी है कि जो शख़्स कुछ सीख ले तो वोह उस को अपने तक मेहदूद ना रखे बल्कि दूसरों को भी सिखाए चुनान्चे, अल्लाह पाक के आख़री नबी हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस की तरग़ीब देते हुवे इरशाद फ़रमाया : पहुंचा दो मेरी तरफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो ।[1] जो लोग मौजूद हैं वोह येह बातें उन लोगों तक पहुंचाएं जो मौजूद नहीं ।[2]

4 हुसूले इल्म के मवाक़ेअ़ व ज़राएअ़ का इन्तेज़ाम

हुसूले इल्म के मवाक़ेअ़ की फ़राहमी : इल्म की शम्अ़ को रौशन करने और लोगों को इस से मुज़य्यन करने के लिए मर्कज़ का क़ियाम ज़रूरी है ताकि इन्तेज़ाम और मुआ़मलात ख़ुश उस्लूबी से सर अन्जाम दिए जाएं और लोगों को इल्म हासिल करने का बेहतरीन प्लेटफ़ॉर्म भी फ़राहम किया जाए चूंकि इस ज़मीन के तूलो अ़र्ज़ में बे शुमार लोग आबाद हैं और उन को इल्म से आरास्ता करने के लिए किसी एक जगह पर जम्अ़ नहीं किया जा सकता तो इस के लिए मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर ब्रान्चिज़ खोली जा सकती हैं ताकि जो मक़ाम जिस के क़रीब हो वोह वहां से मुस्तफ़ीद हो, प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मर्कज़ क़ाइम किया और बाद में उस की मुख़्तलिफ़ ब्रान्चिज़ क़ाइम की गई ।

अव्वलीन मर्कज़ दारे अरकम : हज़रते सैयदना अरकम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का घर कोहे सफ़ा के पास वाक़ेअ़ था, इब्तेदा ए इस्लाम में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसी घर में रहा करते थे, यहीं आप लोगों को दावते इस्लाम दिया करते थे ।[3]

हिजरत के बाद तालीमी मर्कज़ का क़ियाम : हिजरते मदीना के बाद हुज़ूर नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिदे नबवी में एक बा क़ाइदा दर्सगाह क़ाइम फ़रमाई ताकि मुबल्लिग़ीन की एक तरबियत याफ़्ता जमाअ़त तैयार की जाए अस्हाबे सुफ़्फ़ा की सूरत में जब येह जमाअ़त तैयार हो गई तो येह अपने इल्मो फ़ज़्ल की वज्ह से क़ुर्रा केहलाते थे ।[4]

मुख़्तलिफ़ ब्रान्चिज़ का क़ियाम : तालीम आ़म करने के लिए मुख़्तलिफ़ ब्रान्चिज़ भी क़ाइम की गई जिन में से चन्द मुन्दरजए ज़ैल हैं ।

रेहाइशी क़ियाम गाह : हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ग़ज़्वए बद्र के बाद हिजरत कर के मदीना ए तैयबा आए और दारुल क़ुर्रा में ठेहरे ।[5]

जामेअ़ मस्जिद बसरा : हज़रते सैयदना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बसरा की मस्जिद को सरगर्मियों का मर्कज़ बनाया और अपने वक़्त का एक बड़ा हिस्सा इल्मी मजालिस के लिए ख़ास कर दिया था, सिर्फ़ इसी पर इक्तेफ़ा ना किया बल्कि कोई लम्हा ऐसा ना गुज़रता था जिसे आप तालीम, तदरीस और लोगों को तब्लीग़ करने में इस्तेमाल ना करते हों चुनान्चे, सियरे आलामुन्नबला में आप की तदरीसे क़ुरआन का ज़िक्र है कि नमाज़े फ़ज्र का जब सलाम फेरते तो लोगों की तरफ़ मुंह कर लेते और उन्हें क़ुरआने पाक पढ़ने का तरीक़ा बताते ।[6]

जामेअ़ मस्जिद दिमश्क़ : हज़रते सैयदना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जामेअ़ मस्जिद दिमश्क़ में बहुत ही वसीअ़ इल्मी हल्क़ा लगाते थे जिस में कमो बेश एक हज़ार से कुछ ज़ाइद अफ़राद शरीक होते थे ।[7]

मुख़्तलिफ़ असातेज़ा का तक़र्रुर : जब कोई शख़्स हिजरत कर के प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर होता तो आप उस को क़ुरआने मजीद की तालीम के लिए सहाबा ए किराम में से किसी के सिपुर्द कर देते ।(8) हज़रते उबादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मस्जिदे नबवी से मुत्तसिल चबूतरे पर अहले सुफ़्फ़ा को क़ुरआने मजीद की तालीम देते थे ।(9) हज़रते मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को मक्का ए मुकर्रमा वालों की तरफ़ भेजा ताकि उन को क़ुरआने पाक सिखाएं और याद करवाएं ।(10)

बेहतरीन असातेज़ा का इन्तेख़ाब : हज़रते इब्ने सालबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अर्ज़ किया : मुझे किसी बेहतरीन उस्ताद साहिब के हवाले फ़रमाएं तो आप ने मुझे हज़रते अबू उबैदा बिन जर्राह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के सिपुर्द किया फिर इरशाद फ़रमाया कि मैं ने तुझे ऐसे मर्द के हवाले किया है जो तुझे बेहतरीन तालीम देगा और अदब सिखाएगा ।(11)

मुदर्रिसीन की हौसला अफ़्ज़ाई : हज़रते उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अजनाद के उमरा को ख़त लिखा कि क़ुरआने मजीद के क़ारियों को मेरे पास भेजो ताकि मैं उन की हौसला अफ़ज़ाई के तौर पर उन्हें कुछ अता करूं और उन्हें दीगर मुख़्तलिफ़ अलाक़ों में क़ुरआने पाक की तालीम आम करने के लिए भेजूं ।(12)

एक शख़्स की मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारियां : हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को यमन के अलाक़े अल जुन्द का क़ाज़ी मुक़र्रर फ़रमाया ताकि वोह लोगों को क़ुरआने मजीद और इस्लामी अहकामात की तालीम दें, उन के मुक़द्दमात का फ़ैसला करें और यमन में हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ से सदक़ात की वुसूलयाबी पर मुक़र्रर आमिलों से सदक़ात वुसूल करें ।(13)

निसाबे तालीम का इन्तेख़ाब : तालीम के बेहतरीन होने के लिए निसाबे तालीम का बेहतरीन होना ज़रूरी है ताकि मालूम हो कि कौन कौन से उलूमो फ़ुनून हमारे निसाब का हिस्सा होंगे और कौन से लोग उन से मुस्तफ़ीद होंगे और कैसे होंगे इन तमाम का इन्तेख़ाब करना ज़रूरी है ।

निसाबे तालीम : हज़रते अम्र बिन हज़्म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नजरान वालों के पास भेजा ताकि वोह लोगों को दीन सिखाएं क़ुरआने मजीद की तालीम दें और उन से सदक़ात वुसूल करें, फ़राइज़, सुनन, सदक़ात और ख़ून बहा के अहकाम से मुतअल्लिक़ उन्हें एक मक्तूब भी अता फ़रमाया ।(14) इस्लाम और इस की तालीमात के आठ हिस्से हैं : 1 इस्लाम 2 नमाज़ 3 ज़कात 4 रमज़ान के रोज़े 5 हज्जे बैतुल्लाह 6 जंग 7 नेकी का हुक्म देना और 8 बुराई से मन्अ करना ।(15)

इशाअते इल्म के लिए मुख़्तलिफ़ अलाक़ों का इन्तेख़ाब : तालीम को आम करने के लिए अलाक़ों का जाइज़ा लेना भी ज़रूरी है ताकि जहां तालीम का फ़ुक़दान हो या कमी हो तो वहां बेहतरीन इन्तेज़ाम किए जाएं और इन की ज़रूरत को पूरा किया जाए बल्कि अलाक़े वाले भी अपनी ज़रूरियात के पेशे नज़र मुतालबा कर सकते हैं ।

अलाक़े का चुनाव : हुज़ूर नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते मुस्अब बिन उमैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को उक़्बा वालों के साथ रवाना फ़रमाया ताकि लोगों को क़ुरआने मजीद की तालीम दें और दीने इस्लाम की तालीमात सिखाएं ।(16)

बक़िय्या अगले माह के शुमारे में

---

(1) بخاری، 2/462، حدیث: 3461 (2) بخاری، 3/141، حدیث: 4406 (3) معجم کبیر، 1/306، حدیث: 908 ملخصاً (4) مسلم، ص812، حدیث: 4917 ماخوذاً (5) الاستیعاب، 3/119 ملخصاً (6) سیر اعلام النبلاء، 4/50 ملخصاً (7) غایۃ النھایۃ فی طبقات القراء، 1/535، رقم: 2480 ماخوذاً (8) مسند احمد، 8/415، حدیث: 22830 (9) مصنف ابن ابی شیبہ، 11/30، حدیث: 21237 ملخصاً (10) التبیان فی علوم القرآن، ص51 (11) معجم کبیر، 1/157، حدیث: 368 (12) کنز العمال، جزء2، 1/124، حدیث: 4016 مختصراً (13) الاستیعاب، 3/460 (14) الاستیعاب، 3/257 (15) شعب الایمان، 6/94، حدیث: 7585 (16) سیرۃ النبویۃ لابن ہشام، ص172 ملخصاً۔

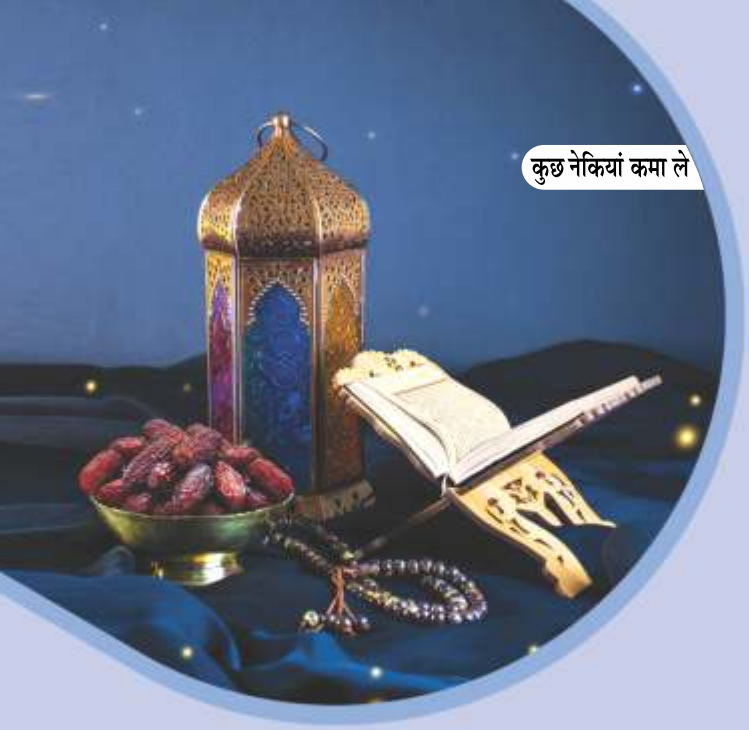

शबे बराअत में अल्लाह वालों के मामूलात

शाबानुल मुअ़ज़्ज़म इस्लामी साल का आठवां महीना है। इस की 15 वीं रात यानी शबे बराअत बड़ी शान वाली है। इस रात में अल्लाह पाक की रेह़मतों और बरकतों का नुज़ूल होता है। इस रात ख़ास तौ़र पर अल्लाह पाक की बारगाह में अपनी दुन्या ओ आख़ेरत की भलाई की दुआ़ मांगनी चाहिए क्यूंकि इस रात दुआ़एं क़बूल होती हैं जैसा कि हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पांच रातों के बारे में फ़रमाया कि इन में दुआ़ रद नहीं की जाती, इन में से एक शाबान की पन्दरहवीं रात (यानी शबे बराअत) है।[1]

अह़ादीसे मुबारका, अक़्वाले सह़ाबा और फ़रामीने बुज़ुर्गाने दीन में इस रात के बहुत फ़ज़ाइल बयान हुवे हैं, नीज़ रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और बुज़ुर्गाने दीन ने इस रात को इबादत में गुज़ारा और इसी की तरग़ीब दी। आइए चन्द रिवायात मुलाह़ज़ा कीजिए :

भलाइयों के दरवाज़े खुलने की रात

नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चार रातों में भलाइयों के दरवाज़े खुलने की बिशारत अ़त़ा फ़रमाई है, जिन में से एक शाबान की पन्दरहवीं रात है, नीज़ इस रात में मरने वालों के नाम, लोगों का रिज़्क़ और ह़ज करने वालों के नाम लिखे जाते हैं।[2]

शबे बराअत में हुज़ूर के त़वील सज्दे

शबे बराअत में हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सज्दे किस क़दर त़वील हुवा करते थे इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाइए कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक रात नमाज़ अदा करने के लिए खड़े हुवे और इतना त़वील सज्दा किया कि मुझे येह गुमान हुवा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़ क़ब्ज़ कर ली गई है। जब मैं ने येह देखा तो खड़ी हुई और आप के अंगूठे को हिलाया तो अंगूठे में ह़रकत पैदा हुई, मैं वापस चली गई फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सज्दे से सरे मुबारक उठाया और नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे तो इरशाद फ़रमाया : ऐ आइशा ! क्या तुम्हारा येह गुमान था कि नबी तुम्हारे साथ बे वफ़ाई करेगा ? मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! ख़ुदा की क़सम ऐसा नहीं मगर आप के त़वील सज्दे से मुझे येह गुमान हुवा था कि कहीं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़ तो नहीं क़ब्ज़ कर ली गई ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम जानती हो कि येह कौन सी रात है ? मैं ने अ़र्ज़ की : अल्लाह और उस का रसूल ज़ियादा जानते हैं। फ़रमाया : येह निस्फ़ शाबान की रात है इस रात अल्लाह पाक अपने बन्दों पर नज़रे रेह़मत फ़रमाता है तो बख़्शिश मांगने वालों को बख़्श देता है और रेह़म त़लब करने वालों पर रेह़म फ़रमाता है और बुग़्ज़ रखने वालों को उन की ह़ालत पर छोड़ देता है।[3]

शबे बराअत में क़ब्रस्तान जाना

ऐसा भी हुवा कि उम्मत के लिए फ़िक्रमन्द रेहने वाले हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शबे बराअत में क़ब्रस्तान तशरीफ़ ले गए और वहां जा कर अपने रब से अहले कुबूर के लिए दुआएं मांगीं जैसा कि ह़ज़रते सैयदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने हुज़ूर नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पन्दरह शाबान की रात जन्नतुल बक़ीअ में इस ह़ाल में पाया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुसलमान मर्दों, औरतों और शहीदों के लिए दुआए मग़फ़ेरत फ़रमा रहे थे।[4]

लेहाज़ा हमें चाहिए कि रेह़मतो मग़फ़ेरत वाली इस मुबारक रात को शब बेदारी करते हुवे इबादात और ज़िक्रो दुआ में गुज़ारें और अपनी मग़फ़ेरत की दुआ के साथ साथ क़ब्रस्तान जा कर मर्ह़ूम मुसलमानों के लिए भी दुआ ए मग़फ़ेरत करें।

सरदारे उम्मत इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه शबे बराअत कैसे गुज़ारते ?

ह़ज़रते सैयदना त़ाऊस यमानी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सैयदना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से पन्दरह शाबानुल मुअ़ज़्ज़म की रात (शबे बराअत में) इबादत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : मैं इस रात के तीन ह़िस्से करता हूं। एक तिहाई ह़िस्से में अपने नानाजान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ता हूं, एक तिहाई ह़िस्से में अल्लाह करीम की बारगाह में तौबा ओ इस्तिग़फ़ार करता हूं और आख़री तिहाई ह़िस्से में अल्लाह पाक के फ़रमान पर अ़मल करते हुवे रुकूअ़ व सुजूद करता हूं। ह़ज़रते सैयदना त़ाऊस यमानी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : ऐसा करने वाले के लिए क्या सवाब है ? ह़ज़रते सैयदना ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने अपने वालिद (ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) से सुना है कि नबी ए करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो निस्फ़ शाबान की रात को ज़िन्दा करेगा (यानी इस रात में इबादत करेगा) वोह मुक़र्रबीन में लिखा जाएगा।[5]

शबे बराअत का एहतेमाम फ़रमाने वाले

ह़ज़रते सैयदना ख़ालिद बिन मअ़दान, ह़ज़रते सैयदना लुक़्मान बिन आ़मिर और दीगर बुज़ुर्गाने दीन رحمۃُ اللّٰہِ علیہم शाबानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात अच्छा लिबास पेहनते, ख़ुश्बू लगाते, सुर्मा लगाते और इस रात मस्जिद में जम्अ़ हो कर इबादत किया करते थे। ह़ज़रते सैयदना इस्ह़ाक़ बिन राहूवैय رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी इसी बात की ताईद करते हैं और इस रात मस्जिदों में इकठ्ठे हो कर नफ़्ली इबादत करने से मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "येह कोई बिदअ़त नहीं है।" उन से येह बात ह़ज़रते सैयदना ह़र्ब किरमानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने नक़्ल फ़रमाई है।[6]

अहले मक्का के मामूलात

तीसरी सदी हिजरी के बुज़ुर्ग अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ मक्की फ़ाकिही رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब शबे बराअत आती तो अहले मक्का मस्जिदे ह़राम शरीफ़ में आ जाते और नमाज़ अदा करते, त़वाफ़ करते और सारी रात जाग कर सुब्ह़ तक इबादत और तिलावते कुरआन में मश्ग़ूल रेहते, उन में बाज़ लोग 100 रक्अ़त (नफ़्ल नमाज़) इस त़रह़ अदा करते कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातेह़ा के बाद दस मरतबा सूरए इख़्लास पढ़ते नीज़ इस रात ज़मज़म शरीफ़ पीते, इस से ग़ुस्ल करते और इसे अपने मरीज़ों के लिए मेह़फ़ूज़ कर लेते और इन आमाल के ज़रीए इस रात की बरकतें समेटते थे।[7]

---

(1) جامع صغیر، ص241، حدیث:3952 مختصراً ابن عساکر، 10/408 (2) در منثور، الدخان، تحت الآیۃ:1-5، 7/402 (3) شعب الایمان، 3/382، حدیث:3835
(4) شعب الایمان، 3/384، حدیث:3837 ماخوذاً (5) القول البدیع، ص396
(6) ماذا فی شعبان، ص75 (7) اخبار مکۃ للفاکہی، جزء:3، 2/84۔

अह़कामे तिजारत

1 शादी पर बेचने के लिए ख़रीदे गए प्लॉट भी माले तिजारत हैं

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि एक शख़्स ने चन्द प्लॉट इस निय्यत से ख़रीदे हैं कि बच्चे बड़े होंगे तो येह प्लॉट को फ़रोख़्त कर के बच्चों की शादी करेगा, क्या इन प्लॉटों पर ज़कात बनेगी ? अगर बनेगी तो कितनी ज़कात देनी होगी ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में बच्चों की शादी वग़ैरा के मवाक़ेअ़ पर बेचने की निय्यत से ख़रीदे गए प्लॉट भी माले तिजारत हैं क्यूंकि बेचने की निय्यत के साथ ख़रीदे गए हैं । लेहाज़ा साहिबे निसाब होने की सूरत में निसाब पर साल मुकम्मल होने वाले दिन दीगर अमवाले ज़कात के साथ उन प्लॉटों की साल मुकम्मल होने वाले दिन मार्केट वेल्यू का चालीसवां हिस्सा यानी ढाई फ़ीसद ज़कात में देना ज़रूरी है ।

दुर्रे मुख़्तार में है : (وما اشتراه لها) ای للتجارة (كان لها) لمقارنة النية لعقد التجارة यानी जो चीज़ तिजारत के लिए ख़रीदी जाए तो अ़क़्दे तिजारत की निय्यत मिली होने की वज्ह से वोह चीज़ तिजारत की बन जाती है ।

(درمختار، 3/272)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 दरज़ी का इस्तिसनाअ़ के तौ़र पर सूट बना कर देना

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि आ़म तौ़र पर दरज़ी सिर्फ़ सिलाई करते हैं और इसी की उजरत लेते हैं जबकि बाज़ दरज़ी सिलाई करने के साथ साथ कपड़ा भी अपनी दुकान पर रखते हैं, दरज़ी कस्टमर को कपड़ा दिखाते हैं जिस कस्टमर को कपड़ा पसन्द आ जाए और वोह सिलाई भी उन्ही से करवाना चाहे तो ख़ुसूसी रिआ़यत देने के लिए दरज़ी येह ऑप्शन देते हैं कि आप कपड़ा थान से ना कटवाएं बल्कि हमें इसी कपड़े से सूट बनाने का ऑर्डर दे दें हम आप को आप की पसन्द के मुताबिक़ तैयार कर के दे देंगे कपड़े समेत मुकम्मल जोड़े के रेट येह होंगे । क्या शरई एतेबार से दरज़ी और कस्टमर की येह डील दुरुस्त है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : आ़म तौ़र पर सिलाई करवाने वाला शख़्स ख़ुद ही दरज़ी को कपड़ा ला कर देता है और दरज़ी सी कर देता और अपनी उजरत वुसूल करता है । हां, अगर कोई सवाल में ज़िक्र कर्दा तफ़्सील के मुताबिक़ अ़क़्द करना चाहे तो येह अ़क़्द बैए इस्तिसनाअ़ के तौ़र पर दुरुस्त हो सकता है क्यूंकि बैए इस्तिसनाअ़ में प्रोडक्ट बनाने की ज़िम्मेदारी और इस प्रोडक्ट में लगने वाली अश्या सानेअ़

की जानिब से होती हैं लेहाज़ा जोड़ा बनने में कपड़ा कैसा लगेगा, सिलाई किस अन्दाज़ की होगी, डीज़ाइन कैसा बनेगा और दीगर वोह उमूर जो फ़रीक़ैन के लिए तनाज़ोअ़ का बाइ़स बन सकते हैं इन सब को और मुकम्मल जोड़े की क़ीमत को वाज़ेह़ तौ़र पर बयान कर दिया जाए तो येह अ़क़्द बैए इस्तिसनाअ़ के तौ़र पर दुरुस्त है।

दुररुल हुक्काम शर्हे मुजल्लतुल अह़काम में है :

أن يكون العمل والعين من الصانع وإلا فإذا كانت العين من المستصنع فهو عقد إجارة مثال: إذا قاول شخص خياطا على صنع جبة، وقماشها وكل لوازمها من الخياط فيكون قد استصنعه تلك الجبة وذلك هو الذي يدعى بالاستصناع۔ أما لو كان القماش من المستصنع وقاوله على صنعها فقط فيكون قد استأجره والعقد حينئذ عقد إجارة لا عقد استصناع

यानी अ़मल और अश्या सानेअ़ की जानिब से हों तो (येह अ़क़्दे इस्तिसनाअ़ है) और अगर ऐन मुस्तसनेअ़ की जानिब से हो तो येह अ़क़्द इजारा है। मिसाल : एक शख़्स ने दरज़ी से जुब्बा सीने पर मुआ़हदा किया जिस में कपड़ा और तमाम लवाज़ेमात दरज़ी की जानिब से होंगे तो येह उस जुब्बे पर इस्तिसनाअ़ है। बहर ह़ाल अगर कपड़ा मुस्तसनेअ़ की जानिब से हो, और मुआ़हदा फ़क़त इस के सिलाई करने पर हो तो येह इजारा है इस्तिसनाअ़ नहीं है।

(درر الحكام شرح مجلة الاحكام، 1/115)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 क़िस्तों पर प्लॉट ख़रीदने में किन बातों का ख़याल रखा जाए ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि क्या क़िस्तों पर प्लॉट ख़रीद सकते हैं ? और क्या क़िस्त लेट होने पर जुर्माने की शर्त लगाई जा सकती है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : क़िश्तों पर प्लॉट ख़रीदना और बेचना जाइज़ है जबकि प्लॉट की मुतअ़य्यन क़ीमत और क़ीमत की अदाएगी की मुद्दत बयान कर दी जाए नीज़ ख़रीदो फ़रोख़्त के क़वाइदो ज़वाबित़ के ख़िलाफ़ कोई ऐसी बात ना पाई जाए जो सौदे को नाजाइज़ करती हो। येह बात तो त़ै है कि उसी प्लॉट को ख़रीदना बेचना जाइज़ होगा जो मौजूद हो और ऐसी पोज़ीशन में हो कि ख़रीदार को खड़ा कर के दिखाया जा सके कि येह आप का प्लॉट है, मह़ज़ फ़ाइल ना हो।

उ़मूमन क़िस्तों पर प्लॉट बेचने वाले प्लॉट की क़ीमत और इस की अदाएगी का शिड्यूल चार्ट की सूरत में जारी करते हैं जिस में डाउन पेमेन्ट और माहाना क़िस्तों वग़ैरा की अदाएगी की मुकम्मल तफ़्सील दर्ज होती है येह एक अच्छा त़रीक़ा ए कार है कि इस से क़ीमत और उस की अदाएगी की मुद्दत में इबहाम बाक़ी नहीं रेहता।

हां अगर प्लॉट की क़ीमत और इस की अदाएगी की मुद्दत को मुतअ़य्यन करने के बजाए क़ीमत के तअ़ल्लुक़ से मुख़्तलिफ़ पेकेजिज़ बयान किए और किसी भी पेकेज को फ़ाइनल किए बग़ैर सौदा किया तो ऐसा सौदा करना जाइज़ नहीं। मसलन एक साल में अगर मुकम्मल क़िस्तें अदा करोगे तो इतनी क़ीमत होगी, दो साल में अगर मुकम्मल क़िस्तें अदा करोगे तो इतनी क़ीमत होगी, तीन साल में अगर मुकम्मल क़िस्तें अदा करोगे तो इतनी क़ीमत होगी वग़ैरा ज़ालिक, क़ीमत की अदाएगी में जितनी ताख़ीर करोगे उसी ताख़ीर वाले पेकेज के ह़िसाब से क़ीमत देनी होगी। इस त़रह़ सौदा करना, जाइज़ नहीं है कि इस सौदे में ना तो प्लॉट की क़ीमत मुतअ़य्यन है और ना ही क़ीमत की अदाएगी की मुद्दत मुतअ़य्यन है जबकि दुरुस्त सौदा होने के लिए ज़रूरी है कि प्लॉट की क़ीमत और इस की अदाएगी की मुद्दत मुतअ़य्यन हो। इस डील के शरअ़न दुरुस्त होने के लिए येह भी ज़रूरी है कि डील में क़िस्त की ताख़ीर से अदाएगी पर माली जुर्माने की शर्त ना हो क्यूंकि क़िस्त लेट अदा करने की वज्ह से माली जुर्माना लेना सूद है जो कि ह़राम है।

वाज़ेह़ रहे कि प्लॉट की क़ीमत या इस की अदाएगी की मुद्दत मुतअ़य्यन किए बग़ैर या माली जुर्माने की शर्त के साथ डील फ़ाइनल करना नाजाइज़ो गुनाह है जिसे ख़त्म कर के नए सिरे से अ़क़्द करना लाज़िम है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

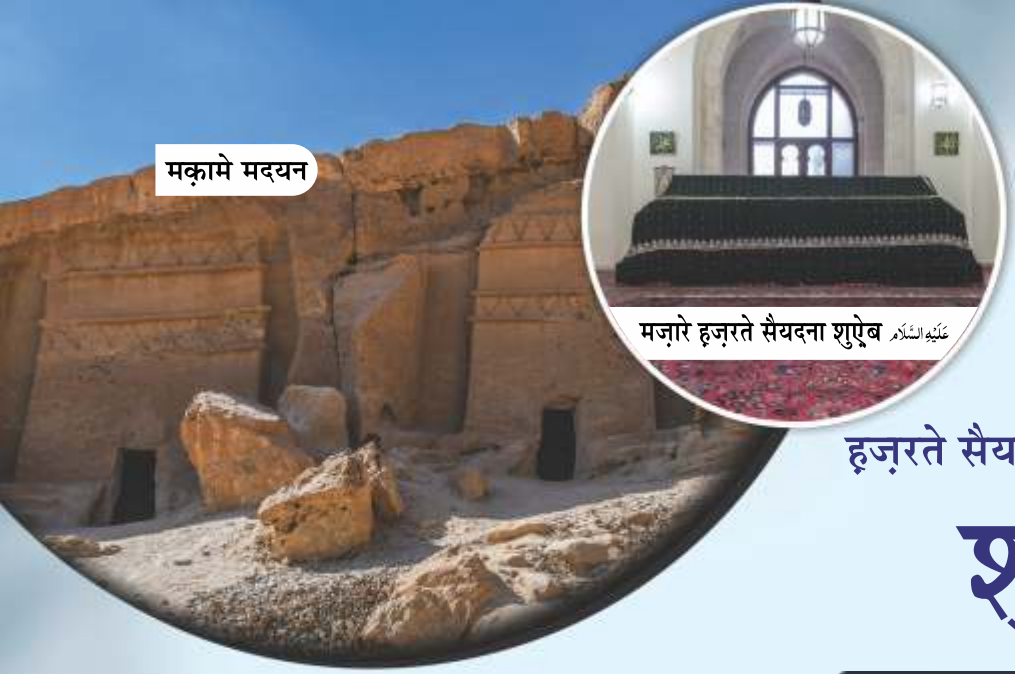

मज़ारे हज़रते सैयदना शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام

(क़िस्त : 2)

हज़रते सैयदना शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام

पेहली क़िस्त में हज़रते सैयदना शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام का कुछ मुबारक तज़केरा गुज़रा, आइए ! अब इन के हालाते ज़िन्दगी कुछ तफ़्सील से पढ़िए :

बचपन आप عَلَيْهِ السَّلَام के वालिद साहिब का शुमार मदयन के इबादत गुज़ारों और उ़लमा में होता था, इन की शादी क़ौमे अ़मालक़ा की एक नेक ख़ातून से हुई जिन से हज़रते शुऐ़ब की पैदाइश हुई, हज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام निहायत हसीनो जमील थे, अल्लाह करीम ने आप को बहुत फ़ेहमो फ़िरासत और इल्म की दौलत से माला माल फ़रमाया था, आप बहुत कम गुफ़्तगू करते थे जबकि ग़ौरो फ़िक्र में ज़ियादा मसरूफ़ रेहते थे ।

वालिद साहिब बरकत की दुआ़ करते वालिद साहिब जब अपने कमज़ोर बदन पर ग़ौर करते तो अल्लाह करीम से यूं दुआ़ करते : ऐ अल्लाह ! तूने सर ज़मीने मदयन में क़बाइल और छोटी जमाअ़तों की तादाद बढ़ाई है, तू मेरी इस छोटी जमाअ़त (यानी मेरे इस बेटे) में बरकत अ़ता फ़रमा, फिर एक रात ख़्वाब में देखा कि (कोई केह रहा था) अल्लाह ने तुम्हारी छोटी जमाअ़त (यानी बेटे शुऐ़ब) में बरकत रख दी है और इसे अहले मदयन का नबी बनाया है ।

शुऐ़ब नाम का माना अ़रबी में छोटी जमाअ़त को "**शुऐ़ब**" केहते हैं इसी वज्ह से आप को "**शुऐ़ब**" कहा जाने लगा ।[1]

इबादतो रियाज़त वालिद साहिब के इन्तेक़ाल के बाद आप इन के क़ाइम मक़ाम हुवे और इबादतो रियाज़त में मसरूफ़ हो गए और फिर अहले ज़माना पर ज़ोहदो तक़्वा में फ़ौक़िय्यत पा गए ।[2]

बकरियां चराते थे आप को अपने वालिद साहिब की त़रफ़ से विरासत में बकरियों का रेवड़ मिला था जिन से आप को ख़ूब मनाफ़ेअ़ और फ़वाइद मिलते थे[3] आप अपनी बकरियां खुद चराया करते थे ।[4]

शेहरे मदयन वाले अहले मदयन का पेशा तिजारत था, येह लोग गन्दुम और जव और दीगर अजनास की तिजारत किया करते थे ।[5] इन के पास दो त़रह़ के तराज़ू और बट्टे होते थे अपने लिए कुछ ख़रीदते तो वोह ऐसे तराज़ू और बट्टे इस्तेमाल करते जो पूरे होते और जब कोई चीज़ बेचते तो नाक़िस तराज़ू और बट्टे इस्तेमाल करते इस त़रह़ येह लोगों को धोका देते थे, हज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام उन के ही दरमियान पल बढ़ कर जवान हुवे लेकिन इन बेकार चीज़ों से दूर रेहते थे ।[6]

मन्सबे रिसालत एक मरतबा आप अपने घर के दरवाज़े के पास ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल थे कि एक मुसाफ़िर आदमी आया और केहने लगा : येह क़ौम लोगों पर ज़ुल्म करती है मैं ने इन से 100 दीनार का सामान ख़रीदा लेकिन इन्हों ने 100 दीनार भी लिए और ऊपर मज़ीद रक़म भी ली फिर मैं ने बाद में उस सामान का वज़्न

किया तो वोह 80 दीनार का सामान था, आप ने उस शख़्स से फ़रमाया : शायद उन से ग़लती हो गई हो दोबारा उन के पास चले जाओ, उस ने कहा : मैं उन के पास गया था उन्हों ने मुझे मारा और गालियां भी दीं और केहने लगे : हमारे शेहर में हमारा येही त़रीक़ा है, फिर वोह आदमी ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام से गुज़ारिश करने लगा कि आप उन के ख़िलाफ़ मेरा साथ दें, ह़ज़रते शुऐ़ब उसे साथ ले कर बाज़ार पहुंचे और लोगों से पूछा तो वोह केहने लगे : हमारे शेहर में हमारे बाप दादा का येही त़रीक़ा रहा है, आप ने फ़रमाया : येह बाप दादा का त़रीक़ा नहीं है, फिर आप ने क़ौम को इस ह़रकत पर मलामत की लेकिन उन्हों ने उस शख़्स का बक़िय्या सामान ना दिया और उस आदमी को इतना मारा कि वोह लहू लुहान हो गया, येह सब देख कर ह़ज़रते शुऐ़ब वापस अपने घर लौट आए।[7] उस वक़्त ह़ज़रते जिब्रील आए और ख़बर दी कि अल्लाह करीम ने आप को अहले मदयन और ऐका वालों की त़रफ़ रसूल बना कर भेजा है और हुक्म दिया है कि उन्हें अल्लाह की इबादत और फ़रमां बरदारी की त़रफ़ बुलाएं और लोगों की चीज़ों में नाप तोल में कमी करने से मन्अ़ करें।[8]

क़ौम की नाफ़रमानी ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام उन्हें नाप तोल में कमी से मन्अ़ करते और अल्लाह पर ईमान लाने के बारे में इरशाद फ़रमाते तो वोह लोग ईमान ना लाते और रास्ते में बैठ जाते और आने जाने वालों को केहते थे : शुऐ़ब (مَعَاذَاللّٰه) झूटे हैं वोह तुम को तुम्हारे दीन से दूर कर देंगे।[9]

क़ौम को बार बार समझाते रहे जब आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें यूं समझाया : ऐ मेरी क़ौम ! अल्लाह की इबादत करो उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से रौशन दलील आ गई तो नाप और तोल पूरा पूरा करो और लोगों को उन की चीज़ें कम कर के ना दो और ज़मीन में उस की इस्लाह़ के बाद फ़साद ना फैलाओ। येह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम ईमान लाओ।[10] क़ौम के मुतकब्बिर सरदार बोले : ऐ शुऐ़ब, क़सम है कि हम तुम्हें और तुम्हारे साथ वाले मुसलमानों को अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन में आ जाओ।[11] ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी क़ौम का जवाब सुन कर उन से फ़रमाया : क्या हम तुम्हारे दीन में आएं अगर्चे हम उस से बेज़ार हों ? इस पर उन्हों ने कहा : हां फिर भी तुम हमारे दीन में आ जाओ, तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : जब अल्लाह ने तुम्हारे इस बात़िल दीन से हमें बचाया हुवा है और तुम्हारे बात़िल दीन की क़बाह़त और इस के फ़साद का इल्म दे कर मुझे शुरूअ़ ही से कुफ़्र से दूर रखा और मेरे साथियों को कुफ़्र से निकाल कर ईमान की तौफ़ीक़ दे दी है तो अगर इस के बाद भी हम तुम्हारे दीन में आएं तो फिर बेशक ज़रूर हम अल्लाह पर झूट बांधने वालों में से होंगे और हम में किसी का काम नहीं कि तुम्हारे दीन में आए मगर येह कि हमारा रब अल्लाह किसी को गुमराह करना चाहे तो कुछ भी हो सकता है।[12]

अ़ज़ाब से डराया आप ने अपनी क़ौम को इस त़रह़ भी समझाया : ऐ मेरी क़ौम ! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं और नाप और तोल में कमी ना करो। बेशक मैं तुम्हें ख़ुशह़ाल देख रहा हूं और बेशक मुझे तुम पर घेर लेने वाले दिन के अ़ज़ाब का डर है।[13] और ऐ मेरी क़ौम ! इन्साफ़ के साथ नाप और तोल पूरा करो और लोगों को उन की चीज़ें घटा कर ना दो और ज़मीन में फ़साद ना फैलाते फिरो।[14] अल्लाह का दिया हुवा जो बच जाए वोह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम्हें यक़ीन हो और मैं तुम पर कोई निगेहबान नहीं।[15]

बक़िय्या अगले माह के शुमारे में

(1) نہایۃ الارب، 13/145 (2) نہایۃ الارب، 13/145 (3) نہایۃ الارب، 13/145 (4) المنتظم فی تاریخ الملوک والامم، 1/326 (5) نہایۃ الارب، 13/145 (6) نہایۃ الارب، 13/145 (7) نہایۃ الارب، 13/145 (8) نہایۃ الارب، 13/146 (9) تفسیر طبری، 5/544، الاعراف:86 (10) پ8، الاعراف:85 (11) پ9، الاعراف،88 (12) صراط الجنان، 3/376 بتغیر (13) پ12، ھود:84 (14) پ12، ھود:85 (15) پ12، ھود:86۔

रौशन सितारे

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ़

जंगे उहुद में रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़ख़्मी हो गए थे, पानी से अपने चेहरए मुबारका को धो रहे थे कि एक सह़ाबी ए रसूल ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : येह किस ने किया है ? हुज़ूरे अक़्दस ने इरशाद फ़रमाया : उ़त्बा बिन अबी वक़्क़ास ने, अ़र्ज़ की : पहाड़ पर से एक आवाज़ सुनी थी कि मुह़म्मदे अ़रबी को शहीद कर दिया गया है, मेरी तो जान ही निकल गई थी इस लिए यहां आ गया, उ़त्बा किस त़रफ़ है ? रसूले करीम ने एक जानिब इशारा फ़रमा दिया, वोह सह़ाबी ए रसूल उस त़रफ़ गए और उसे वासिले जहन्नम कर दिया, फिर उस का सर, सामान और घोड़ा ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गए, नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह सामान अपने उसी जां निसार सह़ाबी को अ़त़ा फ़रमा दिया और दो मरतबा यूं दुआ़ दी : अल्लाह तुझ से राज़ी हो ।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जंगे उहुद में रसूलुल्लाह की ख़ात़िर सर धड़ की बाज़ी लगाने और दुआ़ए रसूल पाने वाले येह सह़ाबी सफ़ीरे मुस्त़फ़ा ह़ज़रते ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे ।[2]

हुल्या और ज़रीअ़ए मआ़श आप का बदन ख़ूब सूरत था, दाढ़ी मुबारक घनी ना थी, क़द क़दरे छोटा, हाथों की उंगलियां सख़्त और मोटी थीं । आप एक ताजिर थे और ग़ल्ला बेचा करते थे ।[3]

फ़ज़ाइलो मनाक़िब आप का शुमार तीर अन्दाज़ सह़ाबा में होता है आप ग़ज़्वए बद्र, उहुद, ख़न्दक़ और दीगर तमाम ग़ज़्वात में रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ साथ रहे ।[4] एक मौक़ेअ़ पर नबी ए करीम ने आप को एक कुंवां खोदने का हुक्म इरशाद फ़रमाया ।[5] रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़म्मे सलमा से अपने निकाह़ का पैग़ाम आप के ज़रीए़ भिजवाया ।[6]

बादशाहे मिस्र का दरबार सिने 6 हिजरी माहे ज़ीक़ादा में हुज़ूर नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीने में वापस हुवे[7] और कई सलात़ीन और सरदारों के नाम ख़त़ लिख कर उन्हें दीने इस्लाम क़बूल करने की दावत दी, एक ख़त़ शाहे मिस्र के नाम लिखा फिर उस पर अपनी मोहर मुबारक लगाई और इरशाद फ़रमाया : तुम में से कौन है जो मेरे इस ख़त़ को मिस्र के बादशाह के पास ले जाए इस का बदला अल्लाह अ़त़ा करेगा, येह सुनते ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आगे बढ़े और यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : या रसूलल्लाह ! मैं जाऊंगा, इरशाद फ़रमाया : ऐ ह़ात़िब ! अल्लाह तुझे बरकत दे, ह़ज़रते ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ़ फ़रमाते हैं : मैं जब बादशाह के दरबार में पहुंचा तो वोह जवाहिरात से मुरस्सअ़ एक गुम्बद में बैठा हुवा था जिस के सुतूनों पर याक़ूत चमक रहे थे, दरबान ने कहा : ऐ अ़रबी भाई ! आप का ख़त़ कहां है ? मैं ने ख़त़ निकाला तो बादशाह ने अपना हाथ बढ़ा कर मेरे हाथ से ख़त़ ले लिया फिर उसे चूमा और दोनों आंखों पर रख लिया और केहने लगा : मरह़बा ! नबी ए अ़रबी का ख़त़ ! फिर वज़ीर ने ख़त़ पढ़ना शुरूअ़ किया, तो बादशाह केहने लगा : बुलन्द आवाज़ से पढ़ो,

येह ख़त मुअ़ज़्ज़ज़ ज़ाते करीम की जानिब से आया है, वज़ीर ने शुरूअ़ से आख़िर तक ख़त पढ़ कर सुना दिया, फिर बादशाह ने अपने ख़ादिमे ख़ास से कहा : मैं ने तुम्हारे पास कुछ सामान रखवाया था उसे ले कर आओ, ख़ादिम सामान ले आया तो बादशाह ने उसे खोल कर उस में से एक उ़म्दा कपड़ा निकाला, उस पर तमाम अम्बिया ए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ख़ातमुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के औसाफ़े मुबारका लिखे थे, बादशाह ने मुझ से कहा : अपने आक़ा के औसाफ़ यूं बयान करो कि मैं उन को देख रहा हूं, मैं ने कहा : किस में ताक़त है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आज़ाए मुबारका में से किसी उ़ज़्व के औसाफ़ बयान कर सके ? तो उस ने कहा : कुछ औसाफ़ बयान करना ज़रूरी हैं । चुनान्चे, मैं खड़े हो कर नबी ए मोहतरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के औसाफ़े मुबारका बयान करने लगा : मेरे आक़ा बे इन्तेहा ख़ूब सूरत हैं, क़दो क़ामत दरमियाना है सर मुबारक क़दरे बड़ा, दोनों कन्धों के दरमियान उभरा हुवा तिल (यानी मोहरे ख़त्मे नबुव्वत) है, नाक मुबारक ऊंची, पेशानी कुशादा, रुख़्सार मुबारक नर्म मुलाइम, होंट बारीक, दांत चमकते हुवे, आंखें ख़ूब सियाह, भंवें मिली हुईं, सीना कुशादा, पेट मुबारक जैसे लिपटा हुवा नक़्शो निगार वाला कपड़ा, जब खुली जगह तशरीफ़ लाते हैं तो चौधवीं के चांद की त़रह़ चमकते हैं आ़जिज़ी इख़्तियार करने वाले, दियानतदार और पाक दामन हैं, बात के सच्चे हैं, ज़बान फ़सीह़ और नसब सहीह़ है अख़्लाक़ ह़सीन हैं । जैसे जैसे मैं ह़ुल्या ए मुबारका बयान कर रहा था, वैसे वैसे बादशाह अपने पास कपड़े में देख रहा था, जब मैं ख़ामोश हुवा तो वोह केहने लगा : ऐ अ़रबी ! तुम ने सच कहा औसाफ़ इसी त़रह़ लिखे हैं । फिर बादशाहे मिस्र खाना खाने के दौरान मुझ से आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दात, रेहन सेहन खाने पीने और इस्तेमाल की चीज़ों के बारे में मुख़्तलिफ़ सवालात करता रहा और मैं उन सवालात के जवाबात देता रहा ।[8] बादशाह की त़रफ़ से एक सवाल येह भी हुवा था : नबी ए अ़रबी को क़ौम ने जब शेहर से निकाला तो उन्हों ने क़ौम के ख़िलाफ़ दुआ क्यूं नहीं की ? आप ने फ़रमाया : क्या तुम लोग इस बात की गवाही नहीं देते कि ह़ज़रते ईसा عَلَیۡہِ السَّلَام अल्लाह के नबी हैं, उस ने कहा : क्यूं नहीं ! आप ने फ़रमाया : जब उन की क़ौम ने उन्हें पकड़ कर सूली पर लटकाना चाहा तो उन्हों ने अपनी क़ौम की हलाकत की दुआ क्यूं नहीं की यहां तक कि अल्लाह ने उन्हें (ज़िन्दा) उठा लिया, येह सुन कर बादशाह केहने लगा : तुम दानिश्मन्द हो और दानिश्मन्द की त़रफ़ से आए हो ।[9]

मिस्र से रवानगी ह़ज़रते ह़ातिब बिन अबी बल्तआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ वहां 5 दिन रहे फिर बादशाह ने आप को नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिए एक ख़त और कुछ तह़ाइफ़ दे कर रुख़्सत किया जिन में एक हज़ार मिस्काल सोना, उ़म्दा और मुलायम कपड़े, दुलदुल (नामी) ख़च्चर, याफ़ूर (नामी) ह़िमार, एक ग़ुलाम और दो बान्दियां बहेनें (ह़ज़रते मारिया क़िब्ति़या और ह़ज़रते सीरीन) भी थीं,[10] एक क़ौल के मुत़ाबिक़ आप ने तीनों पर इस्लाम पेश किया तो दोनों बहेनें रास्ते में ही मुसलमान हो गईं ।[11]

अपनी चीज़ की क़ीमत ना बढ़ाई एक मरतबा आप बाज़ार में दो बड़े टोकरों में किश्मिश बेच रहे थे कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का वहां से गुज़र हुवा, ह़ज़रते उ़मर ने क़ीमत मालूम की । आप ने क़ीमत बयान की तो फ़ारूक़े आज़म ने इरशाद फ़रमाया : मुझे ख़बर मिली है कि ताइफ़ से एक क़ाफ़िला क़िश्मिश वग़ैरा ले कर वापस आ रहा है आप के (कम) भाव देखेंगे तो उसी भाव पर अपना सामान बेचना पड़ेगा या तो आप भाव बढ़ा दें या फिर अपनी क़िश्मिश अपने घर ले जाएं और जैसे चाहे बेचें । फिर जब ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ घर तशरीफ़ लाए तो अपने नफ़्स का मुह़ासबा फ़रमाया । फिर आप के घर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : मैं ने आप से जो कहा था वोह ना तो कोई पक्की बात थी और ना मेरा फ़ैसला था, वोह सिर्फ़ एक मश्वरा था जो शेहर वालों के लिए फ़ाइदेमन्द था, आप जहां चाहें जिस भाव में चाहें, अपने किश्मिश बेचें ।[12]

विसाल आप ने बक़िय्या ज़िन्दगी के अय्याम मदीने में ही गुज़ारे और आख़िरे कार ब उ़म्र 65 साल सिने 30 हिजरी में वफ़ात पाई, जनाज़ा ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने पढ़ाया, तरके में 4 हज़ार दीनार व दिरहम और एक घर छोड़ा ।[13]

---

(1)مستدرک،4/353(2)التراتیب الاداریہ،2/44(3)مستدرک، 4/352
(4)طبقات ابن سعد، 3/84(5)مغازی للواقدی،ص425(6)مسلم، ص356، حدیث:2126(7)طبقات ابن سعد،1/200(8)فتوح الشام،2/35تا39ملخصاً
(9)المنتظم،5/10(10)حضرت ماریہ قبطی رضی اللہ عنہا سے پیارے آقا صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم کے بیٹے حضرت ابراہیم کی ولادت ہوئی تھی۔(11)طبقات ابن سعد، 8/170،171-1/200(12)سنن کبری للبیہقی،6/48، حدیث:11146
(13)طبقات ابن سعد،3/84تا85ملخصاً۔

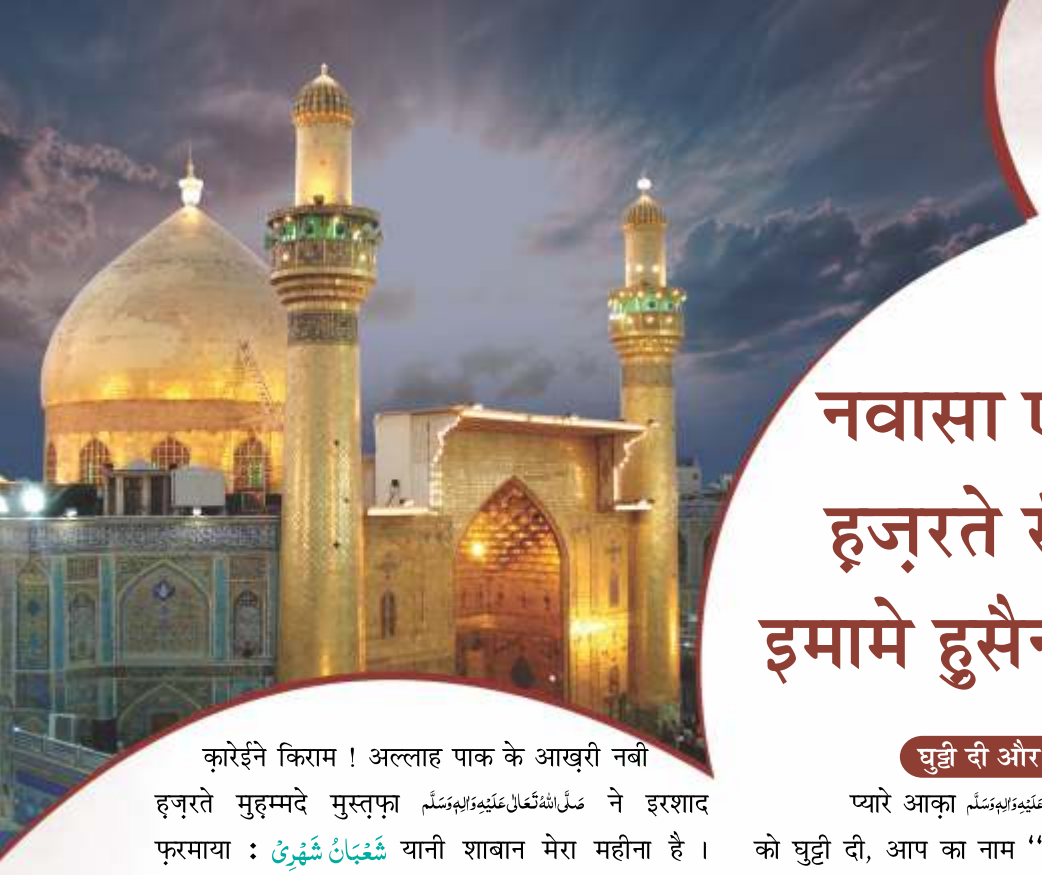

नवासा ए रसूल ह़ज़रते सैयदना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

क़ारेईने किराम ! अल्लाह पाक के आख़री नबी ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : شَعْبَانُ شَهْرِیْ यानी शाबान मेरा महीना है । (جامع صغیر، ص301، حدیث:4889) शाबानुल मुअ़ज़्ज़म के मुबारक महीने को जहां नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत ह़ासिल है वहीं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नवासे ह़ज़रते सैयदना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से भी निस्बत ह़ासिल है कि इस महीने में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत हुई, आइए ! इस मुनासेबत से इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बचपन के बारे में पढ़ कर अपने दिलों को मह़ब्बते सह़ाबा ओ अहले बैत से रौशन करते हैं :

मुख़्तसर तआ़रुफ़

आप ह़ज़रते फ़ात़िमा व अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के बेटे, ह़ज़रते इमामे ह़सन के भाई और हुज़ूरे अनवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नवासे हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत 5 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 4 हिजरी को मदीना ए मुनव्वरा में हुई ।[1]

बादे विलादत करम नवाज़ी

ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि जब इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा हुवे तो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप के कान में अज़ान दी ।[2]

घुट्टी दी और नाम रखा

प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को घुट्टी दी, आप का नाम "हुसैन" रखा और आप को अपना बेटा फ़रमाया ।[3]

अ़क़ीक़ा फ़रमाया

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो दुम्बों के ज़रीए आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अ़क़ीक़ा फ़रमाया और ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को आप का सर मूंडाने और सर के बालों के बराबर चांदी सदक़ा करने का हुक्म दिया ।[4]

कन्धे पर सवार फ़रमाया

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते इमामे ह़सन और ह़ज़रते इमामे हुसैन के साथ घर से बाहर निकले, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक कन्धे पर ह़ज़रते इमामे ह़सन को और दूसरे कन्धे पर इमामे हुसैन को सवार फ़रमाया हुवा था, रेह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कभी इमामे ह़सन का बोसा लेते तो कभी इमामे हुसैन का बोसा लेते यहां तक कि हमारे पास तशरीफ़ ले आए ।[5]

हुज़ूर की शफ़्क़तो मह़ब्बत

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ इ़शा की नमाज़ पढ़

रहे थे, जब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सज्दे में गए तो इमामे ह़सन और इमामे हुसैन आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक पीठ पर चढ़ गए, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सज्दे से सर मुबारक उठाते हुवे इन दोनों को अपने हाथ से आहिस्ता से उतार दिया, जब आप ने दोबारा सज्दा किया तो इन दोनों ने फिर इसी त़रह़ किया यहां तक कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पूरी अदा फ़रमा ली और इन दोनों को अपनी रानों पर बिठा लिया, मैं हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आया और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मैं इन दोनों को इन की वालिदा के पास छोड़ आऊं ? आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नहीं । जब एक बिजली सी चमकी तो आप ने इन दोनों से फ़रमाया कि अपनी मां के पास चले जाओ, तो रौशनी उस वक़्त तक ठेहरी रही जब तक इमामे ह़सन और इमामे हुसैन घर में दाख़िल ना हो गए ।[6]

फ़ज़ाइलो मनाक़िब

प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी गोद में बिठाया, सूंघा, अपने सीने से लगाया, अपनी मुबारक चादर में लिया, आप को जन्नती जवानों का सरदार और दुन्या में मेरा फूल फ़रमाया ।[7]

❁ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : हुसैन मुझ से है और मैं हुसैन से हूं, अल्लाह पाक उस से मह़ब्बत फ़रमाता है जो हुसैन से मह़ब्बत करे ।[8] ❁ रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के अ़र्ज़ करने पर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी विरासत से शुजाअ़त और सख़ावत अ़त़ा फ़रमाई ।[9] ❁ नबी ए करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अल्लाह पाक की बारगाह में अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह ! मैं इस (यानी इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ) से मह़ब्बत करता हूं तू भी इस से मह़ब्बत फ़रमा और जो इस से मह़ब्बत करे इस से मह़ब्बत फ़रमा ।[10]

जो बात काम की ना हो उसे छोड़ दो

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से कई अह़ादीसे मुबारका भी मरवी हैं ।[11] चुनान्चे, एक रिवायत में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इन्सान के इस्लाम की ख़ूबी में से येह है कि फ़ुज़ूल व बेकार बातें छोड़ दे ।[12]

शहादत

रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तक़रीबन 6 साल 6 माह के थे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने 56 साल 5 माह की उ़म्र में 10 मुह़र्रमुल ह़राम 61 हिजरी को जामे शहादत नोश फ़रमाया ।[13]

अल्लाह पाक की इन पर रेह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) معجم الصحابہ للبغوی، 2/14 (2) معجم کبیر، 1/313، حدیث:926 (3) مسند بزار، 2/315، حدیث:743- مستدرک، 4/154، 155، حدیث: 4826، 4829 (4) نسائی، ص688، حدیث:4225- الطبقات الکبیر لابن سعد، 6/355 (5) مستدرک، 4/156، حدیث:4830 (6) مسند احمد، 3/592، حدیث:10664- مستدرک، 4/158، حدیث:4835 (7) مسند احمد، 10/184، حدیث:26602- ترمذی، 5/426، 427، 428، 433، حدیث:3793، 3795، 3797، 3812 (8) ترمذی، 5/429، حدیث:3800 (9) معجم کبیر، 22/423، حدیث:1041 (10) ترمذی، 5/427، حدیث: 3794 (11) اصابہ فی تمییز الصحابہ، 2/68 (12) مسند احمد، 1/429، حدیث:1737 (13) مستدرک، 4/172، سوانح کربلا، ص170۔

इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत के बारे में मज़ीद जानने के लिए मक्तबतुल मदीना का 41 सफ़ह़ात का रिसाला **"इमामे हुसैन की करामात"** पढ़िए ।

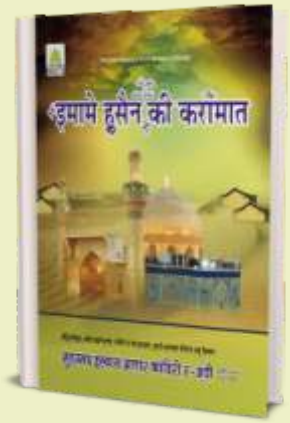

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه
शाने इमामे आज़म

हुज़ूर सरवरे काइनात, मुहम्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

لَوْ كَانَ الْعِلْمُ بِالثُّرَيَّا لَتَنَاوَلَهُ اُنَاسٌ مِّنْ اَبْنَاءِ فَارِس

यानी इ़ल्म अगर सुरय्या (सितारे) पर मुअ़ल्लक़ होता तो औलादे फ़ारस से कुछ लोग उसे वहां से भी ले आते ।[1]

अ़ज़ीम मोहद्दिस इमाम इब्ने ह़जर मक्की رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस ह़दीसे पाक से इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ाते बा बरकत मुराद है। इस में बिल्कुल शक नहीं है, क्यूंकि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ज़माने में अहले फ़ारस में से कोई शख़्स इ़ल्म में आप के रुत्बे को ना पहुंचा, बल्कि आप के शागिर्दों के मर्तबे तक भी रसाई ना हुई और इस में सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का खुला मोजिज़ा भी है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर दी, जो होने वाला था बता दिया।[2]

करोड़ों ह़नफ़ियों के अ़ज़ीम पेश्वा, सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, इमामे आज़म, फ़क़ीहे अफ़्ख़म ह़ज़रते सैयदना इमाम अबू ह़नीफ़ा नोमान बिन साबित رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का नामे नामी नोमान, वालिदे गिरामी का नाम साबित और कुन्यत अबू ह़नीफ़ा है। तेह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه 70 हिजरी में इराक़ के मश्हूर शेहर कूफ़े में पैदा हुवे और 80 साल की उ़म्र में 2 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 150 हिजरी में वफ़ात पाई।[3]

इमामे आज़म का इ़ल्मी मक़ाम

इमामे आज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने ज़माने के अहले इ़ल्म से बहुत मुम्ताज़ और आला मक़ाम पर फ़ाइज़ थे क्यूंकि आप के पास सह़ाबा ए किराम और ताबेईन का इ़ल्म जम्अ़ था। आप कूफ़ा में रेहते थे और कूफ़ा शेहर को अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने आबाद फ़रमाया था।[4] कूफ़ा शेहर में 1000 से ज़ाइद सह़ाबा ए किराम आबाद थे जिन में 24 बद्री सह़ाबा ए किराम भी थे।[5] इमाम मसरूक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि तमाम सह़ाबा का इ़ल्म इन छे हस्तियों के पास जम्अ़ है : उ़मर फ़ारूक़े आज़म, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, उबय्य बिन कअ़ब, ज़ैद बिन साबित, अबू दर्दा और अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم। फिर इन छे का इ़ल्म दो के पास जम्अ़ है : ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा और ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا।[6] मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपने दौरे ख़िलाफ़त में कूफ़ा में जल्वागर हो गए और ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को सैयदना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने कूफ़ा भेज दिया और वहां के रेहने वालों के नाम ख़त़ लिखा जिस में येह भी फ़रमाया कि मैं ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द को बैतुल माल का निगरान बनाया है, पस इन से इ़ल्म ह़ासिल करो और इन की इत़ाअ़त करो, मैं ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द को तुम पर ईसार किया है।[7] अल ग़रज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्म के अमीन सह़ाबा ए किराम का इ़ल्म जिन दो हस्तियों के पास जम्अ़ था वोह दोनों हस्तियां ही कूफ़ा में जल्वा फ़रमा थीं और इन दोनों हस्तियों से सिल्सिला दर सिल्सिला इ़ल्म का सब से ज़ियादा फ़ैज़ पाने वाले वोह अ़ज़ीम नुफ़ूस हैं कि जो इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा के असातेज़ा हैं।

आप ने 4000 से ज़ाइद उ़लमा ओ मोहद्दिसीने किराम से इ़ल्मे दीन ह़ासिल किया।[8]

इमामे आज़म की शानो अ़ज़मत और अकाबिरे उम्मत

इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा की इल्मी जलालतो शान के पेशे नज़र वक़्त के जलीलुल क़द्र फ़ुक़हा व मोह़द्दिसीन और अस्ह़ाबे जर्ह़ो तादील ने आप की सक़ाहत, फ़क़ाहत, इल्मी जलालत को बयान किया और आप को मुन्फ़रिद व यक्ता और बे मिसाल क़रार दिया है।

ह़ज़रते सैयदना सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के भाई के इन्तेक़ाल पर जब इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उन के घर ताज़िय्यत के लिए तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी आप की ताज़ीम में खड़े हो गए, आप को गले लगाया फिर अपनी जगह बिठाया और ख़ुद उन के सामने बैठ गए। एक शख़्स ने आप के इस फ़ेल पर एतेराज़ किया और लोगों के जाने के बाद सैयदना सुफ़्यान सौरी से कहा कि आप ने अबू ह़नीफ़ा के लिए अदब में इतना मुबालग़ा क्यूं किया ? ह़ज़रते सैयदना सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : उस शख़्स का एक अ़ज़ीम इल्मी मक़ाम है, पस अगर मैं उन के इल्म की वज्ह से ना खड़ा होता तो उन की उ़म्र की वज्ह से खड़ा होता, और अगर उन की उ़म्र की वज्ह से खड़ा ना होता तो उन की फ़क़ाहत की ताज़ीम में खड़ा होता और अगर उन की फ़क़ाहत के लिए ना खड़ा होता तो उन के तक़्वा ओ परहेज़गारी के बाइ़स खड़ा होता।[9]

अ़ज़ीम मोह़द्दिस व फ़क़ीह ह़ज़रते सैयदना ख़लफ़ बिन अय्यूब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह से इल्म रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंचा, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सह़ाबा को मिला, सह़ाबा ए किराम से ताबेईन को और ताबेईन से इल्म सैयदना इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को मिला, पस जो चाहे (अल्लाह की इस तक़्सीम पर) राज़ी रहे और जो चाहे बिगड़ता फिरे।[10]

फ़क़ीह का क्या मक़ाम है ?

अ़ज़ीम मोह़द्दिस इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़क़ीह के लिए चार लाख अह़ादीस याद होने का फ़रमाया है[11] जबकि कसीर मोह़द्दिसीन ने इमामे आज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की फ़क़ीहाना जलालत की तारीफ़ की और आप को ज़माने भर का सब से बड़ा और अ़ज़ीम फ़क़ीह फ़रमाया है।

इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा ताबेई हैं

फ़िक़्ह के अइम्मा ए अरबआ़ में से सिर्फ़ आप ही को ताबेई होने का शरफ़ ह़ासिल है। ताबेई वोह अ़ज़ीम ख़ुश नसीब होता है "जिस ने ईमान की ह़ालत में किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात की हो और ईमान पर उस का ख़ातिमा हुवा हो।"[12] आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सह़ाबा ए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की एक जमाअ़त से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल फ़रमाया, जिन में से ह़ज़रते सैयदना अनस बिन मालिक, ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा, ह़ज़रते सैयदना सहल बिन सअ़द साअ़दी और ह़ज़रते सैयदना अबुल तुफ़ैल आ़मिर बिन वासिला عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का नाम सरे फ़ेहरिस्त है।[13]

सह़ाबी ए रसूल की ज़ियारत और समाए ह़दीस

इमामे आज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने वालिदे गिरामी (ह़ज़रते साबित رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) के साथ ह़ज किया, इस दौरान मैं ने एक शैख़ को देखा जिन के इर्द गिर्द लोग जम्अ़ थे, मैं ने वालिदे मोह़तरम से अ़र्ज़ की : येह हस्ती कौन है ? उन्हों ने बताया : येह सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिस बिन जज़्अ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। मैं ने अ़र्ज़ की : इन के पास कौन सी चीज़ है ? फ़रमाया : इन के पास नबी ए अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी हुई अह़ादीसे मुबारका हैं। येह सुन कर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आगे बढ़े और सह़ाबी ए रसूल से बराहे रास्त एक ह़दीसे पाक सुनने का शरफ़ ह़ासिल किया।[14]

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा पर करोड़ों रेह़मतें हों और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1) مسند احمد، 3/154، حدیث: 7955 (2) الخیرات الحسان، ص24 (3) نزہۃ القاری، 1/169، 219 (4) تاریخ طبری، 2/477 (5) فتح المغیث للسخاوی، 4/111 (6) التقریب للنووی، ص93 (7) مستدرک للحاکم، 3/438، حدیث: 5663 (8) تہذیب الاسماء، 2/501، المناقب للکردری، 1/37تا53، عقود الجمان، ص187 (9) تاریخ بغداد، 15/459 (10) فتاویٰ شامی، 1/59 (11) اعلام الموقعین، 6/115 (12) الخیرات الحسان، ص33 (13) شرح مسند ابی حنیفہ لملا علی قاری، ص581 ملخصًا (14) اخبار ابی حنیفۃ واصحابہ، ص18۔

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए

मज़ारे मुबारक शैख़ुल क़ुरआन अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़फ़ूर

मज़ारे मुबारक शाह बुलावल क़ादरी

शाबानुल मुअ़ज़्ज़म इस्लामी साल का आठवां महीना है । इस में जिन सह़ाबा ए किराम, औलिया ए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमा ए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, उन में से मज़ीद 12 का तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

सह़ाबा ए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان (1) सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते सैयदना अबू मूसा सुहैल बिन बैज़ा फ़िहरी क़ुरशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ क़दीमुल इस्लाम सह़ाबी हैं, आप ने ह़बशा फिर मदीना ए मुनव्वरा हिजरत फ़रमाई, ग़ज़्वा ए बद्र समेत तमाम ग़ज़्वात में ह़िस्सा लिया, चालीस साल की उ़म्र में ग़ज़्वा ए तबूक से वापसी पर विसाल फ़रमाया, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े जनाज़ा अदा फ़रमाई, ग़ज़्वा ए तबूक से वापसी रमज़ान 9 हिजरी को हुई ।[1]

(2) ह़ज़रते अबू ज़ैद क़ैस बिन सकन अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ क़बीला ए ख़ज़रज की शाख़ बनू अ़दी बिन नज्जार से तअ़ल्लुक़ रखते थे, अपनी कुन्यत अबू ज़ैद से मारूफ़ हुवे । आप का शुमार उन ख़ुश नसीब सह़ाबा ए किराम में होता है जिन्हों ने नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में क़ुरआने पाक जम्अ़ करने की सआ़दत ह़ासिल की । आप ग़ज़्वा ए बद्र में भी शरीक थे, आप की शहादत यौमे जिस्र अबी उ़बैद (शाबान 13 हिजरी) को हुई । आप की औलाद ना थी ।[2]

औलिया ए किराम رحمهم الله السّلام (3) ह़ज़रते सैयद अ़ब्दुल वह्हाब ह़सनी यन्बूई رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की विलादत 14 रबीउ़ल अव्वल 557 हिजरी को अस्फ़हान, ईरान में हुई और विसाल मदीना शरीफ़ से जानिबे मग़रिब 225 किलो मीटर पर मौजूद साह़िली शेहर यम्बउ़ल बह़र (Yanbu) में 18 शाबान 699 हिजरी को फ़रमाया और वहीं तदफ़ीन हुई । आप आ़लिमे दीन, शैख़े त़रीक़त और साह़िबे इ़बादतो रियाज़त व मुजाहदा थे, इरशादो तल्क़ीन और दावत व इस्लाह़ में बड़ी हिम्मत से मसरूफ़ रहे, मुर्शिद के विसाल के बाद 80 साल ख़ानक़ाहे क़ादरिय्या को रौनक़ बख़्शी, आप साह़िबे कश्फ़ो करामत वली ए कामिल थे ।[3]

(4) ह़ज़रते सैयदना बुलावल शाह क़ादरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की विलादत 976 हिजरी को सादात घराने में हुई और 28 शाबान 1046 हिजरी को विसाल फ़रमाया ।

आप आ़लिमे दीन, एक मद्रसे के बानी व मुदर्रिस, ह़ज़रते सैयद शम्सुद्दीन क़ादरी के मुरीद व ख़लीफ़ा, साह़िबे करामात वलिय्युल्लाह, कसरत से तिलावते क़ुरआन करने वाले थे ।[4]

(5) सैयदुस्सादात ह़ज़रते सैयद शाह मुस्त़फ़ा क़ादरी बैजापुरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ख़ानदाने ग़ौसुल आज़म के चश्मो चराग़, औलिया ए वक़्त के राहनुमा, मर्जए ख़ासो आ़म और ह़ुस्ने अख़्लाक़ के मालिक थे, हज़ारों लोगों ने आप के फ़ैज़ान से मारेफ़ते इलाही ह़ासिल की, 13 शाबान 1054 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ार बैजापुर, रियासत कर्नाटक, हिन्द में है ।[5] (6) वली इब्ने वली ह़ज़रते

शैख़ बेहराम चिश्ती साबरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की पैदाइश कबीरुल औलिया शैख़ जलालुद्दीन मुहम्मद पानीपती के घर में हुई । आप इ़ल्मे ज़ाहिर और बातिन के जामेअ़, मुस्तजाबुद्दावात और साहिबे करामत थे । वालिद साहिब के हुक्म से दरिया ए जमना के कनारे क़स्बा बेडोली मशरिक़ी पंजाब हिन्द में मुन्तक़िल हो गए और सारी ज़िन्दगी यहीं गुज़ारी, आप ने 27 शाबान 854 हिजरी को विसाल फ़रमाया ।(6) 7 ताजुद्दीन हज़रते अ़ल्लामा हाजी सैयद मुहम्मद शाह जीलानी क़ादरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की विलादत 1252 हिजरी मौज़अ़ पकलाड़ां ज़िल्अ़ रहीमयार ख़ान में हुई और 28 शाबान 1318 हिजरी को वफ़ात पाई, दरगाह लूनी शरीफ़ (तेहसील मुन्दरा, कच्छ, रियासते गुजरात, हिन्द) के पीछे के हुजरे में दरमियानी जालवाला मज़ार आप का है । आप जद्दे अमजद पीराने लूनी शरीफ़, आ़लिमे बा अ़मल, पीरे कामिल और ख़लीफ़ए नक़ीबुल अशरफ़ बग़दाद थे ।(7)

उ़लमा ए इस्लाम رحمهم الله السّلام 8 शैख़ुल इस्लाम हज़रते अबू रजा क़ुतैबा बिन सईद सक़फ़ी बग़लानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की विलादत 149 हिजरी में हुई, आप बनी सक़ीफ़ के ग़ुलाम थे मगर इल्मे दीन के हुसूल और ख़िदमते ह़दीस ने आप को ज़माने का इमाम बना दिया, आप ने कसीर मोहद्दिसीन से अहादीसे मुबारका समाअ़त की जिन में इमाम मालिक, इमाम लैस और हज़रते सुफ़यान बिन उ़यैना رحمۃ اللہ علیہم जैसे अकाबिर मोहद्दिसीन भी शामिल हैं, आप सदूक़ व सिक़ह रावी ए ह़दीस और कसीरुल ह़दीस थे । आप ने हिजाज़े मुक़द्दस, कूफ़ा और बग़दाद वग़ैरा में मस्नदे ह़दीस बिछाई और इमाम बुख़ारी व मुस्लिम जैसे बड़े बड़े मोहद्दिसीन को इल्मे ह़दीस से सैराब फ़रमाया, अल्लाह पाक ने हुस्ने बातिनी के साथ आप को हुस्ने ज़ाहिरी से भी नवाज़ा था, आप का विसाल 2 शाबान 240 हिजरी में हुवा ।(8) 9 रावी ए ह़दीस हज़रते अ़ल्लामा अबू इस्हाक़ इस्माईल बिन मूसा कूफ़ा फ़ज़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कूफ़ा के रेहने वाले थे । शुयूख़े इराक़ से इल्मे ह़दीस ह़ासिल करने के बाद दिमश्क़, शाम तशरीफ़ ले गए, कूफ़ा वापस आ कर मस्नदे तदरीस पर बैठे, इमामे तिर्मिज़ी, इमाम अबू दावूद, इमाम इब्ने माजा क़ज़्वीनी जैसे जलीलुल क़द्र मोहद्दिसीन ने आप से समाअ़ते ह़दीस का शरफ़ पाया, आप सुदूक़े रावी ए ह़दीस हैं, आप का विसाल 4 शाबान 245 हिजरी को हुवा ।(9) 10 हज़रते मौलाना सैयद मुहम्मद चराग़ शाह बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की पैदाइश बूकन तेह़सील व ज़िल्अ़ गुजरात में हुई और शाबान 1304 हिजरी में विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन जाए पैदाइश में हुई । आप तल्मीज़े अ़ल्लामा सदरुद्दीन आज़ुर्दा देहलवी, जैयद आ़लिमे दीन, मस्जिद कबूतरां वाली गुजरात के ख़तीबो इमाम थे ।(10) 11 उस्ताज़ुल उ़लमा हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती ख़लीफ़ा ग़ुलाम मुहम्मद मुहैसर क़ादरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की पैदाइश 1248 हिजरी को एक इल्मी घराने में हुई और 10 शाबान 1358 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ार जाए पैदाइश में है । आप जैयद आ़लिमे दीन, मुदर्रिसे दर्से निज़ामी, मुफ़्ती ए इस्लाम, शैख़े त़रीक़त, वसीअ़ लाइब्रेरी के मालिक और तल्मीज़ व मुरीदो ख़लीफ़ा हज़रते अ़ल्लामा ख़्वाजा ग़ुलाम सिद्दीक़ शहदाद कोटी थे ।(11) 12 शैख़ुल क़ुरआन अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़फ़ूर हज़ारवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की पैदाइश 9 ज़ुल हिज्जा 1329 हिजरी को हुई और आप ने 7 शाबान 1390 हिजरी को विसाल फ़रमाया आप जामेए़ माक़ूलो मन्क़ूल, फ़ाज़िले दारुल उ़लूम मन्ज़रे इस्लाम बरेली, मुरीदो तल्मीज़ क़िब्लए आ़लम पीर महेर अ़ली शाह, ख़लीफ़ा ए हुज्जतुल इस्लाम मुफ़्ती ह़ामिद रज़ा ख़ान, जैयद आ़लिमे दीन, सह़र अंगेज़ ख़त़ीब, शाइ़रो मुदब्बिर, तेह़रीके ख़त्मे नबुव्वत के राहनुमा और अकाबीरीने अहले सुन्नत से थे ।(12)

---

(1)الطبقات الکبریٰ لابن سعد، 3/384-شرح الزرقانی علی المواھب، 11/133 (2)الاستیعاب، 3/353- تاریخ طبری، 3/152(3)تذکرہ مشائخ قادریہ فاضلیہ، ص100، 101(4)انسائیکلوپیڈیا اولیائے کرام، 1/184 تا187(5)تذکرۃ الانساب، ص102(6)انسائیکلوپیڈیا اولیائے کرام، 3/70(7)تذکرۂ ساداتِ لُونی شریف وسوجا شریف، ص258، 259، 273(8)سیر اعلام النبلاء، 9/321 تا327- الاعلام للزرکلی، 5/189(9)سیر اعلام النبلاء، 9/432- بغیۃ الطلب فی تاریخ حلب، 4/1831-کتاب الثقات لابن حبان، 5/63(10)ادیب گوہر افشاں سیّد نور محمد قادری، ص15(11)انوار علمائے اہل سنت، ص584 تا588(12)فیضانِ شیخ القرآن، ص126، 142، 643۔

(क़िस्त : 1)

फ़िलिस्तीन

की तारीख़ी व मज़हबी हैसिय्यत

फ़िलिस्तीन की सर ज़मीन दीनी और तारीख़ी लेहाज़ से बड़ी अहमिय्यत की हामिल है । इस बा बरकत ख़ित्ते में हज़राते अम्बिया ए किराम के मुक़द्दस मज़ारात के साथ साथ दीगर यादगारें भी क़ाइम हैं । हुज़ूर नबी ए अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुन्या में तशरीफ़ आवरी के बाद दौरे फ़ारूके आज़म में 15 हिजरी मुताबिक़ 636 ईसवी को येह अ़लाक़ा मुसलमानों ने फ़त्ह़ किया ।[1] अगर्चे इस की मौजूदा जोग्राफ़ियाई सूरते ह़ाल तब्दील हो चुकी है, इस मज़मून में ज़ियादा तर क़दीम फ़िलिस्तीन के तारीख़ी अह़वाल और बैतुल मुक़द्दस की तारीख़, अहमिय्यत और फ़ज़ाइल बयान किए जाएंगे । एक ज़माना वोह था कि जब लोग ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी के सबब एक जगह से दूसरी जगह हिजरत करते रेहते थे । ऐसी ही अक़्वाम में से कन्आ़नी क़ौम के लोग 2500 क़ब्ले मसीह़ फ़िलिस्तीन में आ कर आबाद हुवे, इन के बाद 2000 क़ब्ले मसीह़ में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام यहां तशरीफ़ लाए । इमाम बैज़ावी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه रिवायत नक़्ल करते हैं कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام और अपनी ज़ौजा ह़ज़रते सारह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के हमराह ह़र्रान की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई, फिर वहां से मुल्के शाम पहुंचे और फ़िलिस्तीन में क़ियाम फ़रमाया ।[2] आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने एक बेटे ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को मक्का ए मुकर्रमा में जबकि दूसरे बेटे ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام को बैतुल मुक़द्दस में आबाद किया, जिन का इन्तेक़ाल वहीं हुवा । इमाम क़ुरतुबी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं कि ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام का विसाल अर्ज़े मुक़द्दस (फ़िलिस्तीन) में हुवा और वोह अपने वालिद ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के पास दफ़्न हुवे ।[3] ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की नस्ल मुबारक से कसरत के साथ ह़ज़राते अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इसी अ़लाक़े में तशरीफ़ लाए, येही वज्ह है कि फ़िलिस्तीन को सर ज़मीने अम्बिया कहा जाता है और मेराज की रात अल्लाह पाक के आख़री नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़िलिस्तीन (मस्जिदे अक़्सा) में तशरीफ़ ला कर इस ख़ित्ते को चार चांद लगा दिए ।

ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के विसाल के बाद जसदे अक़्दस को मिस्र से फ़िलिस्तीन ला कर इन के वालिदे गिरामी ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام के क़रीब दफ़्नाया गया ।[4]

फ़िलिस्तीन के मश्हूर मक़ामात

किसी ख़ित्ताए ज़मीन की शोहरत में वहां के अ़ज़ीम शख़्सिय्यात, यादगार मक़ामात और मुक़द्दस निस्बत वाली जगहों की बुन्यादी हैसिय्यत होती है, सर ज़मीने फ़िलिस्तीन को मुतअ़द्दद अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और इन से निस्बत रखने वाले मुक़द्दस मक़ामात और मुतबर्रक शेहरों की बदौलत बड़ी शोहरत ह़ासिल हुई । यहां चन्द शेहरों और मक़ामात का ज़िक्रे ख़ैर किया जाता है :

1 **अल कुद्स** येह फ़िलिस्तीन का सब से मश्हूर शेहर है, इसे बैतुल मुक़द्दस भी कहा जाता है और यरोशिलम (JERUSALEM) भी । इमाम क़ज़्वीनी ने इस शेहर की बहुत सारी ख़ूबियां बयान की हैं कि येह वोह मश्हूर

शेहर है जिस की बुन्याद ह़ज़राते अम्बिया ए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने रखी, यहां मुस्तक़िल क़ियाम फ़रमाया, यहां वह़ी का नुज़ूल हुवा, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि बैतुल मुक़द्दस को ह़ज़राते अम्बिया ए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बनाया और यहां सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई, इस शेहर में एक बालिश्त जगह ऐसी नहीं जहां किसी नबी ने नमाज़ ना पढ़ी हो या क़ियाम ना फ़रमाया हो। ह़ज़रते सुलैमान عَلَیۡہِ السَّلَام के ज़माने में येह शेहर अपने दौर का ख़ूब सूरत तरीन शेहर था, आप عَلَیۡہِ السَّلَام ने शानदार तामीरात करवाईं, इसी शेहर में मस्जिदे अक़्सा है जिस को अल्लाह पाक ने अ़ज़मतो शराफ़त से नवाज़ा और क़ुब्बतुस्सख़रह है जिस से इस्लामी यादें वाबस्ता हैं। यहां जाबिर बादशाहों ने क़ब्ज़े भी किए और नुक़्सान भी पहुंचाया। ह़ज़रते उ़ज़ैर عَلَیۡہِ السَّلَام का क़ुरआनी वाक़ेआ़ भी इसी अ़लाक़े में पेश आया, यहां का मौसम मोतदल है, इमारतें ख़ूब सूरत तरीन और मस्जिदें इन्तेहाई साफ़ सुथरी हैं, यहां ह़ुज़ूर नबी ए मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बुराक़ बान्धा गया, ह़ज़रते बीबी मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का मेह़राब है जहां उन्हें बे मौसमी फल अ़त़ा होते थे, ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَیۡہِ السَّلَام को यहीं बेटे यानी ह़ज़रते यह़या عَلَیۡہِ السَّلَام की बिशारत दी गई।[5] येही वोह शेहर है जहां मैदाने मेह़शर क़ाइम होगा। ह़ज़रते समूरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से इरशाद फ़रमाया : बैतुल मुक़द्दस में तुम्हारा ह़श्र होगा फिर क़ियामत के दिन तुम्हें जम्अ़ किया जाएगा।[6]

2 अल ख़लील (ह़बरून) फ़िलिस्तीन में अल कुद्स के बाद येह शेहर सब से ज़ियादा मुक़द्दस समझा जाता है क्यूंकि यहां मस्जिदे इब्राहीम अल ख़लील वाक़ेआ़ है जिस में ह़ज़रते इब्राहीम और ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَیۡہِمَا السَّلَام समेत आले इब्राहीम की दीगर मुक़द्दस हस्तियों के मज़ारात मौजूद हैं।[7] यहां पेहले एक ग़ार था जो ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیۡہِ السَّلَام ने 400 मिस्क़ाल सोने में ख़रीदा था, पेहले ह़ज़रते सारह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की यहां तदफ़ीन हुई और बाद में ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡہِ السَّلَام को भी यहीं दफ़्न किया गया।[8]

3 बैते लह़म येह गांव फ़िलिस्तीन का वोह मक़ाम है जहां ह़ज़रते ईसा عَلَیۡہِ السَّلَام की विलादत हुई। मेराज की रात ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیۡہِ السَّلَام ने रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को एक मक़ाम पर उतर कर नमाज़ पढ़ने के लिए अ़र्ज़ की, ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वहां नमाज़ अदा फ़रमाई, ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیۡہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : आप को मालूम है कि आप ने कहां नमाज़ पढ़ी ? आप ने बैते लह़म में नमाज़ पढ़ी जहां ह़ज़रते ईसा عَلَیۡہِ السَّلَام की विलादत हुई थी।[9] ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ लिखते हैं : ह़ज़रते ईसा عَلَیۡہِ السَّلَام की विलादत का वक़्त क़रीब आया और वज़्ए ह़म्ल के आसार ज़ाहिर हुवे तो उस वक़्त ह़ज़रते मरयम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہَا शेहर ईल्या (बैतुल मुक़द्दस) से 6 मील दूर, जंगल में बैते लह़म के मक़ाम पर तशरीफ़ ले गईं।[10] यहां ख़जूर का एक ख़ुश्क दरख़्त मौजूद था जिस के पत्ते, शाख़ें सब झड़ चुके थे और सिर्फ़ तना बाक़ी रेह गया था, ज़माना तेज़ सर्दी का था, ह़ज़रते बीबी मरयम पाक رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہَا दरख़्त की जड़ से टेक लगा कर बैठ गईं और यहीं ह़ज़रते ईसा عَلَیۡہِ السَّلَام की विलादत हुई।[11]

4 ग़ज़्ज़ा येह फ़िलिस्तीन में अस्क़लान के मग़रिबी जानिब एक शेहर है। यही वोह मक़ाम है जहां रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जद्दे अमजद हाशिम बिन अ़ब्दे मनाफ़ का इन्तेक़ाल हुवा और यहीं आप की क़ब्र है।[12] अल्लाह पाक के आख़री नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे दुल्हन क़रार दिया और यहां बसने वाले को बिशारत दी। इरशादे नबवी है :

طُوۡبٰی لِمَنۡ اَسۡکَنَہُ اللّٰہُ تَعَالٰی اِحۡدَی الۡعُرُوۡسَیۡنِ عَسۡقَلَانَ اَوۡ غَزَّۃَ

तर्जमा : शादमानी है उसे जिसे अल्लाह पाक दो दुल्हनों अस्क़लान या ग़ज़्ज़ा में से एक में बसाए।[13] येह शेहर भी दौरे फ़ारूक़े आज़म में ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़त्ह़ किया था, आ़लमे इस्लाम की अ़ज़ीम हस्ती, आइम्मा ए अरबआ़ में से एक ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की विलादत 150 हिजरी को इसी अ़लाक़े में हुई।[14]

---

(1) فیضان فاروق اعظم، 2/810 (2) تفسیر بیضاوی، العنکبوت، تحت الآیۃ: 26، ص399 (3) تفسیر قرطبی، البقرۃ، تحت الآیۃ: 132، 1/104 (4) تفسیر خازن، یوسف، تحت الآیۃ: 100، 3/46 (5) آثار البلاد واخبار العباد، ص159-163 ماخوذاً (6) معجم کبیر، 7/264، حدیث: 7076 (7) تاریخ الاسلام للذہبی، 35/280 (8) قصص الانبیاء لابن کثیر، ص236، 237 (9) سنن کبری للنسائی، ص81، حدیث: 448 (10) نور العرفان، پ16، مریم، تحت الآیۃ: 22، ص802 (11) حاشیہ جمل، پ16، تحت الآیۃ: 23، 5/14 (12) معجم البلدان، 4/202 (13) الفردوس بماثور الخطاب، 2/450، حدیث: 3940- کنز العمال، 12/289، حدیث: 35077 (14) آثار البلاد واخبار العباد، ص227- وفیات الاعیان، 4/23۔

मज़ार हज़रते सैयदना उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(दूसरी और आख़री क़िस्त)

ढाई साल में अ़वामी ख़ुशहा़ली का राज़

ज़ालिमो जाबिर हुक्काम व उ़म्माल की माज़ूली हज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मन्सबे ख़िलाफ़त संभालते ही अपने मा तह़त तमाम हुक्काम व उमरा पर नज़र डाली और उन में से जो ज़ालिमो जाबिर थे उन्हें फ़ौरन ओ़हदे से हटा दिया ह़त्ताकि उमवी ह़ुकूमत में सब से ज़ियादा ज़ालिमो जाबिर ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ के ख़ानदान वाले और उस के मा तह़त ओ़हदे दारों को माज़ूल कर के यमन भेज दिया और वहां के आ़मिल को लिखा : "मैं तुम्हारे पास आले अबी अ़क़ील को भेज रहा हूं, जो अ़रब में बदतरीन ख़ानदान है, उन्हें अपनी ह़ुकूमत में इधर उधर मुन्तशिर कर दो।"[1]

वक़्तन फ़ वक़्तन हुक्काम की तरबियत किसी भी इक़्दाम के देर पा असरात के लिए मुसल्सल तरबियत बेह़द ज़रूरी है, इसी लिए आप ने वक़्तन फ़ वक़्तन हुक्काम को ख़ुतूत़ लिख कर ज़ुल्म व जब्र से दूर रेहने की तरबियत व तल्क़ीन फ़रमाई।[2] एक मरतबा ब ज़रीए़ ख़त़ अपने किसी गवर्नर से फ़रमाया) अगर तुम अ़दलो एह़सान और दुरुस्ती उतनी कर सको कि जितनी सरकशी और जितना ज़ुल्म व जब्र तुम से पेहले वालों ने किया था तो ऐसा ज़रूर करो।[3] इस के इलावा तक़्वा इख़्तियार करने, शरीअ़त की पैरवी करने और लोगों के मुआ़मले में अल्लाह पाक से डरते रेहने की नसीह़तें भी फ़रमाते रेहते।[4]

1 इल्मे दीन की नश्रो इशाअ़त ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने लोगों में शुऊ़र पैदा करने और इल्मे दीन आ़म करने के लिए उस वक़्त मौजूद हुफ़्फ़ाज़, उ़लमा, फ़ुक़हा और वाइ़ज़ीन के लिए बैतुल माल से वज़ाइफ़ मुक़र्रर किए, और उन का ख़र्चा अपने ज़िम्मे ले कर उन्हें क़ुरआनो ह़दीस की तब्लीग़, लोगों की राहनुमाई और इस्लामी तालीमात की नश्रो इशाअ़त के लिए मुक़र्रर फ़रमा दिया। जैसा कि जाफ़र बिन बुरक़ान को ख़त़ के ज़रीए़ हुक्म फ़रमाया कि "अपने अ़लाक़े के फ़ुक़हा व उ़लमा की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करो कि अल्लाह पाक ने आप को जो इल्म अ़ता किया है उसे अपने इज्तेमाआ़त और मसाजिद में फैलाइए।"[5] इस पूरे प्रोजेक्ट का नतीजा येह निकला कि लोग बा शुऊ़र बन गए और झगड़े फ़साद, बुग़्ज़ो अ़दावत, कीना परवरी और आपसी झगड़ों से दूर रेह कर अम्नो सुकून की ज़िन्दगी गुज़ारने लगे।

2 मुख़्तलिफ़ जेहात से आज़ादी जैसे परिन्दे को ऊंची परवाज़ के लिए आज़ाद फ़ज़ा चाहिए ऐसे ही किसी भी क़ौम की तरक़्क़ी व ख़ुशह़ाली के लिए उन्हें आज़ादी दरकार होती है क्यूंकि घुट घुट कर जीने वाली क़ौम की तरक़्क़ी की परवाज़ ऊंची नहीं हो सकती इसी लिए ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने ज़मानए ह़ुकूमत में लोगों पर से हर वोह रुकावट और पाबन्दी ख़त्म कर दी जिस का शरीअ़त ने मुत़ालबा नहीं किया और हर वोह आज़ादी दी जिस की इजाज़त देने से शरीअ़त ने नहीं रोका।

फ़रियाद करने की आज़ादी जिस ह़ुकूमत में दुखयारों की सुनी जाती हो और दुख को सुख से बदलने के लिए बेहतर से बेहतरीन इक़्दामात किए जाते हों वहां रेह़मते इलाही तरक़्क़ी व ख़ुशह़ाली की सूरत में उतरती है। ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आ़म लोगों की ह़ाजतों और ज़रूरतों से वाक़िफ़ रेह कर उन की मुश्केलात और परेशानियों को दूर फ़रमाते। आप ने अपने एक ख़ुत़्बे में इरशाद फ़रमाया : जब भी तुम में से कोई अपनी ह़ाजत ले कर मेरे पास

आता है तो मैं चाहता हूं कि उस की ह़ाजत पूरी कर दूं जितनी मेरी इस्तेत़ाअ़त हो ।[6]

बिज़नस की आज़ादी शरई अह़काम के मुत़ाबिक़ किया जाने वाला **"बिज़नस"** मईशत को मुस्तह़कम करने और रखने के लिए बहुत ज़ियादा अहमिय्यत रखता है, चुनान्चे आप ने हर एक को जाइज़ बिज़नस जाइज़ त़रीक़ों के साथ करने की इजाज़त दी और अपने गवर्नरों को भी येह ताकीद फ़रमाई कि कारोबार और तिजारत के मुआ़मले में ख़ुश्की व समुन्दर कहीं पर भी कोई रुकावट ना खड़ी की जाए और हर एक को उस की मरज़ी के मुत़ाबिक़ बिज़नस और काम काज की इजाज़त दी जाए ।[7] इस का नतीजा येह हुवा कि लोगों की बिज़नस में दिलचस्पी बढ़ने लगी और लोग बग़ैर किसी परेशानी व रुकावट के काम काज में मसरूफ़ हो गए और इस से मईशत बहुत तेज़ी के साथ मुस्तह़कम होने लगी ।

3 बैतुल माल के निज़ाम में बेहतरी ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बैतुल माल की इस्लाह़, ह़िफ़ाज़त और निगरानी का सख़्ती से नोटिस लेते थे, इस में किसी क़िस्म की कोताही बरदाश्त नहीं करते थे और जो उ़म्माल इस में ज़रा भी ग़फ़्लत करते आप उन को फ़ौरन तम्बीह फ़रमाते चुनान्चे एक बार यमन के बैतुल माल से एक दीनार गुम हो गया तो आप ने बैतुल माल के अफ़्सर को लिखा : मैं तुम्हारी दीनदारी और अमानत दारी पर कोई इल्ज़ाम नहीं लगाता, लेकिन तुम्हारी बे परवाई और ग़फ़्लत को जुर्म क़रार देता हूं । मैं मुसलमानों के माल की त़रफ़ से मुद्दई हूं, तुम पर फ़र्ज़ है कि क़सम खाओ ![8]

गवर्नर को गिरफ़्तार कर लिया ख़ुरासान के गवर्नर यज़ीद बिन मोहलब के ज़िम्मे बैतुल माल की एक बड़ी रक़म वाजिबुल अदा थी, ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस को दरबारे ख़िलाफ़त में त़लब कर के उस से रक़म का मुत़ालबा फ़रमाया, उस ने रक़म अदा करने से इन्कार कर दिया । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस से फ़रमाया : "अगर तुम ने रक़म बैतुल माल में जम्अ़ ना करवाई तो तुम्हें क़ैद कर दिया जाएगा, जो रक़म तुम ने दबा रखी है वोह तुम्हें हर ह़ाल में अदा करनी होगी, वोह मुसलमानों का ह़क़ है मैं उसे किसी सूरत नहीं छोड़ सकता ।" चुनान्चे टाल मटोल करने पर यज़ीद बिन मोहलब को जेल ख़ाने भिजवा दिया गया । यज़ीद बिन मोहलब के बेटे मुख़्लद को जब इस की इत्तेलाअ़ मिली कि मेरे वालिद को जेल भिजवा दिया गया है तो वोह अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अपने वालिद की रेहाई का मुत़ालबा किया । ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "मैं जब तक तुम्हारे वालिद से एक एक कोड़ी ना वुसूल कर लूं, तुम्हारे वालिद को नहीं छोड़ूंगा ।"[9]

बैतुल माल से मिलने वाले वज़ाइफ़ में बराबरी आप ने अपनी रिआ़या के दरमियान हर मुआ़मले में मुसावात (बराबरी) की आला मिसाल क़ाइम फ़रमाई, चुनान्चे आप ने मालदारों को पिछली ह़ुकूमतों की त़रफ़ से बैतुल माल से मिलने वाले ख़ुसूसी अलाउन्सिज़ देने से मन्अ़ फ़रमा दिया और बैतुल माल से उन के लिए भी उतना ही ह़िस्सा मुक़र्रर किया जितना ह़िस्सा एक आ़म शेहरी का मुक़र्रर था ह़त्ताकि अपने आप को भी किसी इज़ाफ़ी अलाउन्स का मुस्तह़िक़ ना समझा, और जब उन मालदारों ने आप की बारगाह में आ कर अपने लिए इस के बारे में सवाल किया तो आप ने फ़रमाया : "मेरे पास तो तुम्हारे लिए कोई माल नहीं, और रही बात बैतुल माल की, तो बैतुल माल पर तुम्हारा उतना ही ह़क़ है जितना किसी दूर दराज़ के एक शेहरी का ।"[10]

ज़ुल्म का ख़ातिमा जब ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िलाफ़त में ज़ुल्म का ख़ातिमा हो गया, ग़स्ब शुदा माल वापस मिल गए, नाजाइज़ टेक्स मन्सूख़ कर दिए गए, हर एक के ह़ुक़ूक़ का ख़याल रखा जाने लगा तो लोग ख़ुशह़ाल हो गए । आप ने मुख़्तसर मुद्दत में इस मुआ़शी और इन्तेज़ामी ज़ुल्म के ख़ातिमे के लिए फ़ैसला कुन क़दम उठाए और येह साबित किया कि क़ुरआनो सुन्नत पर इस त़रह़ अ़मल कर के बहुत ही कम अ़र्से में गिरती हुई मईशत को संभाला जा सकता है और ख़ासो आ़म को इस्लामी अह़काम का आ़दी बना कर तरक़्क़ी व ख़ुशह़ाली में आने वाली हर रुकावट को दूर किया जा सकता है, इस के लिए शर्त़ येह है कि पूरे इख़्लास और दियानत दारी के साथ क़ुरआनो सुन्नत की तालीमात पर अ़मल किया जाए ।

---

(1)سیرت عمر بن عبد العزیز لابن جوزی، ص109 ملخصاً (2)سیرت عمر بن عبد العزیز لابن جوزی، ص107 ماخوذاً (3)طبقات کبریٰ، 5/299 (4)سیرت عمر بن عبد العزیز لابن جوزی، ص120 (5)البدایۃ والنہایۃ، 6/347 ماخوذاً۔ حضرت سیدنا عمر بن عبد العزیز کی 425 حکایات، ص472 تا 475 (6)تاریخ طبری، 6/571 (7)سیرت عمر بن عبد العزیز لابن عبد الحکم، ص83 ملخصاً (8)سیرت عمر بن عبد العزیز لابن جوزی، ص104-105 مفہوماً (9)تاریخ طبری، 6/557 (10)سیرت عمر بن عبد العزیز لابن جوزی، ص136 مفہوماً۔

PROCRASTINATION प्रोक्रेस्टीनेशन

प्रोक्रेस्टीनेशन (प्रो-क्रेस-टी-नेशन, procrastination) अंग्रेज़ी ज़बान का बड़ा ही मुश्केल और उ़र्फ़े आ़म में बहुत ही कम इस्तेमाल होने वाला लफ़्ज़ है। जिस त़रह़ इस की अदाएगी ज़बान पर भारी है कुछ ऐसे ही इस का मफ़्हूम भी हमारी त़बीअ़त पर गिरां है। लुग़त में इस का माना ताख़ीर करना है। इस मज़मून के ऐतेबार से procrastination का मत़लब है रोज़ मर्रा के मेह़नत त़लब कामों में ताख़ीर करना। यानी कि सुस्ती और काहिली। अभी नहीं बाद में। आज नहीं कल। अभी तो पूरा हफ़्ता पड़ा है। अभी तो पूरी ज़िन्दगी बाक़ी है। कर लेंगे बाद में।

छोटा हो या बड़ा, ग़रीब हो या अमीर, तालीम का मैदान हो या खेल कूद, लोगों की ख़िदमत हो या इबादते इलाही, मुआ़शरे के ना मालूम अफ़राद से ले कर जानी पहेचानी शख़्सिय्यात तक कमो बेश सब ही सुस्ती का किसी ना किसी ह़द तक शिकार हैं। कोई भी येह दावा नहीं कर सकता कि वोह सुस्ती से बचा हुवा है। सुस्ती दुन्यावी मुआ़मलात में भी हमारा नुक़्सान करती है और इस से हमारी आख़ेरत भी दाव पर लग जाती है। फ़राइज़ो वाजिबात में सुस्ती रब की नाराज़ी का सबब है। नवाफ़िल व मुस्तह़ब्बात में सुस्ती आख़ेरत में आला दरजात से मेह़रूमी का सबब बन सकती है।

सुस्ती की वज्ह से वालिदैन और औलाद का तअ़ल्लुक़ ख़राब हो जाता है। सुस्ती की वज्ह से ज़ौजैन में तल्ख़ कलामी रेहती है। बहेन भाई भी एक दूसरे से नफ़रत करने लगते हैं। सेठ और मुलाज़िम में बात बिगड़ जाती है। अल ग़रज़ सुस्ती का ज़िन्दगी के हर शोबे में एक गेहरा असर है और इस का अन्जाम भयानक है।

सुस्ती एक इख़्तियारी फ़ेल है। यानी हम जान बूझ कर सुस्ती करते हैं। जिस चीज़ का इतना नुक़्सान है फिर भी हम उस से जान क्यूं नहीं छुड़ा पाते ? इस सवाल का जवाब तब तक समझ नहीं आ सकता जब तक हम सुस्ती की नफ़्सिय्यात को नहीं समझ पाते। आप हो सकता है कि ह़ैरान हों कि सुस्ती की क्या नफ़्सिय्यात है ? हर बात में आप खींच तान कर नफ़्सिय्यात को ले आते हैं ? नफ़्स है तो नफ़्सिय्यात भी साथ है। चलें आएं सुस्ती की नफ़्सिय्यात का जाइज़ा लेने की कोशिश करते हैं।

इन्सान की फ़ित़रत में ह़िर्स और लालच का अहम किरदार है। जिन कामों के करने से हमें लुत़्फ़ मिले, लज़्ज़त मिले, ख़ुशी ह़ासिल हो, कोई तोह़फ़ा या इन्आ़म मिले तो हम वोह काम बार बार करने की कोशिश करते हैं। इस काम के लिए जितनी भी मेह़नत करनी पड़े हम करते हैं। मसलन छोटे बच्चे को कहा जाए कि आप "अल्लाह" बोलो तो आप को बिस्किट मिलेगा। तो शायद ही कोई ऐसा बच्चा हो कि जो "अल्लाह" ना बोले। क्यूंकि

बच्चे को मालूम है कि लफ़्ज़ "अल्लाह" बोलने पर मीठी चीज़ यानी बिस्किट मिलेगा और मीठा खाने से लज़्ज़त मिलती है।

अब जिस काम का इन्आ़म जितना जल्दी मिलता हो उतना ही उस काम के करने का इमकान बढ़ जाता है। मसलन जिस बच्चे को वालिदैन अच्छा काम करने पर फ़ौरन इन्आ़म देते हैं तो वोह बच्चा अच्छी आ़दात जल्द सीख जाता है। शायद इसी लिए बाबा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर رحمۃُ اللہِ تعالیٰ علیہ की वालिदा हर नमाज़ से पेहले आप के मुसल्ले के नीचे शकर रख देती थीं जो कि नमाज़ के बाद आप को मिला करती थी। वैसे अल्लाह वालों के अन्दाज़ निराले होते हैं।

अब इस के बर अ़क्स अगर किसी बच्चे को कहा जाए कि आप हर दिन सौ बार "अल्लाह" बोलें और सातवें दिन आप को बिस्किट का पूरा एक पेकेट दिया जाएगा तो क्या ख़याल है कि बच्चा "अल्लाह" बोलने की आ़दत अपनाएगा? बहुत मुश्किल बल्कि आप कहेंगे कि किसी ह़द तक ना मुमकिन है।

लेकिन येह क्या? बात सुस्ती की हो रही है और हमें दर्स काम करने और उस पर इन्आ़म मिलने का दिया जा रहा है? जी हां! क्यूंकि सुस्ती भी एक काम है जिस का इन्आ़म आप को हाथों हाथ मिल रहा है। और येही वज्ह है कि आप सुस्ती को चाहते हुवे भी नहीं छोड़ पा रहे, अरे वोह कैसे जनाब?

वोह ऐसे कि रोज़मर्रा के मेह़नत त़लब काम जिन का इन्आ़म हमें सालों बाद या फिर मरने के बाद मिलना है हम उन कामों को नज़र अन्दाज़ कर रहे हैं। और इन की बजाए वोह लायानी (फ़ालतू) काम कर रहे हैं जिन से हमारे मन को फ़िलफ़ौर तस्कीन या लज़्ज़त मिल रही है। मोबाइल पर घन्टों गुज़र जाते हैं। घन्टों क्या पूरी रात गुज़र जाती है। क्यूंकि इस से हमें एक अ़जीब, पुर लुत़्फ़ तस्कीन मिलती है। और वोह भी फ़ौरन। इस के बर अ़क्स अगर येही रात अल्लाह पाक की इ़बादत में गुज़ारी जाए तो इस का इन्आ़म क्यूंकि हमें नज़र नहीं आता या हमारे नफ़्स के मुत़ाबिक़ फ़ौरन नहीं मिलता लेहाज़ा हम इ़बादत को बजा नहीं लाते।

उम्मीद है कि आप सुस्ती की नफ़्सिय्यात समझ गए होंगे। अगर आप को यहां तक की गुफ़्तगू समझ आ गई है तो मैं यक़ीन के साथ केह सकता हूं कि अगली सत़रों में क्या लिखा जाएगा आप के ज़ेहन में इस का ख़ाका भी बन रहा होगा।

सुस्ती छोड़नी है तो हमें दूर रस (Long term) इन्आ़मात पर फ़ोकस करना होगा। ब हैसिय्यते त़ालिबे इ़ल्म सालों की मेह़नत के बाद मिलने वाली अच्छी नौकरी पर फ़ोकस, ब हैसिय्यते बिज़्नस मैन कई नाकामियों के बाद ह़ासिल होने वाली शानदार कामयाबी पर फ़ोकस और सब से ज़रूरी बात ब हैसिय्यते मुसलमान ज़िन्दगी भर अल्लाह पाक की इत़ाअ़त करने पर आख़ेरत में जन्नत की नेमतों पर फ़ोकस।

तो फिर फ़िलफ़ौर इन्आ़म वाली नफ़्सिय्यात किधर गई? वोह भी साथ ही है वरना नफ़्स को अच्छे कामों का आ़दी बनाना बहुत मुश्किल हो जाएगा। जब नमाज़ पढ़ें तो अपने रब के ह़ुज़ूर सज्दा रेज़ी की लज़्ज़त को मेह़सूस करें। जब तिलावते क़ुरआन करें तो कलामे इलाही की ह़लावत का लुत़्फ़ उठाएं। जब दुरूदे पाक पढ़ें तो ज़ेहन को मिलने वाले सुकून पर फ़ोकस करें।

अल ग़रज़ लायानी (फ़ालतू) कामों के नुक़्सानात पर फ़ोकस कर के अपने मन को उन कामों के छोड़ने पर राज़ी करें। अच्छे और नेक कामों के जल्द या बदेर मिलने वाले इन्आ़मात पर फ़ोकस कर के अपने मन को उन कामों का आ़दी बनाएं। इस के लिए इ़ल्मे दीन सीखना और अच्छी सोह़बत का होना लाज़िम है।

मज़मून मज़ीद त़वील हो सकता था मगर इसी पर इक्तेफ़ा करता हूं। उम्मीद है कि आप को सुस्ती की नफ़्सिय्यात समझ आ गई होगी। आइए मिल कर दुआ़ करते हैं कि अल्लाह पाक हम सब को सुस्ती से नजात अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

नए लिखारी
(New Writers)

हज़रते इद्रीस عَلَيْهِ السَّلَام के औसाफ़ कुरआने मजीद की रौशनी में

रैहान मदनी मुरादाबादी
(मुदर्रिस जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने हसन ख़तीब चिश्ती धोलका अहमदाबाद)

एलाए कलिमतुल हक़ और मख़्लूक़ को हिदायत देने के लिए यके बाद दीगरे अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को मबऊस किया जाता रहा, उन अम्बिया ए किराम में से एक जलीलुल क़द्र नबी हज़रते इद्रीस عَلَيْهِ السَّلَام हैं जिन का अस्ल नाम तो ख़ुनूख़ या अख़नूख़ था मगर आप عَلَيْهِ السَّلَام इलाही सहीफ़ों का बकसरत दर्स दिया करते थे इस लिए आप का लक़ब इद्रीस पड़ गया यानी बहुत ज़ियादा दर्स देने वाला, आप عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام के दादा हैं और हज़रते आदम व शीश عَلَيْهِمَا السَّلَام के बाद आप ही मन्सबे नबुव्वत पर फ़ाइज़ हुवे और आप ही वोह नबी हैं जिन्हों ने दुन्या में सब से पेहले क़लम से लिखा, इस के इलावा और भी बहुत सारे कामों को आप عَلَيْهِ السَّلَام ने ईजाद फ़रमाया।

आप عَلَيْهِ السَّلَام का ज़िक्र कुरआनो अहादीस दोनों में ही मौजूद है और सीरत व तारीख़ की किताबों में भी मुख़्तसर अहवाल मौजूद हैं, आइए कुरआन की रौशनी में आप عَلَيْهِ السَّلَام के कुछ औसाफ़ मुलाहज़ा करते हैं :

1 आप عَلَيْهِ السَّلَام को सिद्दीक़ कहा गया, चुनान्चे इरशादे रब्बे करीम है :

﴿وَ اذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ ۫ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۙ(۵۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और किताब में इद्रीस को याद करो बेशक वोह सिद्दीक़ था ग़ैब की ख़बरें देता। (پ16، مریم:56)

तमाम अम्बिया ए किराम सच्चे और सिद्दीक़ हैं लेकिन यहां हज़रते इद्रीस عَلَيْهِ السَّلَام की सदाक़त व सिद्दीक़ियत को बतौरे ख़ास बयान करने से मालूम होता है कि आप में इस वस्फ़ का ज़ुहूर बहुत नुमायां था।

(सीरतुल अम्बिया, स. 152)

2 आप عَلَيْهِ السَّلَام सब्र करने वाले और कुर्बे इलाही के लाइक़ बन्दों में से थे। जैसा इरशादे रब्बे करीम हुवा : ﴿وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِدْرِيْسَ وَ ذَا الْكِفْلِ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ۚ(۸۵)﴾

وَ اَدْخَلْنٰهُمْ فِیْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ(۸۶)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और इस्माईल और इद्रीस और ज़ुल किफ़्ल को वोह सब सब्र वाले थे । और उन्हें हम ने अपनी रेह़मत में दाख़िल किया बेशक वोह हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में हैं । (پ17، الانبیآء:85،86)

ह़ज़रते इद्रीस عَلَیْہِ السَّلَام इस्तेक़ामत के साथ किताबे इलाही का दर्स देते, इबादते इलाही में मसरूफ़ रेहते और इस राह में आने वाली मशक़्क़तों पर सब्र करते थे इस लिए आप عَلَیْہِ السَّلَام को बत़ौरे ख़ास साबिरीन में शुमार किया गया। (सीरतुल अम्बिया, स. 153)

3 आप عَلَیْہِ السَّلَام उन चार अम्बिया ए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام में से हैं जिन को अभी वादए इलाहिय्या (मौत) नहीं आया है जिस का ज़िक्र अल्लाह पाक ने क़ुरआने पाक में भी किया है। चुनान्चे इरशाद फ़रमाया :

﴿وَ رَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِیًّا(۵۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने उसे बुलन्द मकान पर उठा लिया । (پ16، مریم:57)

बुलन्द मकान पर उठाने के बारे में एक क़ौल येह है कि इस से आप عَلَیْہِ السَّلَام के दरजात व मरातिब की बुलन्दी मुराद है और एक क़ौल येह है कि आप عَلَیْہِ السَّلَام को आस्मान पर उठा लिया गया है और ज़ियादा सह़ीह़ येही दूसरा क़ौल है । (خازن، 3/190، مریم، تحت الآیۃ:57)

आस्मान पर जाने के वाक़िए़ के बारे में आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : आप عَلَیْہِ السَّلَام के वाक़िए़ में उ़लमा को इख़्तेलाफ़ है, इतना तो ईमान है कि आप आस्मान पर तशरीफ़ फ़रमा हैं, और बाज़ रिवायात में येह भी है कि बादे मौत आप आस्मान पर तशरीफ़ ले गए। (मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 485)

मुअ़ज़्ज़ज़ क़ारेईन ह़ज़रात ! किताबे इलाही का दर्स देना अम्बिया ए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام की सुन्नत है कि तमाम मुअ़ज़्ज़ज़ रसूलों ने अपनी किताबों और सह़ीफ़ों का दर्स दिया और रुसुले किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के बाद जिन अम्बिया ए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام को साबेक़ा किताबों की तरवीजो दर्स के लिए भेजा गया वोह भी उन किताबों का दर्स देते रहे । इसी लिए उ़लमा ए दीन वारिसीने अम्बिया हैं क्यूंकि वोह भी किताबुल्लाह को समझते और दूसरों को दर्स देते हैं तो हमें भी चाहिए कि हम किताबुल्लाह को समझें और दूसरों को किताबुल्लाह का दर्स दे कर सुन्नते अम्बिया पर अ़मल करें, अल्लाह पाक अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । आमीन

वालिद की फ़रमां बरदारी अह़ादीस की रौशनी में

मुह़म्मद सरबाज़ चिश्ती
(दर्जए ख़ामेसा जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त्तार नागपुर)

अल्लाह पाक का शुक्र है कि उस ने हमें वालिद जैसी अ़ज़ीम नेमत अ़त़ा की । येह एक ऐसी नेमत है जिस का जितना शुक्र अदा करें उतना कम हैं । मगर अफ़्सोस आज लोगों ने अपने वालिद की अहमिय्यत को भुला दिया और उन की फ़रमां बरदारी करना छोड़ दिया है । आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वालिद की फ़रमां बरदारी ना करने के मुतअ़ल्लिक़ लिखते हैं : बाप की नाफ़रमानी अल्लाह जब्बारो क़ह्हार की नाफ़रमानी है और बाप की नाराज़ी अल्लाह जब्बारो क़ह्हार की नाराज़ी है, आदमी मां-बाप को राज़ी करे तो वोह उस के जन्नत हैं और नाराज़ करे तो वोही उस के दोज़ख़ हैं । जब तक बाप को राज़ी ना करेगा उस का कोई फ़र्ज़, कोई नफ़्ल, कोई अ़मले नेक अस्लन क़बूल ना होगा । अ़ज़ाबे आख़ेरत के इ़लावा दुन्या में ही जीते जी सख़्त बला नाज़िल होगी मरते वक़्त مَعَاذَ اللّٰہ कलिमा नसीब ना होने का ख़ौफ़ है ।

(वालिदैन ज़ौजैन और असातेज़ा के ह़ुक़ूक़, स. 27)

वालिद की फ़रमां बरदारी पर 5 अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा हो :

1 अबू हुरैरा से मरवी है कि ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह की इत़ाअ़त वालिद की इत़ाअ़त और अल्लाह की नाफ़रमानी वालिद की नाफ़रमानी है । (معجم اوسط، 1/614، حدیث:2255)

2 सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रब की रिज़ा वालिद की रिज़ा में और रब की नाराज़ी वालिद की नाराज़ी में है। (ترمذی، 3/360، حدیث:1907)

3 ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वालिदैन के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया : هُمَا جَنَّتُكَ وَنَارُكَ यानी वोह दोनों तेरी जन्नत और दोज़ख़ हैं । (ابن ماجہ، 4/186، حدیث:3662)

4 सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात, सैयदुल मुबल्लिग़ीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

वालिद जन्नत का दरमियानी दरवाज़ा है अगर तू चाहे तो उस को ज़ाएअ़ कर दे और चाहे तो उस की ह़िफ़ाज़त कर।

(ترمذی،3/359،حدیث:1906)

5 एक सह़ाबी नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जंग में शिर्कत की इजाज़त चाही। आप ने उन से दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तुम्हारे मां-बाप ज़िन्दा हैं ? उन्हों ने कहा : जी हां ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि फिर उन्हीं में जंग करो। (यानी उन को ख़ुश रखने की कोशिश करो।) (بخاری،2/310،حدیث:3004)

वालिद की फ़रमां बरदारी पर और भी ह़दीस वारिद हैं और क़ुरआन इस बात पर नातिक़ है कि वालिद की फ़रमां बरदारी की जाए। वालिदैन एक बार ही नसीब होते हैं हमें चाहिए कि हम उन की ख़ूब ख़िदमत करें और उन के हुक्म की बजा आवरी करें वरना उन के विसाल के बाद अफ़्सोस के इ़लावा कुछ हाथ ना आएगा।

नोट : यहां एक मस्अला ज़ेहन नशीन रखें कि वालिदैन की फ़रमां बरदारी ग़ैर शरई कामों में नहीं हो सकती। क्यूंकि आख़री नबी ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

لَا طَاعَةَ فِیْ مَعْصِیَةِ اللّٰہِ، اِنَّمَا الطَّاعَةُ فِی الْمَعْرُوْف

यानी अल्लाह की ना फ़रमानी में किसी की इत़ाअ़त नहीं, इत़ाअ़त सिर्फ़ नेक कामों में है।

(ابو داؤد،3/57،حدیث:2625)

अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ़ है कि हमें अपने वालिद की फ़रमां बरदारी करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बीवी के हुक़ूक़

अ़ब्दुल माजिद
(दर्जए साबेआ़, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने इमाम अह़मद रज़ा हैदराबाद)

हर शख़्स चाहता है कि मेरा घर अम्न का गेहवारा बना रहे, ज़िन्दगी ख़ुश गवार गुज़रे, लेकिन आ़म तौर पर इस से मेह़रूमी नज़र आती है क्यूंकि इस अहम नेमत के ह़ुसूल के लिए जिन उसूल व अ़वामिल की ह़ाजत है उन से यक्सर बे इल्तेफ़ाती बरती जाती है। इन अ़वामिल में सब से अहम मह़ब्बत व एह़तेराम और एक दूसरे के जज़्बात का पास व लेह़ाज़ के साथ शरीअ़ते मुत़ह्हरा की त़रफ़ से मुक़र्रर कर्दा ह़ुक़ूक़ की बजा आवरी है। ज़ैल में हम आपसी ह़ुक़ूक़ में से बिल ख़ुसूस बीवी के ह़ुक़ूक़ को बयान करेंगे मुलाह़ज़ा फ़रमाएं :

1 **मेहर की अदाएगी** शौहर पर ज़रूरी है कि वोह बीवी का ह़क़्क़े मेहर अदा करे। अल्लाह पाक का इरशाद है : ﴿وَ اٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और औ़रतों को उन के मेहर ख़ुशी से दो।

(پ4،النسآء:4)

2 **नानो नफ़्क़ा** शौहर पर ज़रूरी है कि वोह अल्लाह पाक के इस फ़रमान ﴿لِیُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मक़्दूर वाला अपने मक़्दूर के क़ाबिल नफ़्क़ा दे। (پ28، الطلاق: 7) पर अ़मल करते हुवे बीवी को नानो नफ़्क़ा दे।

अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ عَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ رِزْقُهُنَّ وَ كِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिस का बच्चा है उस पर औ़रतों का खाना पहनना है ह़स्बे दस्तूर। (پ2،البقرۃ:233)

3 **ह़ुस्ने सुलूक** शौहर पर येह भी ज़रूरी है कि वोह अपनी बीवी के साथ नर्मी और ख़ुश अख़्लाक़ी वाला रवय्या रखे। अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَ عَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन (बीवियों) से अच्छा बरताव करो। (پ4، النسآء:19)

4 **तक्लीफ़ देने से गुरेज़** शौहर अपनी अहलिया को ईज़ा देने से परहेज़ करे। मज़्हबे इस्लाम तो किसी भी फ़र्द को बेजा तक्लीफ़ देने को रवा नहीं रखता चेह जाए कि बीवी की ईज़ा रसानी का जवाज़ फ़राहम करे। जिस ने सिर्फ़ शौहर की ख़ात़िर अपने सारे घर वालों और दीगर अइ़ज़्ज़ा को छोड़ा हो अगर शौहर ही इस पर ज़ियादती करे तो कहां जाएगी ! लेहाज़ा शौहर को ह़ुस्ने अख़्लाक़ का पैकर होना चाहिए। नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اَكْمَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ اِيْمَانًا اَحْسَنُهُمْ خُلُقًا، وَخَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِنِسَائِهِمْ

तर्जमा : कामिल मोमिन वोह है जिस के अख़्लाक़ अच्छे हों और तुम में बेहतरीन वोह है जो अपनी बीवियों के साथ अच्छा हो। (ترمذی،2/387،حدیث:1165)

5 **امر بالمعروف ونھی عن المنکر** शौहर पर लाज़िम है कि बीवी को नेकी की तल्क़ीन करे और बुराई से मन्अ़

करें। अल्लाह पाक का इरशाद है :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईन्धन आदमी और पथ्थर हैं। (پ28، التحریم:6)

सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सैयद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर के, इबादतें बजा ला कर, गुनाहों से बाज़ रेह कर और घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमानेअ़त कर के और उन्हें इल्मो अदब सिखा कर (अपनी जानों और अपने घर वालों को जहन्नम की आग से बचाओ)।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 1037)

शौहर को चाहिए कि अल्लाह पाक की एक नेमत समझ कर अपनी बीवी के तमाम तर जाइज़ हुक़ूक़ अदा करे, और बीवी की ग़लतियों को नज़र अन्दाज़ करे ताकि ख़ुश गवार ज़िन्दगी गुज़रे।

तेह़रीरी मुक़ाबले के लिए मौसूल 57 मज़ामीन के मुअल्लिफ़ीन

जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने कन्ज़ुल ईमान, मुम्बई : मुह़म्मद मुज़म्मिल अ़त्तारी, मुह़म्मद रियाज़ुद्दीन, मुह़म्मद शेहबाज़ नूरी, इसराफ़ील रज़ा, मुह़म्मद अरशद अ़त्तारी, अ़याज़ अशरफ़ी, कैफ़ बिन अस्लम, मुनीरुल इस्लाम, मुह़म्मद नासिर नूरी, शाहरुख़ अ़त्तारी, अयाज़, क़ैस अ़त्तारी, मुह़म्मद मक़्सूद आ़लम क़ादरी, अ़ब्दुल करीम बिन शब्बीर ख़ान, अबू शेहमा, नाहिद रज़ा, सादिक़ रज़ा, मुह़म्मद शाबान अ़त्तारी, शेहबाज़ अ़त्तारी, शाहिद अ़त्तारी, मुह़म्मद उ़मर नवाज़। **जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने ह़सन ख़तीब चिश्ती धोलका अह़मदाबाद :** मुह़म्मद रैह़ान अ़त्तारी मदनी, मुग़ल तौक़ीर अ़त्तारी, शाकिर नागोरी, गुलाम मुह़म्मद अ़त्तारी, फ़ैज़ान अ़त्तारी, मुह़म्मद तुफ़ैल अ़त्तारी, मुह़म्मद तौफ़ीक़ अ़त्तारी, मुह़म्मद अमान अ़त्तारी, सैयद सिराजुद्दीन, इरशाद रज़ा अ़त्तारी, कैफ़ अ़त्तारी, मुह़म्मद आ़दिल अ़त्तारी, मुह़म्मद सुफ़्यान अ़त्तारी। **जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने इमाम अह़मद रज़ा ह़ैदराबाद :** समीर अ़त्तारी, अ़ब्दुल माजिद, मुह़म्मद त़ारिक़ रज़ा, तमजीद ह़ुसैन, मुह़म्मद साबिर अ़त्तारी, मुह़म्मद नाज़िम अ़त्तारी, समीउ़ल्लाह। **जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त्तार नागपुर :** मुह़म्मद सरबाज़ चिश्ती, अबुल ह़ामिद इमरान रज़ा बनारसी, नवाज़िश रेह़मानी, साजिद अन्सारी। **जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त़ा ए अ़त्तार जुह़ापुरा अह़मदाबाद :** मुह़म्मद नवाज़ अ़त्तारी, मुह़म्मद त़ल्ह़ा, मुह़म्मद कामरान रज़ा। **जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने औलिया, अह़मदाबाद :** अ़ब्दुल लत़ीफ़, मुह़म्मद अज़हरुद्दीन। **जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म मालेगांव महाराष्ट्र :** साक़िब रज़ा क़ादरी, मुह़म्मद सक़लैन रज़ा अ़त्तारी। **मुतफ़र्रिक़ जामेआ़त :** ज़ैनुल आ़बिदीन नोमानी (जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द शाहजहांपुर), मुह़म्मद इफ़्तेख़ार मदनी (जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने ताजुल औलिया कोराडी), गुलाम मुस्त़फ़ा बरकाती (क़ासिमपुर कड़ा फ़त्ह़पुर, यूपी)।

उ़नवानात बराए मई 2024 ईसवी

1 ह़ज़रते युसअ़ عَلَیْهِ السَّلَام का क़ुरआनी तज़केरा 2 ना शुक्री की मज़म्मत अह़ादीस की रौशनी में 3 रिआ़या के ह़ुक़ूक़

मज़मून जम्अ़ करवाने की आख़री तारीख़ : 20 फ़रवरी 2024 ईसवी

मज़मून लिखने में मदद (Help) के लिए इस नम्बर पर राबेत़ा करें

+91 89782 62692

mazmoonnigarihind@gmail.com

ख़्वाबों की ताबीरें

क़ारेईन की त़रफ़ से मौसूल होने वाले चन्द मुन्तख़ब ख़्वाबों की ताबीरें

ख़्वाब मैं ने ख़्वाब के अन्दर आस्मान में मदीना देखा है।

ताबीर : अच्छा ख़्वाब है, मदीने से मह़ब्बत की अ़लामत है।

ख़्वाब मेरा येह ख़्वाब है कि मैं एक गाड़ी पर जा रहा हूं, गाड़ी जानवर बन जाती है जैसे जादू हो, मैं विर्द करना शुरूअ़ कर देता हूं, तो उस जानवर से बच जाता हूं।

जवाब : ख़्वाब बे रब्त़ सा है, इस की वज्ह से परेशान ना हों। अलबत्ता अपनी रोज़मर्रा ज़िन्दगी में कुछ वज़ाइफ़ को शामिल रखना ज़रूर मुफ़ीद है। अगर किसी जामेअ़ शराइत़ पीर साहिब के मुरीद हैं तो उन के बताए हुवे कुछ ना कुछ औरादो वज़ाइफ़ पढ़ते रहें اِنْ شَآءَ الله इस की बरकतें नसीब होंगी।

ख़्वाब मैं ने ख़्वाब में अपनी सास को सफ़ेद लिबास में मल्बूस देखा और देखा कि उन का इन्तेक़ाल हो चुका है और हम सब रोने लगे उसी वक़्त मेरे शौहर ने उन्हें हिलाया तो देखा कि वोह ज़िन्दा हैं।

और दूसरा **ख़्वाब** मेरी मां ने चन्द रोज़ क़ब्ल देखा कि घर में दो जनाज़े रखे हुवे हैं और दोनों पर काला कपड़ा है और इर्द गिर्द काफ़ी गन्दगी है। बराहे करम मुझे इन दोनों ख़्वाबों की ताबीर बता दें आप की नवाज़िश होगी।

जवाब : इन ख़्वाबों की कोई ताबीर नहीं, परेशान ना हों अगर आप की सास ज़िन्दा हैं तो उन के लिए दराज़ी ए उ़म्र बिल ख़ैर की दुआ़ करें।

ख़्वाब मैं ने ख़्वाब में देखा कि मेरे चेहरे पर काले दाग़ है, बराहे करम इस की ताबीर इरशाद फ़रमा दें। शुक्रिया !

ताबीर : चेहरे पर दाग़ होना माली मुआ़मलात में ख़राबी की अ़लामत है। ख़्वाब देखने वाले को चाहिए कि इस ह़वाले से अपने मुआ़मलात पर ग़ौर करे, अगर कहीं पर कोताही पाए तो उसे दूर करे। और अगर कोई गुनाह का काम मालूम हो तो अल्लाह की बारगाह में तौबा भी करे।

ख़्वाब मेरे वालिद को कई मरतबा येही ख़्वाब आता है कि उन के जूते गुम हो जाते हैं या उन को रास्ता नहीं मिलता और रास्ता मिलता है तो क़ब्रस्तान से। और उन्हें अक्सर जिस रास्ते से गुज़रना होता है वोह क़ब्रस्तान होता है। उन का केहना है कि इस त़रह़ का ख़्वाब मुझे कई मरतबा आ चुका है। बराहे करम ख़्वाब की ताबीर इरशाद फ़रमाएं।

जवाब : ख़यालात मुन्तशिर होने की वज्ह से ऐसे ख़्वाब नज़र आते रेहते हैं, परेशान ना हों ! अल्लाह की बारगाह में आ़फ़िय्यत की दुआ़ करें।

क्या आप अपने ख़्वाब की ताबीर जानना चाहते हैं ?

ख़्वाब की तफ़्सीलात बज़रीए़ डाक माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के पेहले सफ़्हे पर दिए गए एड्रेस पर भेजिए या इस नम्बर पर वोट्सएप कीजिए। +918978262692

फ़रिश्तों की ईद

आओ बच्चो ! हदीसे रसूल सुनते हैं

अल्लाह पाक के प्यारे और आख़री नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शबे बराअत के बारे में इरशाद फ़रमाया : يُفتحُ فِيهَا اَبْوَابُ السَّماءِ وَاَبْوَابُ الرَّحمةِ ثلاثُ مِائةٍ यानी इस रात में आस्मानों और रेहमत के 300 दरवाज़े खोल दिए जाते हैं। (تاریخ ابن عساکر، 72/51)

प्यारे बच्चो ! "शब" का माना है रात और "बराअत" का मत़लब है छुटकारा और आज़ादी, तो शबे बराअत का माना हुवा (जहन्नम से) छुटकारा पाने की रात। इस्लामी महीने शाबान शरीफ़ की पन्दरहवीं रात को "शबे बराअत" कहा जाता है।

फ़रिश्तों की ईद : मन्क़ूल है कि जैसे दुन्या में मुसलमानों के लिए ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा दो ईद के दिन हैं, इसी त़रह़ आस्मान के फ़रिश्तों के लिए दो रातें ईद की हैं। फ़रिश्तों की ईदैन की रातें येह हैं : पन्दरह शाबान की रात और लैलतुल क़द्र।

(मुकाशफ़तुल क़ुलूब, स. 303 मुलख़्ख़सन)

शबे बराअत के कई नाम हैं, उन में से 10 नाम और उन के मआ़नी हो सके तो आप भी याद कर लीजिए, फ़ाइदा होगा اِنْ شَآءَ الله

1 लैलतुल मुबारकह (बरकत वाली रात) 2 लैलतुल बराअह (नजात की रात) 3 लैलतुस्सक (दस्तावेज़ की रात) 4 लैलतुर्रह़मह (रेह़मत की रात) 5 लैलतुत्तक्फ़ीर (गुनाह मिटाए जाने की रात) 6 लैलतुल इजाबह (दुआ़ओं की क़बूलिय्यत की रात) 7 लैलतुश्शफ़ाअ़ह (शफ़ाअ़त की रात) 8 लैलतुत्ताज़ीम (इ़ज़्ज़तो अज़्मत की रात) 9 लैलतुल ग़ुफ़रान (मग़्फ़ेरत की रात) 10 लैलतु ईदिल मलाइकह (फ़रिश्तों की ईद की रात)।

(مجموع رسائل الملا علی القاری، 41/3 - ماذا فی شعبان، ص73تا75 ملتقطاً)

अल्लाह पाक शबे बराअत के इन नामों के सदक़े हमारी बे हिसाब बख़्शिश फ़रमाए और हमें इस रात की ख़ूब बरकतें अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ق	ز	ہ	ہ	ن	ی	ز	و	ر
ع	ف	ز	ق	س	د	ا	م	ل
ث	ز	ت	ی	ف	ا	ع	ب	ع
ز	ف	س	و	ی	ت	ک	ر	ب
ف	چ	ح	ل	س	ل	م	ق	خ
ر	ل	س	ت	ر	ف	غ	م	ش
ح	د	ی	ز	ن	د	ل	ح	ش
م	ا	ہ	ف	م	ا	ع	ق	ب
ت	م	ح	م	ا	م	ث	ع	ء

हुरूफ़ मिलाइए !

इस्लामी साल का आठवां महीना "शाबानुल मुअ़ज़्ज़म" है, इस महीने की पन्दरहवीं रात को शबे बराअत कहा जाता है। इस रात अल्लाह पाक अपनी ख़ास रेह़मतें और बरकतें नाज़िल फ़रमाता है, भलाइयों के दरवाज़े खोल देता है। ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ इस रात अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है कि है कोई बख़्शिश मांगने वाला कि मैं उसे बख़्श दूं, है कोई रोज़ी मांगने वाला कि मैं उसे रोज़ी दूं, है कोई मुसीबत में मुब्तला कि मैं उसे आ़फ़िय्यत दूं, है कोई ऐसा ! है कोई ऐसा ! यहां तक कि फ़ज्र का वक़्त शुरूअ़ हो जाता है।

(ابن ماجہ، 160/2، حدیث:1388)

प्यारे बच्चो ! आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "आ़फ़िय्यत" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किए जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं। 1 रहमत 2 बरकत 3 मग़फ़रत 4 बख़्शिश 5 रोज़ी-

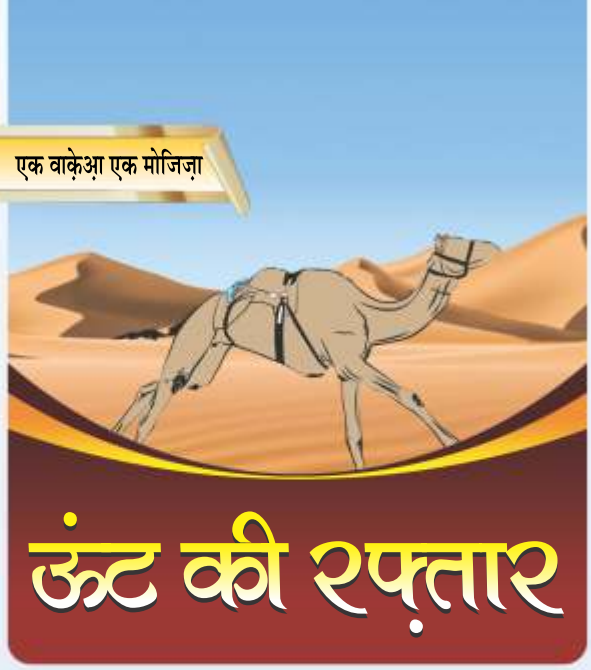

ऊंट की रफ़्तार

दादाजान ! ऊंट की सवारी करने का बहुत दिल चाह रहा है, कल इतवार भी है, क्या आप हमें ले चलेंगे ?

दर अस्ल कुछ दिनों से अ़लाक़े के क़रीबी ग्राउन्ड में बच्चों के लिए मेला लगा हुवा था, मेले में त़रह़ त़रह़ के झूलों के इ़लावा घोड़े और ऊंट भी थे, आज मग़रिब से पेहले तीनों बहेन भाई दादाजान के साथ लॉन (घास के मैदान) में बैठे बातें कर रहे थे, उसी दौरान दादाजान की लाडली उम्मे ह़बीबा ने अचानक फ़रमाइश की तो सुहैब और ख़ुबैब ने भी अपनी चाहत ज़ाहिर की।

दादाजान : ठीक है बेटा ! कल ले चलूंगा आप लोगों को, अच्छा अब जल्दी से मग़रिब की नमाज़ की तैयारी करें।

✱✱✱✱

आज इतवार के दिन सुब्ह़ नाश्ते के बाद से बच्चे ऊंट की सवारी के लिए पुरजोश नज़र आ रहे थे, आख़िरे कार 10 बजे दादाजान उन्हें अपने साथ ले गए।

सुहैब : (मेले से घर वापस आने के बाद) वाह दादाजान ! बहुत मज़ा आया मगर क्या ऊंट इस से ज़ियादा तेज़ नहीं चलता ?

दादाजान : बेटा ! अस्ल में ऊंट सेह़राई जानवर है, सेह़राओं में इस की रफ़्तार इस क़दर तेज़ होती है कि इसे सेह़रा का जहाज़ कहा जाता है। मैं ने ख़ास त़ौर पर आप लोगों को ऊंट की सवारी इस लिए कराई है कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने भी ऊंट को सवारी में इस्तेमाल किया है।

आख़री बात सुन कर ख़ुबैब से रहा नहीं गया, फ़ौरन ही चहेक कर बोला : दादाजान ! फिर तो हमें ऊंट के बारे में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कोई मोजिज़ा भी सुनाइए ना !

दादाजान : चलो ऊंट की रफ़्तार की बात चली है तो मैं इसी बारे में एक मोजिज़ा सुनाता हूं, येह मोजिज़ा ह़ज़रते ख़ल्लाद बिन राफ़ेअ़ और उन के भाई ह़ज़रते रफ़ाआ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के एक सफ़र में ज़ाहिर हुवा, वाक़ेआ़ कुछ यूं है कि ह़ज़रते रफ़ाआ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं और मेरा भाई अपने कमज़ोर ऊंट पर रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ बद्र की त़रफ़ निकले, रौह़ा से पीछे बुरैद नामी जगह पर वोह ऊंट कमज़ोरी की वज्ह से ऐसा बैठा कि उठता नहीं था, हम ने कहा कि ऐ अल्लाह ! अगर हम मदीने तक पहुंच जाएं तो हम इसे (सदक़े के त़ौर पर) क़ुरबान कर देंगे। अचानक नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और देख कर फ़रमाया : तुम्हें क्या परेशानी है ? हम ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सारी बात बता दी, नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सवारी से उतरे, वुज़ू फ़रमाया फिर वुज़ू के बचे हुवे पानी में कुल्ली फ़रमाई और हमें हुक्म दिया तो हम ने ऊंट का मुंह खोला, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह पानी उस के मुंह में डाला, फिर उस के सर, गर्दन, कन्धे, कोहान, जिस्म के पिछले ह़िस्से और दुम पर डाला और उन दोनों भाइयों के लिए दुआ़ फ़रमाई। फिर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए। ह़ज़रते रफ़ाआ़ फ़रमाते हैं कि इस के बाद हम उस ऊंट पर सवार हो कर रवाना हुवे और हम (उसी ऊंट के ज़रीए) क़ाफ़िले के सब से अगले ह़िस्से से जा मिले। जब हम बद्र के क़रीब पहुंचे तो वोह ऊंट फिर बैठ गया, हम ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा और (अपनी बात के मुत़ाबिक़) उसे क़ुरबान कर के उस का गोश्त सदक़ा कर दिया। (دیکھئے: مسند بزار، 9/181، حدیث: 3728)

سُبْحٰنَ اللّٰه ! तीनों बच्चे एक ज़बान हो कर बोले।

बच्चों की हिफ़ाज़त के इक़्दामात कीजिए

मोहतरम वालिदैन बच्चों के इग़वा बराए तावान और -Short term kidnapping ! की वारदातों में बहुत इज़ाफ़ा देखने में आ रहा है । एक रीपोर्ट के मुताबिक़ पिछले सात सालों के दौरान 10 हज़ार से ज़ाइद बच्चे इग़वा हो चुके हैं । अगर इस चीज़ को सामने रखते हुवे हम ने अपने बच्चों को तरबियत ना दी तो येह फूल जैसे बच्चे इसी त़रह़ ज़ुल्मो ज़ियादती का शिकार बनते रहेंगे ।

छोटे बच्चों को येह चीज़ें सिखाएं

आप को चाहिए कि अपने बच्चों को कुछ ऐसी तरबियत दें जिस से उन की हिफ़ाज़त हो सके, मसलन अपने बच्चों को अच्छी त़रह़ समझा दें कि

1 "जिस को आप जानते नहीं हैं उस की गाड़ी में कभी मत बैठना, क्यूंकि हम आप को स्कूल से लेने के लिए किसी अन्जान आदमी को नहीं भेजेंगे ।"

2 "अगर कोई आप को पकड़ने की कोशिश करे या गाड़ी में बिठाने के लिए ज़बरदस्ती करे तो हाथ पैर मार कर चीख़ें मारें और शोर मचाएं ।" इस त़रह़ लोग मुतवज्जेह हो जाएंगे और अगर वोह इग़वा करने वाला होगा तो शोर की वज्ह से घबरा कर छोड़ देगा और भाग जाएगा ।

3 "रास्ते में चलते हुवे अगर कोई अन्जान शख़्स आप से कोई सवाल करे या बात चीत करे तो फ़ौरन दूर चले जाएं या वहां से भाग जाएं ।"

4 यूंही बच्चे को येह भी समझाएं कि "अन्जान आदमी चाहे दाढ़ी और इमामे वाला ही क्यूं ना हो, या अन्जान औरत कैसे ही अच्छे हुल्ये वाली क्यूं ना हो, आप के साथ चलने की कोशिश करे, या टोफ़ी या कोई खिलौना वग़ैरा दे तो ना लें और ना ही उस के साथ कहीं जाएं ।" अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं : मेरे बचपन के दिनों में भी इस क़िस्म के वाक़ेआत होते थे तो मेरी वालिदा मुझे समझाती थीं कि "कोई सोने का ढेर दिखाए तब भी उस के पास नहीं जाना ।"

मां-बाप ग़ौर करें कि

5 अपने बच्चे को अकेले पढ़ने के लिए ना जाने दें । येह Risky (यानी ख़त़रे वाली बात) है, इस लिए बच्चे को लाने और ले जाने के लिए कोई ना कोई तरकीब रखें । या अगर घर में कोई नहीं है और बच्चा ताला खोल कर घर में जाएगा तो ऐसी सूरत में बच्चे को समझा दें कि "घर की चाबी ना किसी को दे और ना किसी को दिखाए ।" क्यूंकि चाबी देख कर इग़वा करने वाला समझ जाएगा कि "येह बच्चा अकेला है और ख़ुद ही चाबी से दरवाज़ा खोल कर अन्दर जाएगा ।" इस त़रह़ ख़त़रा बढ़ सकता है ।

6 "बच्चों के साथ पैदल चलते वक़्त हमेशा इर्द गिर्द नज़र रखें और बिला वज्ह फ़ोन का इस्तेमाल ना करें" क्यूंकि इस से तवज्जोह बट सकती है और दूसरा इस का नाजाइज़ फ़ाइदा उठा सकता है ।

7 "बच्चा अकेला घर से बाहर ना जाए, ना खेलने और ना ही किसी और काम से।" अगर किसी मजबूरी की वज्ह से भेज दें और ज़ियादा देर हो जाए तो जहां भेजा था फ़ौरन उस जगह मालूमात करें कि "बच्चा अभी तक आया क्यूं नहीं ?"

चन्द अहम हिदायात

1 बाज़ औक़ात इग़वा करने वाले प्लानिंग के साथ काम करते हैं और बच्चों का आना जाना सब नोट करते हैं, इस लिए मेरी तालीमी इदारों से दरख़्वास्त है कि बच्चे को किसी भी नए शख़्स के हवाले ना करें, आप को Regular (यानी मुस्तक़िल आने वाली) Vans की पहेचान होनी चाहिए। बाज़ औक़ात घर के मुलाज़िमीन वग़ैरा भी इस तरह़ की चीज़ों में मुलव्विस पाए जाते हैं जो इत्तेलाअ़ दे रहे होते हैं कि "बच्चा यूं आता है और यूं जाता है" वग़ैरा।

2 वालिदैन से येह दरख़्वास्त करूंगा कि आप के मुलाज़िमीन, चाहे ड्राइवर हों, माली हों, चौकीदार हों या मासी वग़ैरा हों इन सब के शनाख़्ती कार्ड की कोपी और इन के नम्बर्ज़ आप के पास मेह़फ़ूज़ होने चाहिएं, क्यूंकि बाज़ औक़ात जब मसाइल होते हैं तो इन का कोई अता पता हमारे पास नहीं होता। इसी तरह़ Van वाले की भी पूरी मालूमात होनी चाहिए और उन की गाड़ी का नम्बर भी पता होना चाहिए, क्यूंकि हर तालीमी इदारा ट्रान्सपोर्ट की सहूलत नहीं देता, प्राईवेट स्कूल वाले केह देते हैं कि "आप इन से बात कर लें, येह इस स्कूल के बच्चों को लाते ले जाते हैं।" इस लिए मालूमात होना ज़रूरी है।

3 अपने क़रीबी थाने का नम्बर लाज़मी किसी नुमायां मक़ाम पर लिखिए कि "मुझे इमरजन्सी में इस नम्बर पर फ़ोन करना है।"

4 यूंही एडवान्स में 2 या 3 बेलेन्स कार्डज़ अपने पास रखें, क्यूंकि बाज़ औक़ात जब इमरजन्सी होती है और बेलेन्स नहीं होता तो इन्सान को पछतावा होता है।

बच्चों को येह दुआएं याद करवाएं

1 सुब्ह़ो शाम अव्वलो आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर तीन तीन बार येह कलेमात पढ़िए : بِسْمِ اللّٰہِ عَلٰی دِیْنِیْ بِسْمِ اللّٰہِ عَلٰی نَفْسِیْ وَوُلْدِیْ وَاَھْلِیْ وَ مَالِیْ " यानी अल्लाह पाक के नाम की बरकत से मेरे दीन, जान, औलाद और अह्ल व माल की हिफ़ाज़त हो।" (शजरए क़ादरिय्या रज़विय्या ज़ियाइय्या अत्तारिय्या, स. 15) सिर्फ़ अ़रबी दुआ पढ़नी है, तर्जमा पढ़ने की ज़रूरत नहीं।

2 वुज़ू के दौरान हर उ़ज़्व को धोते वक़्त "या क़ादिरु" पढ़ने का मामूल बना लें, اِنْ شَآءَ اللّٰہ इन्सान या जिन्न कोई भी इग़वा नहीं कर सकेगा।

(40 रूह़ानी इ़लाज, स. 9)

3 घर, मदर्से से या जहां भी कुछ देर ठेहरें जब वहां से निकलें तो येह दुआ पढ़ लें : بِسْمِ اللّٰہِ تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ۔ ह़ज़रते सैयदना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबी ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब आदमी अपने घर के दरवाज़े से निकलता है तो उस के साथ दो फ़रिश्ते मुक़र्रर होते हैं, फिर जब आदमी केहता है कि "बिस्मिल्लाह" तो फ़रिश्ते केहते हैं : तुझे हिदायत दी गई। और जब आदमी केहता है : لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ तो फ़रिश्ते केहते हैं कि तुझे बचा लिया गया। और जब आदमी केहता है : تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰہ तो फ़रिश्ते केहते हैं : तेरी किफ़ायत की गई। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : फिर उसे दो शैत़ान आते हुवे मिलते हैं तो फ़रिश्ते उन से केहते हैं कि तुम ऐसे शख़्स से क्या चाहते हो कि जिसे हिदायत दी गई, जिस की किफ़ायत की गई और जिसे बचा लिया गया ? (ابن ماجہ، 4/292، حدیث:3886) बड़े भी येह दुआ याद कर लें कि जब भी ओफ़िस या दुकान से निकलें तो येह दुआ पढ़ लें। इस्लामी बहेनों को भी चाहिए कि येह दुआ याद करें, अल्लाह पाक ने चाहा तो ह़ादिसों, आफ़तों, डाकूओं, इग़वा करने वाले बद मुआ़शों और दरिन्दा सिफ़त लोगों से हिफ़ाज़त होगी और اِنْ شَآءَ اللّٰہ ख़ैरो आ़फ़िय्यत के साथ घर पलटेंगी।

भाइयों की ज़िन्दगी में बहेनों का किरदार

अल्लाह पाक की अ़ता कर्दा बेश बहा नेमतों में से एक नेमत ख़ूनी रिश्ते भी हैं। ख़ूनी रिश्तों का लेहाज़ निहायत अहम है, अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम में भी जगह ब जगह इस का तज़केरा फ़रमाया और ख़ूनी रिश्तों का एह़तेराम करने का हुक्म दिया और सिलए रेह़मी करने वालों की तेह़सीन की गई है जैसा कि इरशादे रब्बे करीम है। ﴿وَالَّذِیْنَ یَصِلُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ وَ یَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَ یَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ(۲۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो उसे जोड़ते हैं जिस के जोड़ने का अल्लाह ने हुक्म दिया और अपने रब से डरते हैं और बुरे ह़िसाब से ख़ौफ़ज़दा हैं।[1]

इस्लाम ने ख़ूनी रिश्तों को मज़बूत़ रखने के ऐसे अह़काम बयान फ़रमाए हैं कि जिन पर अ़मल करने से ना सिर्फ़ ख़ानदान मज़बूत़ रेहता है बल्कि मुआ़शरा भी मज़बूत़ हो जाता है क्यूंकि ख़ानदान ही मुआ़शरे का बुन्यादी जुज़ है, जिस की मज़बूत़ी मुआ़शरे की मज़बूत़ी है, इन ख़ूनी रिश्तों में मां-बाप के बाद मज़बूत़, ताक़तवर और त़वील रिश्ता "भाई-बहेन" का है।

भाई-बहेन साथ उठते बैठते, खाते पीते, और हंसते बोलते हैं उन की आपस की येह महब्बत एक दूसरे को त़ाक़त फ़राहम करती है। इस्लाम चूंकि ना सिर्फ़ अक्मल मज़हब बल्कि दीने फ़ित़रत भी है लेहाज़ा येह प्यारा मज़हब इन तअ़ल्लुक़ात को अच्छे त़रीक़े से निभाने और इन की पासदारी की रेहनुमाई भी फ़राहम करता है। चुनान्चे ह़दीसे मुबारका में है : जिस की तीन बेटियां या तीन बहेनें हों या दो बेटियां या दो बहेनें हों और उस ने उन के साथ अच्छा बरताव किया और उन के बारे में अल्लाह पाक से डरता रहा तो उस के लिए जन्नत है।[2]

जहां भाइयों को बहेनों के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म है वहीं बहेनों की भी ज़िम्मेदारी है कि भाइयों के साथ अच्छा सुलूक करें। भाई बहेनें एक दूसरे के दुख दर्द का मुदावा होते हैं, मुश्किलात में एक दूसरे का सहारा बनते हैं, लेकिन बसा औक़ात कुछ वुजूहात की बिना पर बहेन भाई एक दूसरे के ख़िलाफ़ हो जाते हैं और इस त़रह़ एक दूसरे की दिल आज़ारी का सबब बनते हैं।

बाज़ बहेनों की येह सोच होती है कि भाभियां उन की ख़िदमत करें, उन के ह़िस्से के भी काम करें। भाभियां घर आ जाएं तो हर त़रह़ के काम उन्ही के सिपुर्द हों, जबकि शरई त़ौर पर ऐसा नहीं कि भाभी नन्द की ख़िदमत करे। भाभी ख़ानदान का ह़िस्सा होती है और ना सिर्फ़ भाई की शरीके ह़यात होने की ह़ैसिय्यत से बल्कि एक मुसलमान और अल्लाह की बन्दी होने की ह़ैसिय्यत से भी नन्दों के लिए क़ाबिले एह़तेराम है।

शादीशुदा बहेन अगर मैके जाए तो हरगिज़ येह ज़ेहन ना बनाए कि भाभी उस की ख़िदमत करे, उस के बच्चों को संभाले, उस के फ़रमाइशी खाने बना कर दे, यक़ीनन येह बिल्कुल ना मुनासिब अन्दाज़ है। बल्कि बहेन को चाहिए कि जब वोह मैके जाए तो मौक़ेअ़ की मुनासेबत से कम वक़्त गुज़ारे और मैके में भी अपने काम ख़ुद करे बल्कि भाभी का भी साथ दे।

बाज़ बहेनें भाई से उस की शरीके ह़यात के बारे में मन्फ़ी (Negative) बातें करती हैं जैसा कि तुम्हारी बीवी घर साफ़ नहीं करती, मैं आती हूं तो लिफ़्ट नहीं करवाती, अम्मी का ख़याल नहीं करती। इस त़रह़ भाई के दिल में अपनी ज़ौजा के ख़िलाफ़ बातें आ जाती हैं जिस से उस का अन्दाज़ अपनी बीवी से बदल जाता है और घर के माह़ौल में ख़राबियां पैदा हो जाती हैं।

इसी त़रह़ बाज़ बहेनें अपनी बहेनों को उन के शौहरों और सुसराल के ख़िलाफ़ भी भड़काती हैं। येह इन्तेहाई बुरा अ़मल है, नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जो किसी शख़्स की बीवी को उस के ख़िलाफ़ भड़काए वोह हम में से नहीं।"(3)

अगर येह बातें बे बुन्याद हों तो ऐसी बहेनों को तोहमत के गुनाह के अ़ज़ाब में मुब्तला कर सकती हैं। फ़रमाने आख़री नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो किसी मुसलमान को ज़लील करने की ग़रज़ से उस पर इल्ज़ाम आ़इद करे तो अल्लाह पाक उसे जहन्नम के पुल पर उस वक़्त तक रोकेगा जब तक वोह अपनी कही बात (के गुनाह) से उस शख़्स को राज़ी कर के या अपने गुनाह की मिक़्दार अ़ज़ाब पा कर ना निकल जाए।(4)

इस्लामी अह़कामात के लेह़ाज़ से बहेनों का येह दुरुस्त अन्दाज़ नहीं है, उन्हें इस से बचना चाहिए।

बाज़ जगह बहेनों का येह ज़ेहन भी बनता जा रहा है कि भाइयों से कुछ ना कुछ मिलता ही रहेगा, कभी ख़ुशी के मौक़ेअ़ पर रस्म के नाम पर तो कभी तेहवार पर रवाज की सूरत में, कभी येह डीमान्ड होती है कि जब भाई के घर बच्चा पैदा हो तो बहेन को कोई भारी गिफ़्ट, रक़म या सोना वग़ैरा दिया जाए, इस त़रह़ के कई मुआ़मलात इस त़रह़ की बहेनें करती नज़र आती हैं ह़ालांकि सवाल करने से बचना चाहिए। आज कल के मेहंगाई के दौर में ख़्वाही नख़्वाही भाई की जेब पर इस त़रह़ का बोझ डालना हरगिज़ मुनासिब नहीं, अपने भाइयों की ख़ुशियां देख कर उन की नेमतों में इज़ाफ़े के लिए अल्लाह पाक से दुआ़ करनी चाहिए।

हां, अगर भाई साह़िबे ह़ैसिय्यत है, ख़ुद अपनी ख़ुशी से देता है जैसा कि उ़मूमन घरों में मामूली तोह़फ़े तह़ाइफ़ देने का तो रुजह़ान होता ही है तो इस में शरई लेह़ाज़ से कुछ ह़रज नहीं है।

एक मुआ़मला जाइदाद की तक़्सीम के मुआ़मले में देखने में आता है कि वोह बहेन भाई जो एक छत के नीचे एक ही मां-बाप के ज़ेरे साया पले बढ़े होते हैं और दुन्या की ज़लील दौलत के पीछे एक दूसरे के सख़्त मुख़ालिफ़ हो जाते हैं। विरासत में अगर्चे बहेनों का ह़िस्सा शरअ़न मुक़र्रर है लेकिन बाज़ बहेनें शरई तक़्सीम के बजाए भाइयों के बराबर बराबर ह़िस्सों का मुत़ालबा करती हैं जो फिर बहेन भाइयों में त़वील निज़ाअ़, ख़ूनी रिश्तों के टूटने और कई त़रह़ के इख़्तेलाफ़ात का बाइ़स बनता है। कहीं कहीं इस बात पर ख़ानदान की इ़ज़्ज़त कोर्ट की नज़्र हो जाती है।

इस्लाम में विरासत के वाज़ेह़ और मुकम्मल अह़काम मौजूद हैं। शरीअ़त की रू से जिस का जो जाइज़ ह़िस्सा बनता है अह़सन अन्दाज़ में उसे क़बूल कर लिया जाए इस सिलसिले में शरीअ़त की तालीमात पर अ़मल करने से कई मसाइल से बचा जा सकता है।

बहरह़ाल एक ख़ानदान की ख़ुशह़ाली में एक बहेन कई लेह़ाज़ से अपना किरदार अदा कर सकती है लेहाज़ा कोशिश करनी चाहिए कि ख़ुश गवार और अच्छा माह़ौल बना कर रखे।

---

(1) پ13، الرعد: 21 (2) ترمذی، 3/367، حدیث: 1923 (3) مسند احمد، 9/16، حدیث: 23041 (4) ابوداؤد، 4/354، حدیث: 4883۔

इस्लामी बहेनों के शरई मसाइल

1 नापाक ज़मीन पंखे की हवा से ख़ुश्क हो जाए तो पाक हो जाएगी ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस बारे में कि छोटा बच्चा कमरे में पेशाब कर दे तो कमरे में धूप तो नहीं आती कि पेशाब उस से ख़ुश्क हो, अलबत्ता पंखे की हवा से ख़ुश्क हो जाएगा तो क्या इस से भी ज़मीन पाक हो जाएगी ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

नापाक ज़मीन अगर ख़ुश्क हो जाए और उस से नजासत का असर यानी रंग व बू जाता रहे, तो वोह पाक हो जाती है और इस का धूप ही से ख़ुश्क होना ज़रूरी नहीं, बल्कि धूप के इ़लावा आग या हवा वग़ैरा से ख़ुश्क हो जाए तब भी पाक हो जाएगी, लेहाज़ा पूछी गई सूरत में अगर पेशाब की जगह पंखे वग़ैरा की हवा से ख़ुश्क हो गई और उस से नजासत का असर भी जाता रहा, तो वोह पाक हो गई। ख़याल रहे ज़मीन की पाकी का येह हुक्म तयम्मुम के इ़लावा नमाज़ वग़ैरा दीगर मसाइल में है, तयम्मुम के ह़क़ में नहीं है यानी उस मिट्टी से तयम्मुम नहीं हो सकता।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 मियां बीवी में अलाह़दगी के बाद जहेज़ किस का होगा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस बारे में कि मियां बीवी में अलाह़दगी हो जाए तो जहेज़ के मुतअ़ल्लिक़ हुक्मे शरई क्या है ? यानी औ़रत जो सामान अपने घर से लाई और जो इसे लड़के वालों ने दिया मसलन ज़ेवर, सामान वग़ैरा, वोह किस का होगा ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जहेज़ औ़रत की मिल्कियत है, वोह ही लेगी क्यूंकि वालिदैन जहेज़ अपनी बेटी ही को मालिका बनाते हुवे देते हैं।

शौहर या उस के घर वालों की त़रफ़ से मिलने वाले सामान और ज़ेवरात वग़ैरा में तीन सूरतें होती हैं :

1 शौहर या उस के घर वालों ने सराह़तन (वाज़ेह़ तौ़र पर) औ़रत को सामान और ज़ेवरात देते वक़्त मालिक बनाते हुवे क़ब्ज़ा दिया था।

2 शौहर या उस के घर वालों ने सराह़तन औ़रत को सामान और ज़ेवरात आ़रियतन (यानी आ़रज़ी इस्तेमाल के लिए) दिए थे।

3 शौहर या उस के घर वालों ने देते वक़्त कुछ भी नहीं कहा था।

पेहली सूरत में औ़रत सामान और ज़ेवरात के हिबा यानी गिफ़्ट किए जाने की वज्ह से मालिका है, उसी को येह सब दिया जाएगा। दूसरी सूरत में जिस ने दिया वोही मालिक है, वोह वापस ले सकता है। और तीसरी सूरत में शौहर के ख़ानदान का रवाज देखा जाएगा, अगर वोह औ़रत को उन अश्या का मालिक बनाते हैं तो औ़रत को दिया जाएगा वरना वोह ह़क़दार नहीं, उस से वापस लिया जा सकता है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शाबानुल मुअ़ज़्ज़म के चन्द अहम वाक़ेआ़त

तारीख़ / माह / सिन	नाम / वाक़ेआ़	मज़ीद मालूमात के लिए पढ़िए
1 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1382 हिजरी	यौमे विसाल मुह़द्दिसे आज़म ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद सरदार अह़मद चिश्ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 हिजरी और "फ़ैज़ाने मुह़द्दिसे आज़म"
2 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 150 हिजरी	यौमे विसाल करोड़ों ह़नफ़ियों के अ़ज़ीम पेश्वा, ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा नोमान बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 ता 1442 हिजरी और "अश्कों की बरसात"
5 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 4 हिजरी	यौमे विलादत नवासए रसूल ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना मुह़र्रमुल ह़राम 1439 ता 1443 हिजरी और "इमामे ह़ुसैन की करामात"
15 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 261 हिजरी	यौमे विसाल सुल्तानुल आ़रेफ़ीन ह़ज़रते बायज़ीद बुस्तामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 हिजरी
21 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 673 हिजरी	यौमे विसाल लाल शेहबाज़ क़लन्दर ह़ज़रते मुह़म्मद उ़स्मान मरवन्दी क़ादरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 हिजरी और "फ़ैज़ाने उ़स्मान मरवन्दी"
शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 9 हिजरी	विसाले मुबारका शेहज़ादी ए रसूल, ज़ौजए उ़स्माने ग़नी, ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 हिजरी और रबीउ़ल अव्वल 1439 हिजरी
शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 45 हिजरी	विसाले मुबारका उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 हिजरी और "फ़ैज़ाने उम्महातुल मोमिनीन"

अल्लाह पाक की उन पर रेह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

"**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" के शुमारे दावते इस्लामी हिन्द की वेब साइट से डाउन लोड कर के पढ़िए ।

शाबानुल मुअ़ज़्ज़म की मुनासेबत से क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुबो रसाइल

तअ़ल्लुक़ात ख़राब होने के डर से इस्लाह़ ना करना कैसा ?

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द, शेहज़ादए आला ह़ज़रत, मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه एक जगह मदऊ़ (यानी दावत पर बुलाए गए) थे, वहां घर में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के क़रीब ही एक टूंटी लगी हुई थी जिस से पानी टपक रहा था, आप ने मेज़बान को बुलाया और उस को इसराफ़ के नुक़्सानात समझाते हुवे फ़रमाया कि इस टूंटी को फ़ौरन दुरुस्त कराओ क्यूंकि जब तक येह बेहती रहेगी तुम को गुनाह होता रहेगा, उस ने अ़र्ज़ किया हुज़ूर ! अभी दुरुस्त कर लेते हैं। मगर काफ़ी देर तक उस ने दुरुस्त ना किया, इस पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस को बुला कर फ़रमाया : "हम जाते हैं क्यूंकि आप येह टूंटी दुरुस्त नहीं करवाते, और हमें अपनी आंखों के सामने अल्लाह पाक की येह नेमत ज़ाएअ़ होते हुवे देखना गवारा नहीं।" मेज़बान बेह़द नादिम हुवा और बड़ी मिन्नतें कर के आप को राज़ी किया, और टूंटी भी फ़ौरन दुरुस्त करा ली। (जहाने मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द, स. 256) वाह क्या बात है हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के जज़्बए इस्लाह़ की ! ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! नेकी का हुक्म देने की कई सूरतें हैं, बहारे शरीअ़त में लिखा है : (1) अगर ग़ालिब गुमान येह है कि येह उन से कहेगा तो वोह उस की बात मान लेंगे और बुरी बात से बाज़ आ जाएंगे, तो اَمْر بِالْمَعْرُوف (यानी नेकी का हुक्म देना) वाजिब है इस को (यानी नेकी का हुक्म देने वाले को इस सूरत में) बाज़ रेहना (यानी समझाने से रुकना) जाइज़ नहीं और (2) अगर गुमाने ग़ालिब येह है कि वोह त़रह़ त़रह़ की तोहमत बान्धेंगे और गालियां देंगे तो तर्क करना (यानी नेकी का हुक्म ना देना) अफ़्ज़ल है और (3) अगर येह मालूम है कि वोह इसे मारेंगे और येह सब्र ना कर सकेगा या इस की वज्ह से फ़ितना व फ़साद पैदा होगा आपस में लड़ाई ठन जाएगी जब भी छोड़ना अफ़्ज़ल है और (4) अगर मालूम हो कि वोह अगर इसे मारेंगे तो सब्र कर लेगा तो उन लोगों को बुरे काम से मन्अ़ करे और येह शख़्स मुजाहिद है और (5) अगर मालूम है कि वोह मानेंगे नहीं मगर ना मारेंगे और ना गालियां देंगे तो इसे इख़्तियार है और अफ़्ज़ल येह है कि अम्र करे (यानी नेकी का हुक्म दे)। (बहारे शरीअ़त, 3/ 615) बहर ह़ाल हर सूरत में ज़बरदस्ती किसी की इस्लाह़ करना फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है, हां ! दुआ़ कर सकते हैं कि अल्लाह पाक बुराई करने वाले को हिदायत नसीब करे। याद रखिए ! इस्लाह़ करने वाले के लिए येह बात ज़रूरी है कि उसे सामने वाले की नफ़्सिय्यात को परखने की सलाहि़य्यत हो कि किस से किस त़रह़ बात की जाए ? अल्लाह पाक हमें अपनी और दूसरों की इस्लाह़ का जज़्बा नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मक्तबतुल मदीना की किताबें घर बैठे ह़ासिल करने के लिए इस नम्बर 9978626025 पर Call SMS WhatsApp करें

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिए और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए़ माली तआ़वुन कीजिए !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही़ (Reformatory), फ़लाही़ (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI - BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD - 380028. (GUJARAT)
PLACE OF PRINTING : MODERN ART PRINTERS - OPP : PATEL TEA STALL, DABGARWAD NAKA, DARIYAPUR, AHMEDABAD - 380001.
PLACE OF PUBLICATION : BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD-380028. (GUJARAT) INDIA.